दुर्लभ गोपनीय एवं रहस्यमय साधनाओं से प्रत्यक्ष प्रयोग एक सिद्ध चैतन्य पर्व

६.१०.९४ से १२.१०.९४ तक

लखनऊ (उ. प्र.) में

जिसे एक शहर नहीं एक सलीका कहा गया है और ऐसी भूमि के रंगों से एकरस होंगे हम - आप, समस्त भारत से आए विविध संस्कृतियों के, विविध रंगों में रंगे साधक।

साधना, पर्व, उत्सव, दीक्षाओं का सतत क्रम, मां भगवती जगदम्बा की स्निग्धता एवं पूज्यपाद गुरुदेव की तपः ऊर्जा से आलोकित एक विलक्षण अनुभव।

क्योंकि यह एक साधना शिविर नहीं आपके जीवन में आने वाला एक मोड़ जो होगा। इसके लिए आवश्यक है आप समय से बहुत पहले अपना रिजर्वेशन आदि कराकर स्थान सुनिश्चित कर लें अन्यथा भारी भीड़ के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

सम्पर्क

डॉ. एस. के. बनर्जी, आनन्द होमियो हॉल, फैजाबाद (उ.प्र.), फोन : ०५२७-८१२५६५
श्री एस. के. मिश्रा, ३१७, मधवापुर, इलाहाबाद (उ. प्र.)
श्री एस. पी. बांगड़, १००, एच. आई.जी. पीतम नगर इलाहाबाद (उ.प्र.), फोन : ०५३२-६३३५९०
श्री सी.डी. शर्मा, बी. ३६५, इन्द्रा नगर लखनऊ (उ.प्र.), फोन : ०५२२-३८३६००
श्री वेद प्रकाश शर्मा, सी. २१/११, पेपर मिल कॉलोनी, निशात गंज, लखनऊ
श्री रामदेव तिवारी , बी. ६३५, राजाजी पुरम, लखनऊ
श्रीमती मनमोहिनी शर्मा, बी-६, सेक्टर जी. अलीगंज, लखनऊ, फोन - ०५२२-७२४९८
श्री ध्रुव कुमार दास, ए-८५३, एच.ए.एल. कॉलोनी, न्यू लखनऊ
श्री आर. एस. चौधरी, १३३/१, मारुति पुरम, फैजाबाद रोड, लखनऊ

आयोजन स्थल : कमर्शियल काम्प्लेक्स, विश्वास खंड - ३, गोमती नगर, लखनऊ

आभय किशोर झा

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

वन्दे नारायणं कृष्णं
कृष्णं वन्दे परात्परं
कृष्णं निखिलेश्वरं वन्दे
कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं ।।

भगवान श्री नारायण के ही स्वरूप भगवान श्री कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं जो परात्पर स्वरूप (ब्रह्म स्वरूप) हैं, मैं पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी को भी प्रणाम करता हूं जो कृष्णमय स्वरूप में, जगद्गुरु के रूप में वन्दनीय हैं।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

चिकित्सा

विशेष

स्तम्भ

दीक्षा

सद्गुरुदेव

विवेचनात्मक

ज्योतिष / भविष्य वाणी

सौन्दर्य

पाठकों के पत्र

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका वाकई मंत्र, तंत्र, यंत्र के वैज्ञानिक स्वरूप का परिचय कराती हैं। आप पत्रिका में साधना पद्धतियों, प्रयोगों का प्रकाशन करते हैं जो उच्च कोटि व सात्विक प्रवृतियों से युक्त होती है। क्या आप दैनिक पूजा की प्रामाणिक युक्ति का प्रकाशन कर पत्रिका को अत्यधिक जनोपयोगी बनाएंगे। इसी प्रकार प्राण-प्रतिष्ठा अथवा मंत्र चैतन्य करने की प्रामाणिक विधि का भी प्रकाशन करें।

एस. के. ओझा
रायपुर

सद्‌गुरु की कृपा ही कहिए, कि मैंने मई ९४ का अंक पढ़ा। जगन्नाथ की महिमा के वर्णन ने जगन्नाथ की आंखों में समाए साधुवाद ने सद्‌गुरु की छवि को और भी हृदय में दृढ़ कर दिया है निश्चय ही **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** मासिक धर्म प्रेमियों, साधकों के लिए अपार सामग्री आप जैसे ज्ञानियों की खोज से उपस्थित हो रही है।

अम्बालाल भावसार,
आमड़, उदयपुर

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री अनुकूल है। आप केन्द्र में प्राप्त सुविधाओं के विषय में यदि जानकारी प्रकाशित करें तो उपयोगी रहेगी। जैसे- केन्द्र के किस-किस विभाग के अन्तर्गत कौन - कौन से कार्य गतिशील हैं आदि। साथ ही आप पत्रिका में साधकों एवं शिष्यों के साधनाओं से सम्बन्धित जटिल एवं सूक्ष्म प्रश्नों के उत्तरों का एक पृष्ठ देने की कृपा करें।

महेश्वर नाथ ठाकुर,
किश्तवाड़, कश्मीर

अक्टूबर ९३ के **'महालक्ष्मी विशेषांक'** को पढ़ने के बाद से प्रतिमाह मन- मस्तिष्क, नयन- चाह बनी रहती है कि यह पत्रिका केवल पढ़ूं ही नहीं साधना भी करूं। यह पत्रिका ऐसा क्रम बना रही है कि मैं उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहा हूं। पत्रिका के माध्यम से मैंने साधना की है और सफलता भी मिली है। वास्तव में पूज्य गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी ही हैं जो अभी संसार में लौह पुरुष से आगे बढ़कर देवत्व का आधार बने हैं।

श्यामेन्द्र श्याम
गिरीडीह, बिहार

पहले **'साधना सिद्धि विशेषांक'** फिर **'अलौकिक सिद्धि विशेषांक'** और जुलाई में **'पूर्ण सिद्धि विशेषांक'!** गुरुदेव आपने तो बिना मांगे ही सब कुछ दे दिया। इन तीनों अंकों में वर्णित प्रत्येक साधना सम्पन्न करने योग्य है। मैं प्रत्येक साधना को सम्पन्न करने का इच्छुक हूं और इन्हें अगले वर्ष २१ अप्रैल से पहले - पहले अवश्य सम्पन्न कर लूंगा।

एस. एन. गुप्ता,
टिहरी गढ़वाल

जुलाई की पत्रिका विशेषांक के नाम के अनुकूल ही है। पत्रिका की प्रस्तुति मुख पृष्ठ अन्दर के पृष्ठों का संयोजन सभी कुछ आकर्षक बना है। विषय वस्तु भी समाज के प्रत्येक वर्ग के अनुकूल है। पूर्व की भांति यदि पुनः रोग एवं योगासनों से सम्बन्धित लेख दें तो पत्रिका की व्यापकता बढ़ेगी तथा बड़ी आयु वर्ग के स्त्री-पुरुषों को लाभ मिलेगा।

सौ. नन्दिनी जे. म्हात्रे,
अहमदनगर, महाराष्ट्र

कृपया ध्यान दें

गुरुधाम जोधपुर एवं दिल्ली में नित्य पाठकों के पत्र बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं जिनमें व्यक्तिगत समस्याएं, पूज्य गुरुदेव के आगमन से सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी, साधनात्मक विषय वस्तु अथवा सामग्री को वी. पी. पी. द्वारा प्राप्त करना जैसे अनेक विषय सम्मलित रहते हैं।

हमारे प्रत्येक पाठक का पत्र हमारे लिए महत्वपूर्ण है किन्तु खेद तब होता है जब पत्र के अन्त में पता स्पष्ट नहीं होता है, अपूर्ण होता है अथवा नहीं भी होता है।

कृपया समस्त असुविधाओं से बचने के लिए पत्र के अन्त में अपना पूरा पता स्पष्ट रूप से केवल हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अवश्य दें। **पिन कोड का उल्लेख अवश्य करें, विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित होने पर।** यदि आप हमारे वार्षिक सदस्य हैं तब भी सदस्यता संख्या देने के साथ - साथ पूरा पता देने से हम आपको तीव्रता से उत्तर दे पायेंगे।

ऑडियो और वीडियो कैसेट के सम्बन्ध में

हमें अपने बहुत से पाठकों के पत्र मिले हैं जिसमें उन्होंने विगत दिनों में विभिन्न स्थानों में सम्पन्न हुए साधना शिविरों के **ऑडियो** और **वीडियो कैसेट** प्राप्त करने चाहे हैं, किन्तु व्यवहारिक कठिनाइयों के कारण हम उन्हें यह कैसेट तुरन्त नहीं उपलब्ध करा सके जिसका हमें खेद है।

साधक व पाठक गण कृपया इस बात पर ध्यान दें कि **दिल्ली एवं जोधपुर से भिन्न स्थानों पर होने वाले साधना शिविरों के कैसेट की मास्टर कॉपी प्राप्त होने में कुछ विलम्ब स्वाभाविक ही रहता है।** अतः वे इसे कार्यालय की त्रुटि अथवा उपेक्षा समझ कर खिन्न न हों।

वर्ष १४ **अंक ८** **अगस्त ९४**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक,गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

सम्पादकीय

भारतीय पंचाग के अनुसार यह भाद्रपद का मास है जो भगवान श्रीकृष्ण के इस धरा पर अवतरण का अवसर भी है। भगवान श्रीकृष्ण एक ऐसे अवतरण हुए जिन्होंने अपने जीवन में प्रत्येक पक्ष को पूर्णता दी और षोडश कला युक्त कहलाए। भगवान श्रीकृष्ण अपने-आप में एक अवतरण से भी अधिक एक परम्परा माने गए- जीवन की परम्परा और उन्होंने ही पहली बार व्यक्ति को सम्पूर्णता के पथ से परिचित कराया। इसी से जहां वे एक ओर सौन्दर्य, कला के पक्षधर के रूप में सामने आते हैं वही उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान **श्रीमद्भगवद्गीता** के माध्यम से भी स्पष्ट होता है जो अध्यात्म की पराकाष्ठा है।

वर्षों पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव ने **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका को भी इस युग की गीता की संज्ञा से विभूषित किया था जिसका सीधा-सा तात्पर्य था कि जीवन के प्रत्येक पक्ष को पूर्णता से जिया जाए। इसी कारणवश पत्रिका के प्रत्येक अंक में जहां अध्यात्म से सम्बन्धित चर्चा रहती है वहीं योग, स्वास्थ्य, दर्शन इत्यादि का भी समावेश रहता है जिसका प्रमाण पत्रिका का यह अंक भी है। पत्रिका का प्रस्तुत अंक आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर इस बात को और भी अधिक सुन्दर ढंग से व्यक्त करने वाला बन गया है और इस माध्यम से हमारे पाठकों एवं साधकों को एक नयी हिलोर का अहसास हो सके यही इस **चैतन्य विशेषांक** का उद्देश्य है।

भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के दो पक्ष रहे है सौन्दर्य और अध्यात्म, इसी कारण वश इस अंक में जहां आपको **'मैं तो भयी कृष्णमयी', 'एक दिन हेरि हेरि हंसि हंसि जाए'** जैसी सौन्दर्य प्रधान लेख प्राप्त होगे वही भगवान श्रीकृष्ण के ही साधनामय जीवन के परिचायक रूप में **'सिद्ध साधना पर्व है जन्माष्टमी'** जैसा उत्कृष्ट लेख भी प्राप्त होगा। यह माह श्रावण माह को भी अपने-आप में समाहित किए हुए है इसी कारणवश भगवान शिव की साधना, उपासना से सम्बन्धित सामग्री भी शिव भक्त पाठकों के लिए प्रस्तुत की जा रही है।

भगवान शिव की साधना से सम्बन्धित लेख, मंत्रों का विवेचन, आगामी विश्वयुद्ध के सम्बन्ध में **पूज्यपाद गुरुदेव की भविष्यवाणी, सम्मोहन से सम्बन्धित नवीन तथ्य, चिकित्सा जगत की खोज- यह भी नपुंसकता ही है,** जैसे विविध विषय भी आपको इसी अंक में प्राप्त होंगे जो उपयोगी होने के साथ-साथ रोचकता से भी भरपूर बन गए हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस अंक को अपनी रुचियों एवं दैनिक आवश्यकताओं के सम्बन्ध में पूर्ण उपयोगी पाएंगे। आपको यह अंक कैसा लगा इस विषय में आपकी सम्मतियों की हमें व्यग्रता से प्रतीक्षा रहेगी।

आपका

नन्द किशोर श्रीमाली

कोई दिया टकरे
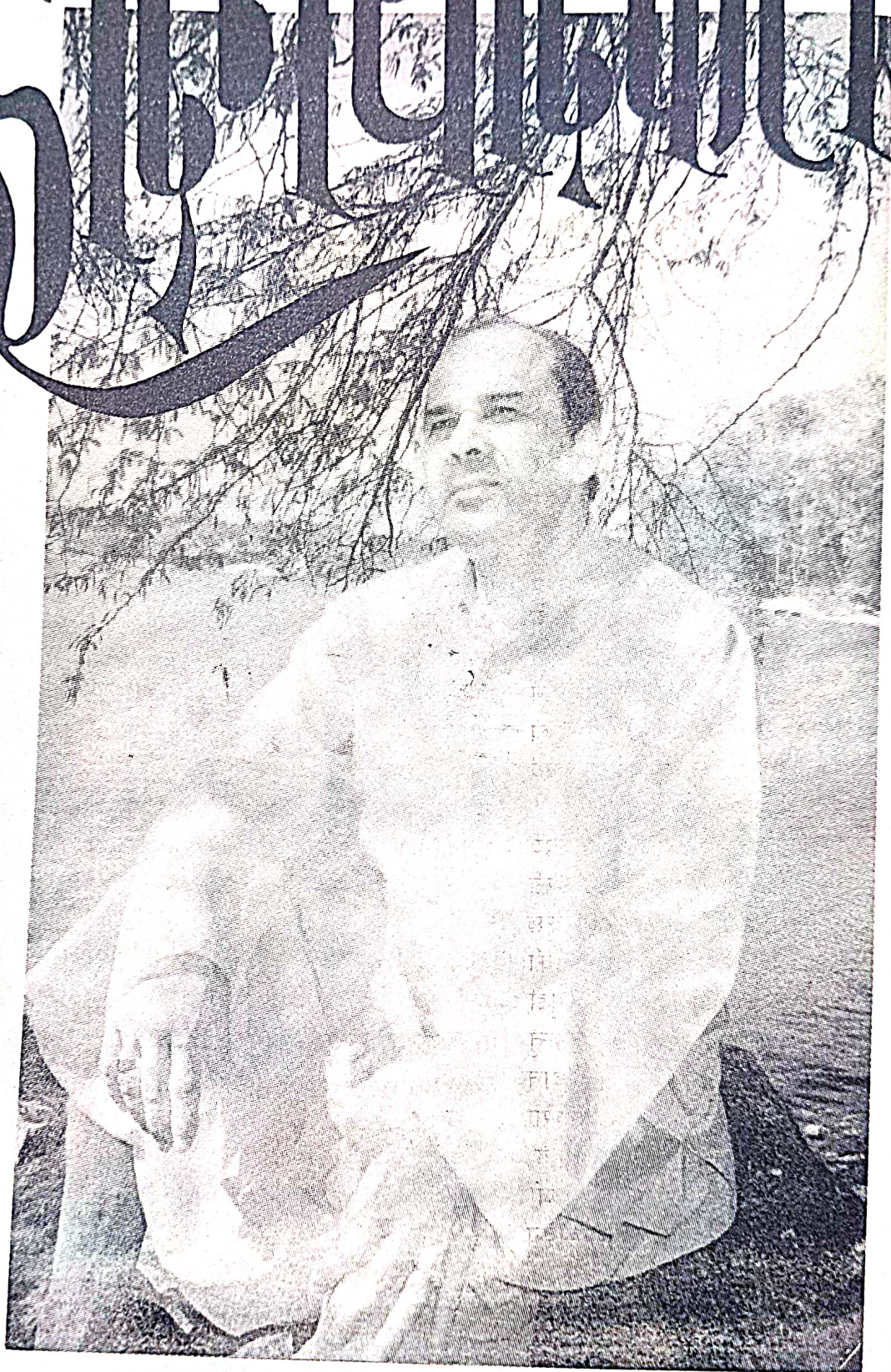
आज जो मैं आनन्द के क्षणों में डूबा समस्त विश्व को आत्मवत् मान रहा हूं, वह भी मैं हूं और कल जो छोटे-छोटे द्वंद्वों में उलझा असीम घृणा के झोंकों में झुलस रहा था, वह भी मैं ही था। आज जो मैं सर्वस्व लुटा देने में ही अनिर्वचनीय आनन्द का स्रोत पा गया हूं, वह भी मेरा ही व्यक्तित्व है और कल कहीं से कुछ झपट कर अपने पास संचय कर लेने वाला भी मैं ही तो था।

फिर क्या है मेरा व्यक्तित्व? मेरी अस्मिता क्या है? मेरी चेतना क्या है? मेरा जीवन-रहस्य क्या है? और सबसे बड़ी बात कि जीवन का मर्म क्या है? **क्या इसी प्रकार दो छोरों के मध्य झूलते हुए निश्चय और अनिश्चय के मध्य जीवन को समाप्त कर लिया जाए? गुमनाम सी यात्रा करके जीवन की इतिश्री कर दी जाए? या इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर लिए जाएं?** यही द्वंद्व झिझोड़ता रहता था, मुझे जीवन के उन प्रारम्भिक दिनों में, जिन दिनों के मध्य पूज्य गुरुदेव से मेरा साक्षात्कार हुआ, साहचर्य मिला और सामीप्यता प्राप्त हुई।

यह सत्य है कि तब ये प्रश्न स्वयं मुझे व्यक्त नहीं थे। तब मेरे मन की ऊहापोहों में ऐसे स्वर नहीं थे कि मुझे कुछ सुनाई दे. . . और इन प्रश्नों की वास्तविकता, इन प्रश्नों के स्वर मुझे गुरु-साहचर्य में ही सुनाई पड़े। किन्तु धुंधली सी उस पृष्ठभूमि में इस बात का बोध अवश्य रहता था कि ऐसा कुछ जरूर होता है जो बिरला होता है, जो सामान्य नहीं होता है, जो घिसा-पिटा और रोजमर्रा का जीवन मात्र नहीं होता है।

यद्यपि रोजमर्रा का जीवन तो व्यक्ति के साथ-साथ जीवन पर्यन्त चलता रहता ही है व्यक्ति चाहे या न चाहे। व्यक्त हो अथवा अव्यक्त, किन्तु प्रत्येक स्थिति में उसे ऐसे सभी कुछ को ढोना पड़ता ही है, जो कर्त्तव्य बनकर उस पर आरोपित होता है और वही मेरे साथ भी था। प्रारम्भ में गुरुदेव से परिचय का, गुरुदेव को पहचानने का माध्यम था पत्रिका, और समस्त ज्ञान-विज्ञान के बाद भी अतृप्ति शेष रह जाती थी, कुछ शून्य सा बचा रह जाता था। समस्त साधनाओं को करने के बाद भी वह कुछ नहीं मिल रहा था, जो मन की लालसा थी।

तभी पूज्य गुरुदेव का झिझोड़ता हुआ कथ्य प्रकाशित हुआ **'सुनो! बनपाखी सुनो'!** कथ्य क्या पढ़ा मानो मैं ही बनपाखी बन गया। मैं जो उन्मुक्त पक्षी, समाज के घेरों में फड़फड़ा रहा था, रिश्तों की सलाखों पर अपना सिर पटक-पटक कर लहूलुहान हो गया था, वह एक झटके से उस उन्मुक्त आकाश में उड़ गया जहां कुछ शेष नहीं रह जाता है। न राग, न द्वेष, न छल, न कपट, न आलोचना, न तर्क, न कुतर्क, न पीड़ा, न शोक— केवल दूर-दूर तक फैला हुआ निर्मल आकाश और अनन्त विस्तार में बिना थके, बिना रुके, गुनगुनाते हुए उड़ने की भावना।

वही मेरा 'गुरु' से प्रथम परिचय था, उस 'गुरु' से जो न तंत्रज्ञ है, न मंत्रज्ञ, न ज्योतिषी, न कर्मकांडी और न किसी भी ज्ञान-विज्ञान का ज्ञाता। जो केवल गगन सदृश्य सदा-सदा से उन्मुक्त विशाल बांहें फैलाये खड़ा है, और मूक आमन्त्रण दे रहा है। तभी तो लगा कि सारी प्रकृति कैसे गुरुमय है, तभी तो एक-एक कण में नर्तन को समझा, तभी तो पग-पग पर जीवन को देखा. . . और जहां पग-पग पर जीवन है, पग-पग पर नर्तन है उसको भीतर से दिखाती हुई गुरु की ज्ञान-दृष्टि है, तो जीवन में नृत्य क्यों नहीं उतर आयेगा?

मैं उन्मुक्त होकर कहे बिना न रह सका कि— गुरुदेव! आपके समस्त स्वरूप प्रणम्य हैं, आपके समस्त स्वरूप वन्दनीय हैं, आपके समस्त स्वरूप पूज्यनीय हैं और प्रत्येक स्वरूप की एक अर्थवत्ता और गहन सार्थकता है **किन्तु मेरा गुरु मुझे अब मिला है, और वह जो 'गुरु' मिला, वही आज तक मेरे गुरुदेव हैं।** फिर तो मंत्र बहुत छोटी घटना हो गई। तंत्र मेरी मुट्ठियों में भींच ली जाने वाली वस्तु हो गई और यंत्र का अर्थ ताम्रपत्र पर लिखे अक्षरों से विस्तारित हो गया।

पहली बार जाना कि कोई जीवन ऐसा भी होता है जो 'स्व' से ऊपर उठकर होता है। कुछ क्षण ऐसे

बौद्ध जीवन दर्शन पूर्वजन्म के अस्तित्व को न स्वीकार करता है न अस्वीकार। उसके अनुसार ज्यों एक जलती मशाल को तेजी से गोल घेरे में घुमाया जाए तो उससे बना रोशनी का एक वृत्त न वास्तविक होता है न अवास्तविक, ठीक उसी प्रकार यह जीवन श्रृंखला भी है।

सूक्ष्मता में जाकर देखें तो यही जीवन की सत्यता भी है किन्तु इसका बोध गुरु कृपा के बिना हो भी तो कैसे? मिथ्या देहाभिमान छूटे भी कैसे? व्यर्थ के मोह और संस्कार विनष्ट हों भी तो कैसे?

भी होते हैं जब मन की आंखें इस विशाल ब्रह्माण्ड के असीम सौन्दर्य को निहारते हुए निमग्न हो जाती हैं। कुछ पल ऐसे होते हैं जब अपने जीवन का मूल उत्स, अर्थ, उत्पत्ति का रहस्य और आह्लाद समझ में आ जाता है। जिनके सामने सांसारिक घटनाएं कहीं कोई अस्तित्व रखती ही नहीं, क्योंकि वे इतनी लघु और विस्मृत प्राय हो जाती हैं, इतनी अधिक न्यून हो जाती हैं कि तब उनको तुच्छ भी तो नहीं कहा जा सकता। **तुच्छ तो हम उसको कहते हैं जिसके प्रति हमारे मन में कोई तृष्णा शेष रह गई हो और हम उसे प्राप्त न कर पाने के कारण उसे यों ही निन्दनीय बना दें।** तब शरीर इन्द्रियों के व्यामोह से कट जाता है, और योगियों की रहस्यमय भाषा में कहूं तो आत्म की सर्वव्यापकता स्पष्ट होती जाती है।

जब ऐसा हो जाता है तब मन में एक करुणा स्वतः व्याप्त हो जाती है। वह करुणा जो नौ रसों में एक रस मात्र नहीं है, वरन् ऐसी करुणा जो पाषाण हृदय को तोड़कर बही देवगंगा सदृश्य, अमृत तुल्य होती है। जो छलछला कर बहती है, नेत्रों से झलकती है, स्मित हास्य से फूटती है और सारे रोम-रोम से अपने-आप को व्यक्त करने लगती है। जब सभी अपने लगने लगते हैं। केवल अपने मित्र, अपने परिचित और अपने आत्मीय ही नहीं, अपने शत्रु और अपने प्रति अपकार करने वाले भी और तब मन उस असीम करुणा में भीग कर, उस दिव्य आनन्द में भीग कर सभी के प्रति कृतज्ञ हो जाता है, जिन्होंने कभी प्रताड़ना दी हो, जिन्होंने कभी कुवाक्य कहे हों, कुचक्र रचे हों। सभी तो आत्मवत् लगने लगते हैं। लगने लगता है कि पता नहीं कौन मेरे किस दुष्कर्म को समाप्त करने के लिए यों ही एक माध्यम बनकर आया रहा होगा और मुझे मुक्त कर पुनः उस असीम सुख में लीन कर गया, जिससे मैं बिछड़ा तो कभी नहीं था, किन्तु विस्मृत हो गया था।

और यह जीवन विस्मृति के सिवा है भी क्या? गुरु-साहचर्य का और अर्थ ही क्या है? गुरुदेव के सारे परिश्रम का रहस्य ही क्या है? केवल और केवल विस्मृति को दूर कर देना। क्योंकि जिस दिन विस्मृति दूर हुई उस दिन व्यक्ति जान जायेगा कि वह कभी भी, किसी भी कष्ट का अंग था ही नहीं। वह भ्रमवश अपने को काल के चक्र में पड़कर उसका एक अंग मान बैठा था। किन्तु गुरु-कृपा से काल तब एक नियामक सत्ता नहीं रह जाती, तब काल हम पर शासन करने वाला नहीं रह जाता। काल के साम्राज्य के स्थान पर ज्ञान का साम्राज्य प्रारम्भ होता है और उस ज्ञान के आलोक में प्रतीत होता है कि कभी भी, कुछ भी तो नहीं घटा इस जीवन में, हिलती- डुलती परछाइयों जैसा एक के बाद दूसरा जन्म होता रहा किन्तु मूल शरीर तो सदा-सदा से गुरु के पास सुरक्षित था, यह बोध सहज नहीं होता। **देह का अभिमान, देह की मिथ्या धारणा इतनी सहजता से नहीं जाती, क्योंकि देह को नकारने का अर्थ है सारे परिवेश को नकार देना, सारे सम्बन्धों को काट देना, इस जन्म के सभी परिचितों को छोड़ देना, इस जन्म में जो प्रिय हैं उनसे मुंह मोड़ लेना।** यही क्रिया हो नहीं पाती, क्योंकि व्यक्ति सब से कट कर अपने को शून्य में खोता हुआ पाने लगता है, लेकिन वही शून्य तो गुरु का आश्रय है, उसी शून्य में तो गुरु की सुपरिचित चिर शान्तिदायक वह गोद है जिसमें जन्मों-जन्मों से भटका मन विश्राम पा सकता है।

एक के बाद दूसरा जन्म, दूसरे के बाद तीसरा जन्म, तीसरे के बाद चौथा जन्म . . . प्रत्येक जन्म में उसी प्रकार आत्मीय जनों का सम्बन्ध, उनके प्रति मोह और स्मृति के संग्रह में संस्कार बनकर एकत्र होती अनन्त वासनाएं — यही तो है सारे दुःखों का मूल। इसी को तो समाप्त करने पर बल दिया था भगवान बुद्ध ने, यही क्रिया तो कर रहे हैं पूज्य गुरुदेव!

मेरे गुरुदेव!

● **योगी नित्यानन्द**

भगवान विष्णु के सर्वाधिक लोकप्रिय व पूर्णरूप से षोडश कलायुक्त अवतरण भगवान श्रीकृष्ण का प्रकट दिवस भाद्रपद कृष्णअष्टमी (२६/८/६४) केवल अवतरण दिवस ही नहीं सांधना का श्रेष्टतम पर्व भी है। क्योंकि कृष्ण का तात्पर्य ही है जो सम्पूर्ण हों।

सौन्दर्य, वशीकरण, सम्मोहन, प्रेम, शीघ्र विवाह और जीवन में रस घोलने का तो यह अद्वितीय अवसर है।

भगवान विष्णु के अवतरण प्रत्येक युग में सम्भव हुए हैं और होते रहेंगे, किन्तु भगवान श्री कृष्ण जैसा अवतरण दुर्लभ ही हुआ है और इस बात की पुष्टि केवल जन सामान्य की भावनाओं के आधार पर ही नहीं वरन् शास्त्रीय आधार पर भी की जा सकती है, जहां सभी शास्त्रों ने एक मत होकर श्रीकृष्ण अवतरण को ही सम्पूर्ण माना है, जीवन के भौतिक पक्षों के प्रति भी और जीवन के आध्यात्मिक पक्षों के प्रति भी। भगवान श्रीकृष्ण की प्रचलित छवि में उन्हें ईश्वर तो गाना गया, किन्तु उनके साथ जुड़े साधना पक्ष और उनकी प्रबल आध्यात्मिकता की उपेक्षा कर दी गई, जबकि इस बात के पूर्ण प्रमाण मिलते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण कुशल तंत्रवेत्ता और साधक भी थे, जिन्होंने शिष्य रूप में अपने गुरु सांदीपन के आश्रम में रहकर अनेक साधनाओं को सीखा था।

भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी अनेक कथाओं के पीछे भी उनके साधक होने की कथा ही निहित है, जिसे अलौकिकता का

आवरण दे दिया गया है और उनसे जुड़ा साधना पक्ष भुला दिया गया है। अनेक राक्षसों का वध या अपने गुरु के मृत पुत्र को जीवित करना जैसी अनेक घटनाएं उनकी इसी विलक्षणता की परिचायक हैं और ऐसे अलौकिक युग पुरुष के जन्म का अवसर तो स्वतः सिद्ध मुहूर्त है ही।

वस्तुतः 'कृष्ण' शब्द ही अपने-आप में जीवन का अत्यन्त गम्भीर रहस्य समेटे है। इस शब्द में जहां "क" काम सूचक है, वहीं 'ऋ' श्रेष्ठ शक्ति का प्रतीक है, "ष्" षोडश कलाओं का रहस्य समेटे है तो "ण" निर्वाण का बोध कराने में समर्थ है, और इस प्रकार 'कृष्ण' शब्द का तात्पर्य है जो सामर्थ्य पूर्वक पूर्ण भोग व मोक्ष दोनों में समान गति बनाये रखे और इसी कारणवश भगवान कृष्ण की साधना-आराधना अपने-आप में सम्पूर्ण साधना कही गई।

प्रत्येक देवी या देवता वस्तुतः मंत्र स्वरूप होते हैं और भगवान श्री कृष्ण भी इसके अपवाद नहीं हैं। बीज स्वरूप में भगवान श्रीकृष्ण को 'क्लीं' स्वरूप माना गया है अर्थात् उनके स्वरूप में काम तत्व ही सर्वोपरि है। इस कारणवश यदि इस सिद्ध पर्व पर साधक अपने जीवन के इस पक्ष से सम्बन्धित कोई भी साधना करता है, तो वह निश्चय ही सौ गुनी अधिक तीव्र एवं प्रभावशाली होती ही है।

वशीकरण सम्बन्धी साधनाएं, शीघ्र विवाह सम्बन्धी साधनाएं, कामदेव- रति से सम्बन्धित साधनाओं के साथ-साथ यह दिवस समस्त सौन्दर्य साधनाओं, अप्सरा अथवा यक्षिणी साधनाओं के लिए भी सिद्ध पर्व माना गया है। यदि कोई अप्सरा अथवा यक्षिणी साधना किसी पूर्णिमा अथवा पर्व विशेष पर सम्पन्न करने का निर्देश हो उसे भी उस रात्रि में निःसंकोच सम्पन्न किया जा सकता है।

जन्माष्टमी के पर्व को सही रूप में उत्साह, उल्लास व विविध सौन्दर्य साधनाओं के द्वारा मनाया जाना चाहिए और शास्त्रों का कथन है कि साधक इस दिवस विशेष का प्रयोग एक से अधिक साधनाओं में करे। यह प्रबल तांत्रोक्त पर्व भी है, किन्तु साधक जहां तक सम्भव हो इस दिवस का प्रयोग सौन्दर्य साधनाओं हेतु ही करे। बिना अपने मनोभावों को दबाये अथवा मन पर कोई बोझ रखे यदि साधक उन्मुक्त भाव से इस दिवस पर साधनाएं सम्पन्न करता है, तो कोई कारण ही नहीं कि वह सफ़लता के अत्यन्त निकट न हो।

यहां हम इस दिवस विशेष की चैतन्यता से मेल खाती हुई कुछ ऐसी गोपनीय साधनाएं प्रकाशित कर रहे हैं जो भगवान श्री कृष्ण के ही स्वरूप की भांति विविधता को समाए हुए हैं। जिस प्रकार वे कूटनीतिज्ञ, योद्धा, प्रेमी, कला प्रवीण, वाक्पटु एवं मनोहर थे, उसी अनुकूल साधक के जीवन में भी विविध कलाओं से सौन्दर्य भर सके इसका ही प्रयास इन साधनाओं के चयन में किया गया है।

सौन्दर्य प्रदायक 'क्लीं' साधना

यह भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित प्रारम्भिक साधना है। भगवान श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण स्वरूप 'क्लीं' स्वरूप होने के कारण एक प्रकार से आवश्यक ही होता है कि साधक इस प्रारम्भिक साधना को अवश्य ही करे। जीवन की प्रत्येक सौन्दर्य साधना का मूल भी यही साधना है और इस साधना को विशेष रूप से जन्माष्टमी की रात्रि में ही सम्पन्न करने के कारण साधक को अवश्य ऐसी प्रबलता मिल जाती है जिससे वह स्वयं रूप-सौन्दर्य के साथ-साथ एक विचित्र प्रकार के सम्मोहन से भरे चुम्बकत्व को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।

भगवान श्री कृष्ण का रोम-रोम इस 'क्लीं' कामबीज से इस प्रकार आबद्ध था, जिससे उन्हें कुछ करने की अथवा किसी पर अपना प्रभाव डालने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती थी। व्यक्ति स्वतः उनका प्रशंसक और अनुयायी हो जाता था। केवल मनुष्य ही नहीं पशु- पक्षी भी, केवल उनके मित्र पांडव ही नहीं उनके विरोधी कौरव भी उनके आकर्षण में समान रूप से बंधे थे।

इस साधना के लिए आवश्यक है कि साधक के पास **ताम्र पत्र पर अंकित प्रामाणिक 'क्लीं' यंत्र** अवश्य हो, जो गोपाल मंत्रों से मंत्र- सिद्ध हो तथा सहयोगी रूप में **कामकला माला** हो। इन दोनों सामग्रियों को साधक जन्माष्टमी की रात्रि में अपने समक्ष पीले वस्त्र पर स्थापित कर दे, वह स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करे और पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठे। सामने **राधा-कृष्ण का संयुक्त चित्र** स्थापित करे और कक्ष को सुसज्जित करें। साधक यथासम्भव रात्रि के दस बजे के बाद ही यह साधना प्रारम्भ करे। तदुपरान्त भोज पत्र पर निम्न प्रकार से अष्टदल कमल बनाकर उसके प्रत्येक दल में चित्र के अनुसार केसर से काम गायत्री के मंत्र को अंकित करे तथा मध्य में क्लीं बीज अंकित करे।

काम गायत्री मंत्र

।।कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोऽनंग प्रचोदयात्।।
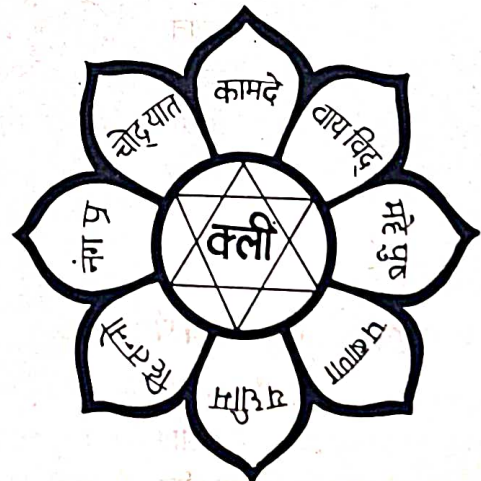
यह भी यंत्र ही है और इसका भी पूजन साधक 'क्लीं' यंत्र के साथ करे। घी का दीपक लगाए और सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करे। यंत्र, चित्र, माला आदि का पूजन केसर, पुष्प की पंखुड़ियों व अक्षत से करें, **कामकला माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र- जप करे।

मंत्र

क्लीं कृष्णाण गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा

मंत्र-जप के उपरान्त कुछ देर वहीं स्थिर चित्त बैठे रहे और भावना करे कि इस तेजस्वी मंत्र का प्रभाव आपके रोम-रोम में व्याप्त हो रहा है, यदि सम्भव हो तो रात्रि शयन भी वहीं करे। दूसरे दिन प्रातः जल्दी उठकर ताम्र पत्र पर अंकित 'क्लीं' यंत्र एवं कामकला माला किसी पवित्र सरोवर में विसर्जित कर दे, जबकि भोजपत्र पर अंकित यंत्र को ताबीज में भर कर दाहिनी भुजा में अथवा गले में धारण कर ले। साधक कुछ समय के बाद ही अपने रोम-रोम में होने वाले परिवर्तन और लोगों के व्यवहार में परिवर्तन देखकर खुद ही साधना की अनुकूलता को समझ सकता है, यद्यपि यह साधना वर्ष में कभी भी की जा सकती है, किन्तु जन्माष्टमी के अवसर पर करने से इसके प्रभाव में अतिरिक्त तीव्रता और तीक्ष्णता उतर आती है।

२. आकर्षण प्रयोग (शीघ्र विवाह प्रयोग)

यह प्रयोग किसी विशेष पुरुष अथवा स्त्री को पूर्णरूप से सम्मोहित करने का प्रयोग है। कुंआरी कन्याओं द्वारा यह प्रयोग सम्पन्न करने से उन्हें इच्छित वर की प्राप्ति होती है तथा अविवाहित युवकों द्वारा प्रयोग विधि-विधान सहित सम्पन्न करने से प्रेमिका पूर्ण- रूप से उसके वश में हो जाती है अथवा मनोवांछित कन्या के साथ विवाह सम्पन्न होने की स्थिति बनती है। यह साधना कृष्ण अष्टमी के दिन प्रातः ही सम्पन्न कर लेनी चाहिए। स्नान कर अपने शरीर पर सुगन्धित द्रव्य लगा कर, पीले वस्त्र धारण कर, पूजा स्थान में पश्चिम की ओर मुख करके बैठें और अपने सामने लाल वस्त्र पर **आकर्षण यंत्र** स्थापित कर दें। उचित तो यह माना गया है जिसको सम्मोहित करना हो उसका चित्र स्थापित करें किन्तु उसके अभाव में उसके नाम को भी लिखा जा सकता है। यंत्र की पूजा धूप, दीप से कर **मोहिनी माला** के द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र- जप करें।

मंत्र

अं अमुकोमकर्षय आकर्षय नमः

यह मंत्र अत्यन्त ही सिद्ध, प्रभावशाली एवं अभीष्ट फल देने वाला है। इस मंत्र- जप के पश्चात् आकर्षण यंत्र धारण करने से जिसे वश में करना चाहते हों, वह शीघ्र ही पूर्णरूप से प्रभाव में आबद्ध होता ही है। मंत्र- जप के उपरान्त मोहिनी माला का प्रयोग अन्य किसी साधना में करना वर्जित है जबकि आकर्षण यंत्र निरन्तर धारण किए रहना चाहिए।

३. सर्वजन वशीकरण प्रयोग

यदि साधक किसी स्त्री अथवा व्यक्ति विशेष को सम्मोहित करने के स्थान पर इस बात में रुचि रखता हो कि समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति उससे प्रभावित हों, उसकी आज्ञा का पालन करें या स्पष्ट शब्दों में कहें कि उसे देखकर सम्मोहित हों, तो उसे यह प्रयोग करना ही चाहिए। इस प्रयोग की विशेषता यह है कि इसे सामान्य रूप से सिद्ध किया जाता है, फलस्वरूप व्यक्ति को चतुर्दिक सफलता और ख्याति तो मिलती ही है साथ ही उसके अंदर चुम्बकीयता और अधिकार तत्व भी पुष्ट होता है, जिससे उसकी वाणी और व्यक्तित्व में एक अनोखी सी गंभीरता और आकर्षण उतर आता है।

यह प्रयोग केवल जन्माष्टमी की रात्रि में ही सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को चाहिए कि वह इस दिवस विशेष की रात्रि में दस बजे के बाद सर्वथा एकांत में साधनारत हो। उसके वस्त्र, आसन, सामने बिछा कपड़ा सभी पीले रंग के हों और वह स्वयं गोरोचन अथवा केसर का तिलक करके साधना में प्रवृत्त हो। इस साधना में एकाग्रता का विशेष महत्व है। साधना कक्ष में एक बड़े घी के दीपक के अतिरिक्त प्रकाश की कोई भी व्यवस्था न रखे और इसी प्रकाश में अपने सामने **हृषिकेश यंत्र** स्थापित कर उस पर काजल का टीका लगाए एवं **विश्व मोहिनी माल्य** से निम्न मंत्र को १०८ बार जपे।

मंत्र

क्लीं हृषिकेशाय नमः

इस मंत्र को एक साफ कागज पर लिख कर उसे दीपक के समीप ही रख ले। जहां तक सम्भव हो मंत्र-जप के काल में यंत्र पर ही दृष्टि टिकाए रहें। मंत्र-जप के उपरांत यंत्र पर लगे सम्पूर्ण काजल को सम्भाल कर रख लें और कुछ भाग अपने मस्तक पर लगा लें। यंत्र एवं माला को भविष्य में पुनः प्रयोग में न लें तथा जब कोई विशेष आवश्यकता हो, किसी सभा आदि में प्रवेश करना हो तो इस काजल की बहुत थोड़ी सी मात्रा अपने माथे अथवा वक्षस्थल पर लगा लें। समूह सम्मोहन का यह अचूक एवं अद्वितीय प्रयोग माना गया है।

४. इच्छा पूर्ति गोविन्द प्रयोग

इस साधना हेतु साधक रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात साधना क्रम प्रारम्भ कर अर्द्धरात्रि के साथ पूर्ण कर मंत्र-जप सम्पन्न करे, इस साधना हेतु **इच्छा पूर्ति गोविन्द यंत्र, दो गोविन्द**

कुण्डल तथा **आठ शक्ति विग्रह** आवश्यक हैं।

अपने सामने सर्वप्रथम बाजोट पर पुष्प ही पुष्प बिछा दें और उन पुष्पों के बीचों-बीच **इच्छा पूर्ति यंत्र** स्थापित करें, तथा इस यंत्र का पूजन केवल चन्दन तथा केसर से ही सम्पन्न करें, अपने सामने **कृष्ण का एक सुन्दर चित्र** फ्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र पर भी तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचामृत हो, जिसमें घी, दूध, दही, शक्कर तथा गंगाजल हो। इसके अतिरिक्त अन्य नैवेद्य भी अर्पित कर सकते हैं, इच्छा पूर्ति यंत्र के दोनों ओर **गोविन्द कुण्डल** पर केसर का टीका लगायें और दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण भगवान का ध्यान करें। कृष्ण का ध्यान कर इनके शक्ति स्वरूप **आठ शक्ति विग्रह** स्थापित करें, ये आठ शक्तियां लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं पुष्टि हैं, प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ लक्ष्म्यै नमः पूर्वदले, ॐ सरस्वत्यै नमः आग्नेयदले, ॐ रत्यै नमः दक्षिणदले, ॐ प्रीत्यै नमः नैऋत्यदले, ॐ कीर्त्यै नमः पश्चिमदले, ॐ कान्त्यै नमः वायव्यदले, ॐ तुष्टयै नमः उत्तरदले, ॐ पुष्टयै नमः ईशानदले।

शक्ति पूजन के पश्चात् इच्छा पूर्ति मंत्र का जप प्रारम्भ किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों हाथों में एक पुष्प अथवा पुष्प की पंखुड़ी लें, और इच्छा पूर्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए उसे अर्पित कर दें।

मंत्र

।।ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णायै गोविन्दायै स्वाहा।।

इस प्रकार १०८ बार यह मंत्र उच्चारण इसी विधि से सम्पन्न करना है, यह तर्पण प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात् पहले से जला कर रखे हुए दीप, अगरबत्ती तथा धूप से आरती सम्पन्न कर प्रसाद ग्रहण करें।

यदि कोई साधक एक महीने तक प्रतिदिन एक माला मंत्र जप सम्पन्न करे, तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।

५. शत्रु बाधा शांति कृष्ण प्रयोग

कृष्ण का पूरा जीवन शत्रुओं को कभी युद्ध से, कभी नीति से परास्त कर, शांति स्थापित कर धर्म की स्थापना करना रहा है। जहां धर्म है, वहीं श्रीकृष्ण हैं।

जब शत्रु बाधा बहुत बढ़ जाए, तो अपने सामने इस साधना दिवस के दिन अर्द्धरात्रि के पश्चात् शत्रुहन्ता प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, **श्री कृष्ण सुदर्शन यंत्र** के साथ मंत्र- सिद्ध **कृष्ण पाश** तथा **कृष्ण अंकुश** की स्थापना कर विधि-विधान सहित पूजन करना चाहिए, अर्द्धरात्रि के पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में एक बड़ा दीपक लगायें, दूसरी ओर धूप, अगरबत्ती जलाएं, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वप्रथम कृष्ण आयुधों का पूजन करें, प्रथम पूजन कृष्ण पाश तथा द्वितीय पूजन कृष्ण अंकुश का करें और पूजन करते समय पूरे समय **"ॐ सुचक्रायै स्वाहा"** का मंत्र- जप करते रहें।

इस पूजन के पश्चात् सामने एक चावल की ढेरी पर श्रीकृष्ण सुदर्शन यंत्र स्थापित करें तथा चारों ओर कृष्ण के अस्त्र-शस्त्र प्रतीक **आठ लघु नारियल** स्थापित करें, ये आठ लघु नारियल आठ हाथों में स्थित शंख, चक्र, गदा, पद्म, पाश, अंकुश, धनुष तथा शर के प्रतीक हैं तथा प्रत्येक लघु नारियल पर कुंकुम, केसर, चावल, चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ शंखाय नमः, ॐ चक्राय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ पद्माय ममः, ॐ पाशाय नमः, ॐ अंकुशाय नमः, ॐ धनुषे नमः, ॐ शराय नमः।

अब अपनी बाधा निवारण तथा शत्रु नाश की इच्छा व्यक्त करते हुए सुदर्शन यंत्र का अपनी सारी पूजन सामग्री से पूजन सम्पन्न कर निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें—

मंत्र

।।ॐ श्रीकृष्णायै असुराक्रान्त भारहारिणी नमः।।

इस मंत्र की पांच माला उसी स्थान पर बैठ कर जप करें तथा दूसरे दिन प्रातः राई मिला कर कृष्ण आयुधों तथा आठों लघु नारियलों को एक लाल कपड़े में बांध कर शत्रु के घर की दिशा में गाड़ दें तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी शांत हो जाता है।

श्री सच्चिदानन्दघनस्वरूपिणे
कृष्णाय चानन्तसुखायिवर्षिणे।
विश्वोद्भवस्थान निरोधहेतवे
नुमोवयं भक्तिरसाप्तयेऽनिशम्।।

जिनका स्वरूप सच्चिदानन्दघन है, जो अनन्त सुख की वर्षा करने में समर्थ हैं, जिनके द्वारा हो इस विश्व की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय घटित होती है, हम उन्हीं भगवान श्रीकृष्ण को अहर्निश प्रणाम करते हैं।

हर परदा उठा सकता हूं मैं

दीवानगी का पहला उसूल ही यही है कि अव्वल तो उसमें बात निकलती ही नहीं, लेकिन जब निकलती है तो बहुत दूर तक जाती है। राज दिलों में दफ्न हो गए तो ताउम्र दफ्न रह गए और जब चर्चे हुए तो फिर वे भी सरेआम ही हुए और इसी उसूल पर चलकर कुछ हासिल किया जा सकता है। यूं ही रोजमर्रा की जिन्दगी बसर करने जैसी बात हो तब तो कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन मन में जब कुछ हसरतें हों, उम्मीदें हों और सबसे बड़ी बात हौसले हों, तो जिन्दगी में कभी भी नयापन लाया ही जा सकता है।

इसी जिन्दगी और खूबसूरती के बीच कुछ हल्के से परदे पड़े हैं और जिन पर्दादारियों में जिन्दगी के साल-दर-साल गुजर जाने के वाद जो ठहराव और बासीपन आ जाता है उसे दूर करने की सही अदा ही अप्सरा है और जहां अप्सरा है फिर वहां तो सीधी सी एक ही बात रह जाती है - **हटाओ भी ये परदा दर्मियां से!**

परदों के पीछे रहकर जीवन का हुस्न किसने समझा है, बिना जूझने की कुव्वत रखे कौन इस जिन्दगी की कश्मकश में जीत सका है?

तुम समझती हो कि हैं परदे वहुत से दर्मियां
मैं यह कहता हूं कि हर परदा हटा सकता हूं मैं

और अब घड़ी आ गई है कि ऐसे तमाम परदों को एक झटके से दर किनार कर उसे प्राप्त कर लिया जाए जो सौन्दर्य है, जो प्रेम है और जो सही ढंग से जीवन जीने की शैली है। **यह वात किसी शास्त्र या ग्रंथ में लिखी नहीं मिलेगी।** जीवन को सचमुच जीना है तो जीवित शास्त्र पढ़ने होंगे, उनके पास बैठना होगा जिन्होंने जीवन को करीब से देखा हो, हर पग पर आने वाली गफलतों और बेबसियों को समझा हो और जाना हो, कि क्यों ऐसा होता है चलते-चलते पांव थरथरा जाते हैं, लब खामोश हो जाते हैं, और जो गीत फूटे होते हैं वे खो जाते हैं। **नेकी और वदी की लाइनें दोहराने वाली मुर्दा किताबों के पास ऐसी उदास घड़ियों के सबब कोई हौसले नहीं होते** और नतीजन एक जीता - जागता व्यक्ति जो बहुत कुछ कर सकता था, वह गुमसुम होकर परदों की ओट में सिमट जाता है। नाकाम और बेहसरत होकर मुर्दा दिल हो जाता है।

अपना अपना हाल कह लेने दो 'नातिक' सबको तुम
जानता है वो कि किसके दिल में कितना दर्द है

तभी थोड़ा रुक जाना चाहिए, समझ लेना चाहिए कि मुझे इस मुकाम पर क्या कुछ करना है, क्या मन पर सौ -सौ परदों की ओट डालकर, शरीफ और सलीका पसन्द कहला कर, घुट - घुट कर जी लेना है, परदों की ओट में उठ रही दुर्गन्ध में ही रचपच जाना है या सभी परदों को हटाकर वह सब कुछ प्राप्त कर लेना है जिससे जिन्दगी में नई हलचल आ सके, ताजी हवा आ सके और आंखों में पड़े जाले, जो दिल तक उतर गये हों वे साफ हो सकें? फैसला खुद ही करना होता है, खुद से ही पूछना होता है, ऐसे में कोई भी सही सलाह नहीं दे सकता, क्योंकि दूसरा शख्स खुद जो परदे के भीतर ही जी रहा है। उसका तो बस यही है . . .

मेरी तौवा भी कोई तौवा है
जब वहार आयी है तोड़ डाली है

और यहीं ठिठक कर, भले ही उम्र का कोई भी दौर हो, कोई भी पड़ाव या मुकाम हो यह पूछ लेना ही चाहिए कि **क्या मैं अप्सरा साधना करूं?** और यकीनन दिल यही कहेगा कि— हां!

करो। भीतर जो दबा, सिमटा, सिकुड़ा और उपदेशों, नैतिकताओं के बोझ से बोझिल एक कतरा सिसक रहा है, वह दिल इसी बात की हिमायत करेगा। क्योंकि फूलों को सबा से कब गुरेज हुआ है? नसीम को शविस्तां से कब परहेज हुआ? और आंखों की झिलमिलाहटों ने कब तारों की झिलमिलाहटों से मुंह चुराना चाहा है. . .

सितारे जागते हैं रात लट छिटकाए सोती है
दबे पांवों ये किसने उनके ख्वाबे जिन्दगी बदला

ये तो हमारी डाली हुई बेड़ियां हैं जिनमें जकड़ कर न हम हंस पा रहे हैं, न खुल कर अपने मन की बात कह पा रहे हैं, और न जी ही पा रहे हैं। सौन्दर्य और प्रेम तो गए-गुजरे जमाने की बातें हो गई, और ये भी हकीकत है कि जब-जब सौन्दर्य से परहेज करेंगे, प्रेम का नाम सुनकर नाक-भौंह सिकोड़ेंगे, तब-तब मन में वह बदबूदार झोंका और भी तेजी से भभक उठेगा, जिसे वासना की दुर्गन्ध के अलावा और क्या कहा जा सकता है? प्रेम की बांहें, प्रेम की दुनिया तो बहुत बड़ी होती है, उसमें इन बातों के लिए कोई जगह ही नहीं होती और अप्सरा. . . अप्सरा तो सही रूप में प्रेम ही है। यदि कोई मिसाल कही जाए तो मिसाल है, और अपनापन कहा जाए तो सिर से पांव तक अपनापन है —

कुछ हमीं को नहीं एहसान उठाना मालुम
वो तो जब भी आते हैं, माइल- ब- करम आते हैं

(माइल -ब-करम - कृपावान होकर)

वह तो एक अहसान है, मनुष्य पर - जो अपनी खूबसूरती, नजाकत और तमाम लज्जतों के बाद भी मनुष्य की मित्र होना पसन्द करती है। **एक तरह से खुद को उसकी जानिब सौंप देती है और बदले में कोई भी हसरत या तमन्ना नहीं रखती,** यह जरूर होता है कि प्रेम के बदले प्रेम की हसरत रखती है लेकिन इतनी सी ही बात दुनिया को कब समझ में आई? 'प्रेम' का लफ्ज शायद मनुष्य के लिए बना ही नहीं, इसने वह सुगन्ध अनुभव की ही नहीं जो आंखों से इसरार बनकर सारे वजूद में उतर जाती है, जब कोई आंखों ही आंखों में अपना समर्पण कह देती है और बिना किसी लेन-देन के एक लम्बा रास्ता तय हो जाता है।

निगाह-ओ-दिल को करार कैसा,
निशात ओ गम में कमी कहां ही
वो जब मिले हैं तो उनसे की है,
हर बात उल्फत नये सिरे से

क्या फूलों से भरे बाग में जाकर उन फूलों से लदी डालियों के नीचे से निकलने में कोई सुगन्ध नहीं मिलती, क्या जमीं पर बिछी फूलों की चादर देखकर मन में गुनगुनाहट नहीं फूटती, क्या जरूरी है कि फूल को तोड़ कर ही सौन्दर्य प्राप्त किया जाय? और जब आदमी इस तरह से मंजिल नहीं प्राप्त कर पाता, तो उपदेशक बन जाता है, कोसने लगता है, अपने खालीपन को भरने की नाकाम कोशिशें करने लगता है। तब आलोचना के सिवा उसके पास कुछ भी नहीं रह जाता। **प्रेम की चाह किसे नहीं होती, सौन्दर्य किसे नहीं सुहावना लगता,** लेकिन सौन्दर्य को सहेजना भी तो आता हो, उसे महसूस करना भी तो सीखा हो। दूसरी ओर . . .

कहां मयकदे का दरवाजा गालिब और कहां वाइज
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

हुस्न की इस मस्ती में मैंने सभी को जाते देखा है कुछ को हौसले और जिंदादिली के साथ, कुछ को परदों की ओट लेकर, लबादे ओढ़कर, रात के धुंधलके में चोरी के साथ।

एक बार प्रसिद्ध अभिनेत्री से किसी पत्रकार ने पूछा कि **आपने शादी करने की जरूरत क्यों नहीं समझी?** उसका जवाब था, मेरे पास एक तोता है जो लगातार बोलता रहता है, एक पालतू कुत्ता है जो मुझ पर ही गुर्राता रहता है, एक बिल्ली है जो दिन भर पड़ोस में मुंह मारने के बाद रात में दबे पांव लौटती है और एक इलैक्ट्रिक केतली है जो बेहिसाब धुंआ उगलती है! अब आप ही बताइये इन सब के बाद मुझे पति की आवश्यकता कहां शेष रह जाती है!

यही रह गई है मर्द की हकीकत, फिर अप्सरा कहां से प्रकट होने लग गई? प्रश्न यह नहीं है कि अप्सरा साधना क्यों करें? प्रश्न तो यह है कि क्या अप्सरा साधना करने की शर्तें पूरी की जा चुकी हैं? क्या दिलो-दिमाग में वह जगह बनाई जा चुकी है जिसमें अप्सरा का एक अक्स आकर समा सके, वह हमसाया बन सके।

क्योंकि वह तो एक फितरत (प्रकृति) है। क्या हम फितरत से इतने एकरस हो चुके हैं कि सुगन्ध के झोंके को अनुभव कर सकें, क्योंकि सुगन्ध का झोंका दिखाई नहीं पड़ता लेकिन दिलो-दिमाग में ताजगी तो दे ही जाता है। क्या हम उसकी एक-एक धड़कनों को पहचान सके हैं, मौन बात करने की अदा जान सके हैं, उसको सराहना सीख सके हैं. . .

इतना मानूस हूं फितरत से कि जब कली चटकी
झुक के मैंने ये कहा मुझसे कुछ इरशाद किया

यही अप्सरा साधना की कहानी, अप्सरा साधना की हकीकत, अप्सरा साधना से जुड़े सारे सवालों का जवाब है।

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रदायक

विजय गणपति साधना
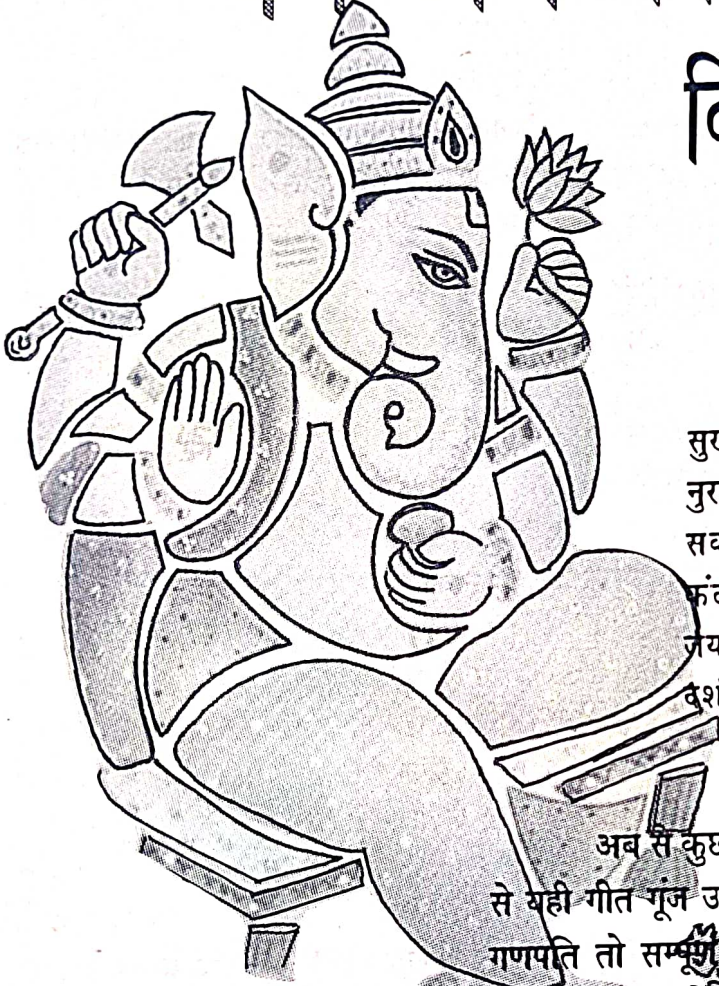
सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघनाची वार्ता विघनाची।
नुरवी पुरवी प्रेम, नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।।
सर्वांगी सुन्दर उटी शेंदूराची उटी शेन्दूराची।
कंठी झलके माल कंठी शोभे माल मुक्ताफलाची।।
जय देव जय देव जय मंगल मूर्ती हो श्री राज मूर्ती।
दर्शन मात्रे मन स्मरने मात्रे मनकामना पूर्ती ।।
जय देव, जय देव . . . . . .

अब से कुछ ही दिनों बाद सम्पूर्ण पश्चिम भारत के घर -घर में आह्लाद से यही गीत गूंज उठेगा और केवल पश्चिम भारत में ही क्यों, भगवान श्री गणपति तो सम्पूर्ण भारत के सर्वमंगलदायक देव हैं।

. . . और इनकी उपस्थिति का प्रकट दिवस है भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (०६.०६.६४) जो भगवान श्री गणपति के घर में स्थापन का भी सिद्ध मुहूर्त है।

भगवान श्री गणपति प्रत्येक दशा में, प्रत्येक काल में सर्वपूज्य, सर्व प्रकारेण मंगलदायक कहे गए हैं। वर्ष के बारह महीनों में इनकी विभिन्न रूपों में पूजा- साधना करने का विधान रचा गया है और इन सभी विधानों में सर्वश्रेष्ठ विधान माना गया है **विजय गणपति स्वरूप** का जो भगवान श्री गणपति के भाद्रपद में पूजित स्वरूप सिद्धि विनायक का ही मूर्त रूप है।

यद्यपि लोक मान्यताओं के अनुसार भगवान श्री गणपति की उद्भव की विख्यात कथा तो वही है जिसके अनुसार वे मां भगवती पार्वती के शरीर के उबटन द्वारा निर्मित हुए और कर्त्तव्य पालन करते हुए सिर कट जाने पर गज का मुख लगने के कारण गजानन कहलाये, किन्तु पुराणों एवं शास्त्रों में भगवान श्री गणपति को आदिदेव के रूप में वर्णित कर उन्हें साक्षात् ब्रह्म स्वरूप कहकर वन्दित किया गया है और जिन्हें प्रत्येक युग में अपने भक्तों की रक्षा और उन पर कृपा वृष्टि के लिए सर्व समर्थ देव के रूप में वर्णित किया गया है। वस्तुतः भगवान श्री गणपति का यही वास्तविक एवं विराट स्वरूप है।

पुराणों के अनुसार त्रेतायुग में भगवान श्री गणपति ने देवताओं, ऋषियों, मनुष्यों एवं पाताल लोक के निवासियों की

प्रार्थना पर सिन्धु नामक आततायी से उनकी रक्षा करने के लिए मां भगवती पार्वती के माध्यम से अवतरित होना स्वीकार किया।

भाद्रपद के शुक्ल चतुर्थी को भगवान श्री गणपति सर्वप्रथम अपने दिव्य रूप में अवतरित हुए किन्तु मां भगवती पार्वती के प्रार्थना पर सामान्य रूप धारण कर उस शिशु अवस्था में ही अपनी अलौकिकता का सभी को संकेत दे दिया और यह स्पष्ट हो गया कि अब सिन्धु राक्षस का अन्त सन्निकट है। सिन्धु ने भी उन्हें बालावस्था में ही समाप्त करने का प्रयत्न किया किन्तु यह तो असम्भव था। कालान्तर में भगवान श्री गणपति ने युद्ध में दैत्यराज सिन्धु एवं उसके पुत्र धर्म व अधर्म को मारकर उसके कारागार से सभी ऋषियों, मुनियों, देवताओं आदि को मुक्त कराया।

भगवान श्री गणेश के इस विशेष स्वरूप में अवतरण के बाद से ही उनकी प्रकट तिथि के रूप में भाद्रपद माह की शुक्ल चतुर्थी मान्यता प्राप्त हुई और न केवल महाराष्ट्र प्रान्त में अपितु सारे भारतवर्ष में इस तिथि को अत्यन्त श्रद्धा, सम्मान एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है।

महाराष्ट्र प्रान्त में तो इस दिवस को वही मान्यता प्राप्त है जो सम्पूर्ण बंग प्रदेश में नवरात्रि पर्व को, जब घर-घर में मां काली की स्थापना करना जीवन की पुण्य माना जाता है। *लोकमान्य तिलक ने इस दिवस को जिस प्रकार राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा वही भगवान श्री गणपति की मूल भावना है और वे इसी प्रकार विघ्न विनाशक होते हुए प्रत्येक गृह में स्थापित होने को तत्पर देव हैं।*

जीवन की समस्त विघ्न-बाधाओं को पूर्णता से समाप्त करने के लिए, उनको स्थायी रूप से अपने जीवन से अलग रखने के लिए साधकों ने युगों-युगों से मंगलमूर्ति भगवान श्री गणपति की आराधना-साधना सम्पन्न कर जीवन को निश्चिंतता दी है। उनकी विघ्न-विनाशक शक्ति के कारण उन्हें अपने घर और पूजन में सर्वोच्च स्थान दिया है। यही नहीं वरन घर के मुख्य द्वार पर भगवान श्री गणपति की स्थापना करना भी इस बात की ओर संकेत करता है कि जहां उनकी स्थापना है, उनका चिन्तन और उनके प्रति श्रद्धा है, वहां किसी आपदा का प्रवेश हो ही नहीं सकता।

भगवान श्री गणपति की शक्तियों का स्थापन दो रूपों में सम्भव है– गणपति यंत्र के माध्यम से अथवा विजय गणपति मूर्ति के स्थापन से।

विजय गणपति मूर्ति स्थापित करने का अर्थ है सम्पूर्ण गणपति परिवार अर्थात् उनकी पत्नियों ऋद्धि व सिद्धि तथा पुत्र शुभ एवं लाभ की स्थापना।

साधक इसी कार्य को और अधिक व्यवस्थित व सुचारू रूप से करता है। श्रद्धा और भक्ति तो उसके जीवन का अंग होती ही है साथ ही वह देवता विशेष की शक्तियों का स्थापन भी उनके चैतन्य विग्रह के रूप में करता ही है।

भावना के रूप में देवता की कोई भी प्रतिमा स्थापित की जा सकती हैं, उसके प्रति अपनी मनोभावनाएं व्यक्त की जा सकती हैं लेकिन जहां सचमुच लाभ प्राप्त करने की बात है, वहां स्थापित विग्रह को चैतन्य करना आवश्यक होता है और यदि चैतन्यीकरण की क्रिया न सम्पन्न करें तब चैतन्य व प्राण-प्रतिष्ठित विग्रह स्थापित करना आवश्यक होता है। किसी भी मंदिर में मूर्ति-स्थापना के पश्चात् इसी कारणवश प्राण-प्रतिष्ठा एक आवश्यक क्रिया होती है।

भगवान गणपति अपने सहस्र स्वरूपों के साथ, अनन्त शक्तियों के साथ इस जग में उपस्थित हैं ही किन्तु जब एक स्वरूप की ही स्थापना की बात आए तब बिना संदेह उनके विजय गणपति स्वरूप का स्मरण हो ही जाता है।

विजय गणपति का अर्थ ही है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्रदाता हों। आज जीवन के किस क्षेत्र में संघर्ष नहीं रह गया है? जीवन का कौन-सा क्षेत्र ऐसा है जो निरापद हो और जहां बिना विजय प्राप्त किए साधक सुगमता से जीवन जी सके? फिर ऐसे ही वातावरण में आवश्यक हो जाता है कि साधक अपने घर में गणपति की स्थापना करे, साथ ही उन्हें इस रूप में स्थापित करे जो उनका विजय प्रदाता स्वरूप हो।

इसके लिए शास्त्रों में एक अत्यन्त सरल विधान स्पष्ट किया गया है कि यदि श्रेष्ठ धातु से भगवान गणपति का स्वरूप निर्मित कर उसको केवल विजय काल में ही प्राण-प्रतिष्ठा प्रदान की जाए तो **वह विजय गणपति स्वरूप होता है।** ऐसे गणपति विग्रह की घर में स्थापना साधक को सम्पूर्ण गणपति साधना का फल प्रदान करने में सहायक होता है। भगवान श्री गणपति तो अपने भक्तों के लिए विघ्नहर्ता और दुष्टों के लिए विघ्नकर्ता दोनों ही रूप में वन्दनीय हैं अतः उनका घर में स्थापन निश्चित रूप से फलदायक होता है, किन्तु यह स्थापन अर्थात् विजय गणपति स्वरूप का स्थापन साधक को केवल अपने घर में ही करना चाहिए। गृह स्थान से बाहर अपने व्यवसाय-स्थल, दुकान या फैक्ट्री में इस अति दुर्लभ विग्रह का स्थापन करना शास्त्र सम्मत नहीं माना गया है।

भगवान श्री गणपति के अनेक स्वरूपों में धातु-निर्मित होने के कारण

विजय गणपति का एक अलग ही स्थान है जिसको साधक अपने घर में स्थापति कर कई पीढ़ियों के लिए भगवान श्री गणपति की स्थापना कर देता है।

केवल भगवान श्री गणपति की स्थापना ही नहीं साथ ही ऋद्धि - सिद्धि, शुभ-लाभ की स्थापना भी इसी विग्रह के द्वारा सम्भव होती है क्योंकि जिस पकार जहां शिव का पूजन होता है वहां स्वतः ही सम्पूर्ण शिव परिवार का पूजन हो जाता है, ठीक उसी प्रकार जहां गणपति की स्थापना व पूजन होता है वहां उनकी दोनों पत्नियां ऋद्धि एवं सिद्धि तथा पुत्रद्वय शुभ एवं लाभ की स्थापना तो हो ही जाती है।

विजय गणपति के इस श्रेष्ठ धातु से निर्मित विग्रह पर अनेक प्रकार की साधनाएं भी सम्पन्न की जा सकती हैं। शत्रु वशीकरण, लक्ष्मी वशीकरण, पूर्ण पौरुष प्रयोग, आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग, राज्यबाधा निवारण प्रयोग, गृह कलह निवारण प्रयोग, जैसे कई उदाहरण हैं। प्रस्तुत लेख में स्थानाभाव के कारण इन सभी प्रयोगों का वर्णन करना सम्भव नहीं है किन्तु इस विशिष्ट विग्रह पर सम्पन्न किए जाने वाले राज्यबाधा निवारण प्रयोग को मैं संक्षेप में स्पष्ट कर रहा हूं।

दिनांक ०६/०६/६४ तो इसके लिए इस वर्ष का सबसे अधिक अनुकूल मुहूर्त है ही साथ ही किसी भी बुधवार को इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को चाहिए कि ऐसे दुर्लभ विग्रह को प्राप्त कर उसे अपने पूजा स्थान में पीले वस्त्र पर स्थापति कर उसका पूजन केसर, अक्षत, पीले पुष्प की पंखुड़ियों, दूर्वादल एवं मोदक से करें। ध्यान रखें कि गणपति पूजन में भूल कर भी तुलसी की पत्ती का प्रयोग न हो। घी का बड़ा दीपक लगाना गणपति साधना में अनिवार्य होता है। इस संक्षिप्त पूजन के पश्चात् हाथ जोड़कर भगवान श्री गणपति से सम्बन्धित स्तुति का पाठ करें —

श्री गणेश स्तुति

एक दन्तं महाकायं तप्तकांचनसन्निभम्।
लम्बोदरं विशालाक्षं वन्देऽहं गणनायकम्।।
मुंजकृष्णाजिनधरं नागयज्ञोपवीतिनम्।
बालेन्दुकलिकामौलिं वन्देऽहं गणनायकम्।।
चित्ररत्नविचित्रांगं चित्रमाला विभूषणम्।
कामरूपधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्।।
गजवक्त्रं सुरश्रेष्ठं चारूकर्णविभूषितम्।
पाशांकुशधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्।।

तदुपरान्त **विजय गणपति माला** द्वारा निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ गं विघ्न विनाशिन्यै गणेशाय नमः

यह एक प्रकार से मूल प्रयोग है जो विजय गणपति विग्रह पर किए जाने वाले किसी भी प्रयोग का प्रारम्भिक अंग होता है। इस मूल पूजन के पश्चात् वहीं बैठे-बैठे एक ताम्बे के हवन कुंड में अग्नि प्रज्ज्वलित कर १०८ दूर्वादलों द्वारा उपरोक्त मंत्र से आहुति दें। कैसी भी प्रबल राज्यबाधा हो यह उसके निवारण का सिद्ध तांत्रोक्त उपाय है। विजय गणपति साधना में इसी प्रकार मूल प्रयोग के पश्चात् अन्य लघु प्रयोगों को सम्पन्न कर विभिन्न समस्याओं का निराकरण प्राप्त किया जा सकता है। **भगवान श्री विजय गणपति से सम्बन्धित अन्य प्रयोगों को भी हम समय-समय पर प्रकाशित करते रहेंगे।**

उपहार

जी हां!

गौरवशाली
हिन्दी मासिक पत्रिका
''मत्र तंत्र यंत्र विज्ञान''
का वार्षिक सदस्य बनने पर

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/-
डाक खर्च सहित १६८/-

सिद्ध यंत्र

शब्द छोटा सा, पर ताम्र पत्र पर अंकित होने से प्रभाव अचूक. . और फिर इस क्षेत्र के विद्वान ''शास्त्री'' से सिद्ध. . .। किसी भी कार्य की पूर्ति के लिए सहायक, मन के अनुकूल कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा चक्र की तरह सहायक

यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ- साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . . जिनका ठोस आधार है – ज्ञात-अज्ञात शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन- सम्पदा, सुख-शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे. . . ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र-मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं, और ये सब प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की मिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई. . .

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८.
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर (राज.), फोन-०२९१-३२२०६

दैनिक जीवन की एक आवश्यकता

सम्मोहन
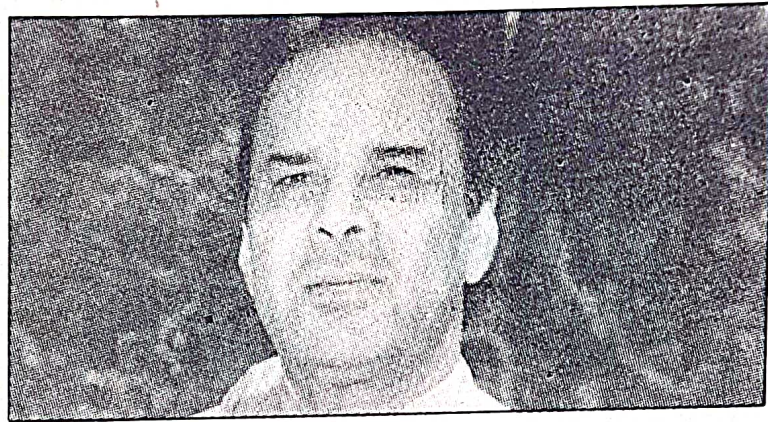
सम्मोहन विज्ञान केवल मनोवैज्ञानिकों अथवा चिकित्सकों के जीवन का, उनके कार्य क्षेत्र का एक अविभाज्य अंग ही नहीं वरन् सही अर्थों में तो प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग है।

एक प्राचीन विज्ञान आधुनिक सन्दर्भों में किस प्रकार सामान्य जीवन में पग-पग पर हमारा सहयोगी हो सकता है, इसी का सम्पूर्ण अध्ययन और विवरण प्रस्तुत करता एक व्यवहारिक लेख।

सम्मोहन का व्यवहारिक जीवन में अर्थ बहुत सीमित कर दिया गया है और इसे केवल किसी को अनुकूल बनाने की एक क्रिया मात्र मान लिया गया है, जबकि सम्मोहन अपने-आप में एक सम्पूर्ण पद्धति है, जिस प्रकार भारतीय ज्ञान-विज्ञान की अनेक पद्धतियां हैं। मंत्र विज्ञान, योग, ज्योतिष, तंत्र एवं इसी प्रकार सैकड़ों धाराओं के समान सम्मोहन भी एक विशिष्ट धारा है, जिसकी वर्तमान समय में उपयोगिता व सम्भावना निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

सम्मोहन विज्ञान केवल स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध तक सीमित कोई मामूली विज्ञान नहीं है वरन् इसके द्वारा तो जीवन में ऐसा परिवर्तन घटित किया जा सकता है कि व्यक्ति अपने-आप को सम्पूर्ण रूप से एक नए व्यक्तित्व में बदल सकता है। अपने-आप में अद्‌भुत ढंग से चैतन्यकारी परिवर्तन ला सकता है। सम्मोहन विज्ञान किसी दूसरे को प्रभावित करने से भी अधिक स्वयं को प्रभावित करने की गोपनीय कला है, और जब ऐसे परिवर्तन स्वयं के व्यक्तित्व में घटित हो जाते हैं तभी व्यक्ति सारे देश-समाज में छाकर प्रभावशाली बन सकता है।

सम्मोहन विज्ञान को इन्हीं संकीर्ण

धारणाओं से बाहर निकालकर एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाने के लिए **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** वर्षों से अथक परिश्रम कर रहे हैं और उन्होंने केवल सैद्धान्तिक ज्ञान के आधार पर ही नहीं वरन् व्यवहारिक रूप से इस क्षेत्र में प्रवेश कर इसकी असीम सम्भावनाओं को ज्ञात किया है। उन्होंने जहां एक ओर इसे इसके विगत अतीत से जोड़ा है, इसे गौरवान्वित किया है, वहीं आधुनिक सन्दर्भों में भी परिभाषित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। इसी कारणवश विश्व के अनेक जाने-माने सम्मोहन वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक समय-समय पर उनसे सम्पर्क व परामर्श कर अपने ज्ञान को सुधार की ओर अग्रसर करते रहते हैं। केवल यहीं तक ही नहीं वरन् अनेक प्रमुख राजनीतिक व्यक्तित्व तथा ऐसे क्षेत्रों से जुड़े हुए लोग जिनका जन सम्पर्क का ही कार्य होता है उनके परामर्श के अनुसार अपने व्यक्तित्व में उन परिवर्तनों को स्थान देते हैं, जिनके द्वारा वे सामान्य जनता के बीच में लोकप्रिय हो सकें। प्रमुख कलाकार, कुछ विशिष्ट खिलाड़ी, डॉक्टर, वैज्ञानिक और यह सूची बहुत लम्बी है।

विशिष्ट क्षेत्र के अतिरिक्त **डॉ० श्रीमाली जी** ने सम्मोहन विज्ञान के क्षेत्र में जो योगदान दिए हैं, उसके जिन पक्षों को प्रकट किया है, उसकी पाश्चात्य विद्वानों के मध्य भरपूर चर्चा हुई है और वे समझ सके हैं कि उनके द्वारा किन-किन सूत्रों को समझने में त्रुटियां रही हैं। उदाहरण स्वरूप पाश्चात्य विद्वानों को यह तो ज्ञात था कि सम्मोहन विज्ञान के सन्दर्भ में व्यक्ति के दो भिन्न व्यक्तित्व होते हैं। वह बाह्य रूप से जो कुछ करता है अथवा जैसा दिखता है, कोई आवश्यक नहीं कि वह आन्तरिक रूप में भी वैसा ही हो। अन्तर्मन और बाह्य मन के इसी असन्तुलन का परिणाम व्यक्तित्व की कमियां और मानसिक तनाव होते हैं और इन दोनों में तादात्म्य स्थापित करके ही सफल उपचार किया जा सकता है। कुशल सम्मोहनकर्ता केवल यही करता है कि वह व्यक्ति के बाह्य मन और अन्तर्मन को एक लय में कर देता है। किन्तु पाश्चात्य वैज्ञानिक इस बात को अथक प्रयास करके भी समझ नहीं पा रहे थे कि किस प्रकार से बाह्य मन और अन्तर्मन को एक किया जाए। डॉ० श्रीमाली जी ने क्रिया योग की गुह्य पद्धतियों के द्वारा इस बात को स्पष्ट किया कि किस व्यवहारिक तरीके से एक व्यक्ति के दोनों मन एक किए जा सकते हैं।
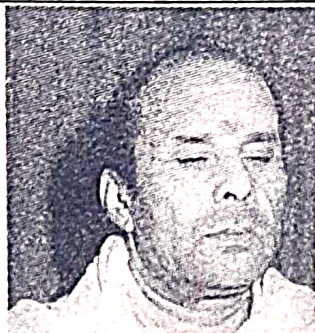
पाश्चात्य वैज्ञानिक इस बात को अथक प्रयास करके भी नहीं समझ पा रहे थे किस प्रकार से बाह्य मन और अन्तर्मन को एक करें।

डॉ० श्रीमाली जी ने इस गुत्थी को क्रियायोग की कुछ गुह्य पद्धति द्वारा पहली बार स्पष्ट किया है।

डॉ० श्रीमाली जी के अनेक शिष्य, जो उनसे वर्षों से परिचित रहे हैं वे उनके जीवन के इस पक्ष से भली-भांति परिचित हैं, कि वे एक कुशल सम्मोहनकर्त्ता भी हैं और उन्होंने स्वयं अनुभव किया है कि किस प्रकार से उन्होंने समय-समय पर अपने इस ज्ञान का प्रयोग अपने शिष्यों के जीवन में कर उन्हें अनुकूलता प्रदान की है। **डॉ० श्रीमाली जी** ने अपने प्रयासों से सम्मोहन विज्ञान में अनेक नये पक्ष तो जोड़े ही हैं, उसके ज्ञान पक्ष को पुनर्जाग्रत तो किया ही है, साथ ही दैनिक जीवन में भी इसके उपयोग और सम्भावनाओं को इस प्रकार से स्पष्ट किया है कि उनके द्वारा अकेले ही एक संस्था का कार्य किया गया है तथा विभिन्न समस्याओं से पीड़ित लोगों को ऐसी सान्त्वना व उपचार दिया है जो अन्य किसी ढंग से सम्भव हो ही नहीं पा रही थी।

आज व्यक्ति का दैनिक जीवन जिस प्रकार से निरन्तर जटिल होता जा रहा है उसके बाद सम्मोहन का महत्व स्वयं बढ़ गया है। युग व परम्परायें, खाने-पीने की आदतें बदली हैं, उसके बाद व्यक्ति निरन्तर असन्तुलित ही होता जा रहा है और इस असन्तुलन का उपचार उसे अपने व्यक्तिगत चिकित्सक या मानसिक चिकित्सा के द्वारा मिल सके, यह आवश्यक नहीं है। कभी वह अपने डॉक्टरों के पास जाने को विवश होता है और कभी मनोवैज्ञानिकों के पास। **उनके पास भी पूर्ण उपचार इस कारणवश नहीं होता क्योंकि रोगी उनके समक्ष अपने शरीर की बात ही कहता है, जबकि रोग का मूल कारण तो मन में छुपा होता है।** आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में तो मन का अस्तित्व ही नहीं स्वीकार किया जाता, अतः उससे यह आशा करना व्यर्थ है कि वह मन तक पहुंच कर उपचार प्रदान करेगा, इसके विपरीत सम्मोहन विज्ञान मन को ही अपना कार्य क्षेत्र बनाता है, शरीर की स्थिति उसकी दृष्टि में द्वितीय स्थान पर है।

भारतीय जीवन पद्धति के साथ सम्मोहन विज्ञान की उपयोगिता और भी अधिक सिद्ध हो रही है क्योंकि हमारे देश की परम्परायें नए आचार-विचार से पूर्णरूप से तादात्म्य नहीं बिठा पा रही हैं। भारतीय समाज ने एक खुलापन तो स्वीकार कर लिया किन्तु पूर्णरूप से नहीं। इसके फलस्वरूप व्यवहारिक और मानसिक अनेक प्रकार की विसंगतियों ने जन्म लिया।

ऐसे ही एक अर्ध-आधुनिक परिवार की घटना है जिनकी युवा पुत्री कुसंगति के कारण अथवा अपनी ही इच्छा के कारण परिवार की मान्यताओं को नकार कर ऐसे मार्ग पर चल पड़ी थी जिसका अंत सुखद नहीं था।

ग्वालियर के एक प्रतिष्ठित परिवार की लड़की जो दिल्ली पढ़ने आई थी, पहले नशीली दवाओं की अभ्यस्त बनी और उसी मार्ग पर चलते-चलते कब देह व्यापार में फंस गई इसका उसे भी पता नहीं चला। जब तक परिवार को पता लगा तब तक शायद काफी देर हो चुकी थी और एक प्रकार से स्थिति उनके प्रयासों के बाहर हो चुकी थी। सभी ओर से प्रयास करने के बाद उन्होंने अपने किसी परिचित के माध्यम से डॉ० श्रीमाली जी से सम्पर्क किया और अपनी दुखद स्थिति बताई। स्थिति इस प्रकार नियन्त्रण से बाहर हो चुकी थी कि वह लड़की परिवार के कहे अनुसार कहीं भी जाने को तैयार नहीं थी, और तब एकमात्र उपाय शेष रह जाता था कि फोटो के माध्यम से भावना प्रदान कर सम्मोहित किया जाए, जिससे वह अपने आचरण में परिवर्तन ला सके।

सम्मोहन विज्ञान के क्षेत्र में फोटो द्वारा सम्मोहन डॉ० श्रीमाली जी की ही विशिष्ट देन है क्योंकि उन्होंने अपने साधनात्मक जीवन में जब एक बड़ा भाग तिब्बत में व्यतीत किया तब अनुभव किया कि तिब्बत के लामाओं की बोध संवहन विधि को भी आधुनिक सम्मोहन विज्ञान से जोड़ना चाहिए। डॉ० श्रीमाली जी ने इस विषय में स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार संसार में दो व्यक्तियों का फिंगर प्रिंट एक नहीं होता उसी प्रकार दो व्यक्तियों का शरीर विन्यास भी सर्वथा एक नहीं होता है। अतः जब फोटो के माध्यम से कोई कुशल सम्मोहनकर्ता एक फोटो के द्वारा प्रतिविम्ब को अपने मानस में बैठा कर विचार तरंगें प्रवाहित करता है, तो वे ईथर के माध्यम से सर्वत्र फैल जाती हैं और केवल सम्बन्धित व्यक्ति से स्पर्श कर उसके विचार को प्रभावित करती हैं।

डॉ० श्रीमाली जी ने इसी विधि का उपयोग कर उस लड़की को उचित निर्देश दिए और धीरे-धीरे स्थिति नियंत्रण में आ गयी। यहां पर एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि सम्मोहन विज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा है, और व्यापक होने के साथ-साथ गहन भी है। यह केवल यांत्रिक प्रक्रिया मात्र नहीं है वरन् इसमें ध्यान योग व क्रिया योग का महत्वपूर्ण योगदान है। जब तक व्यक्ति में ध्यान योग एवं क्रिया योग की पुष्टता नहीं होती तब तक वह कुशल सम्मोहनकर्ता नहीं बन सकता।

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सामान्य व्यक्ति ध्यान योग एवं क्रिया योग में पूर्णता प्राप्त करने के बाद ही इसमें प्रवेश प्राप्त कर सकता है। इसे डॉ० श्रीमाली जी द्वारा दिए गए, एक उदाहरण से इस प्रकार समझा जा सकता है कि जिस प्रकार एक पायलट को हवाई जहाज चलाने के लिए कई वर्ष व्यतीत कर ज्ञान और अनुभव प्राप्त करना पड़ता है, तव वह हवाई जहाज चलाने में समर्थ होता है, लेकिन उसमें बैठने वाले यात्री को बस एक टिकट खरीदना होता है। उसके लिए आवश्यक नहीं कि वह एविंयेशन की सारी जानकारी प्राप्त करे ही। इसी प्रकार सम्मोहन का लाभ तो कोई भी प्राप्त कर सकता है।

अपने तिब्बत प्रवास के दौरान पूज्य गुरुदेव ने अनुभव किया कि तिब्बत की लामाओं की बोध संवहन विधि को आधुनिक सम्मोहन विज्ञान से जोड़ना ही चाहिए।

फोटो द्वारा सम्मोहन उनके इसी चिन्तन का सुखद परिणाम है।

सम्मोहन विज्ञान का क्षेत्र केवल उपचारात्मक ही नहीं है। कोई आवश्यक नहीं कि व्यक्ति किसी कष्ट से पीड़ित होने की दशा में ही सम्मोहन विज्ञान का प्रयोग करे, अपितु उसे चाहिए कि वह इसको अपने दैनिक जीवन का एक अंग ही बनाए। सम्मोहन सही शब्दों में व्यवस्थित जीवन की एक शैली है, जीवन जीने का एक ढंग है। सम्मोहन क्रिया को सीखने की अपेक्षा यह अधिक आवश्यक है कि व्यक्ति इसको इसी रूप में ग्रहण करे, क्योंकि अधिकांश समस्याओं का मूल केवल यही होता है कि व्यक्ति में कोई आकर्षण क्षमता नहीं होती है, जिसके फलस्वरूप न तो कोई उसकी आज्ञा मानता है और न कोई उससे प्रभावित होता है। पति-पत्नी के सम्बन्धों, तनावों की बात हो अथवा संतान बात न मानती हो या कार्यालय में अधिकारी रुष्ट रहता हो- इन सभी के पीछे यदि देखा जाए तो व्यक्तित्व का अनाकर्षक होना ही मुख्य स्थान रखता है।

यदि ध्यान से देखें तो हमारे आस-पास इसी प्रकार के लोगों की भीड़ दिखाई पड़ती है, जो बुझे हुए थके-थके जीवन की यात्रा को बस जैसे-तैसे पूरा कर रहे हैं, न तो उनके मन में कोई उत्साह है, न उन्हें जीवन का कोई लक्ष्य पता है . . . और जीवन का यह पक्ष कोई भी विज्ञान नहीं बता सकता क्योंकि यह मन की

स्थिति होती है। जब तक मन में एक चैतन्यता नहीं आती तब तक व्यक्ति इसी प्रकार निस्तेज आंखें लिए, झुकी हुई रीढ़ की हड्डी लिए बस जीता ही रहता है। उसे ज्ञात ही नहीं होता कि किस प्रकार से संसार का आनन्द लिया जा सकता है, **किस प्रकार से केवल एक मुस्कराहट के द्वारा अपने विरोधी को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।** आंखों में ऐसी चमक लाई जा सकती है कि घर-परिवार ही नहीं वरन् घर के, बाहर के लोग भी उससे बात करने में, उसके साथ बैठने में उत्सुक हों।

व्यक्ति का सामान्य जीवन ही जब इस प्रकार से निस्तेज होता है तो वह आगे बढ़कर ध्यान, धारणा और समाधि को भी नहीं समझ पाता है। क्योंकि ध्यान, धारणा और समाधि की स्थितियां केवल पूर्ण व्यक्ति के लिए ही बनी हैं। आधे-अधूरे व्यक्ति न तो जीवन में सफल होते हैं, न अध्यात्म में। इसके विपरीत होता यह है कि वे असमय बूढ़े होते हुए कई रोगों के चंगुल में फंस जाते हैं, कई कुण्ठाओं के शिकार हो जाते हैं और एक प्रकार से अपने-आप में उलझकर समाप्त हो जाते हैं।

सम्मोहन विज्ञान के माध्यम से व्यक्ति के जीवन की इन दोनों स्थितियों को अपने नियन्त्रण में लिया जा सकता है अर्थात् जहां एक ओर उसके शरीर में एक सम्मोहनकारी प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है, वहीं उसे विभिन्न कुण्ठाओं से भी मुक्ति दिलाई जा सकती है। डॉ० श्रीमाली जी ने इस क्षेत्र में शोधकर यह ज्ञात किया कि यदि एक विशेष विधि से कोई पूर्ण पारंगत व्यक्ति अपने शरीर को कंपित कर उन कंपनों का आघात नेत्रों के माध्यम से दूसरे व्यक्ति के शरीर पर कर देता है, तो उस व्यक्ति के शरीर के अणु-अणु भी इस प्रकार से चैतन्य और क्रियाशील हो जाते हैं, जिनका सम्मिलित स्वरूप ही सम्मोहनकारी व्यक्तित्व कहलाता है। केवल यहीं तक नहीं, इस क्रिया के माध्यम से असुन्दरता एवं शरीर की बेडौलता आदि को भी समाप्त किया जा सकता है। डॉ० श्रीमाली जी ने इसे **सम्मोहन दीक्षा** का नाम दिया है और अब तक हजारों व्यक्ति उनके इस ज्ञान का लाभ उठा चुके हैं। जिनमें बच्चे हैं, कम आयु की स्त्रियां भी हैं, अधिक आयु की स्त्रियां भी हैं। कम आयु के पुरुष भी हैं और
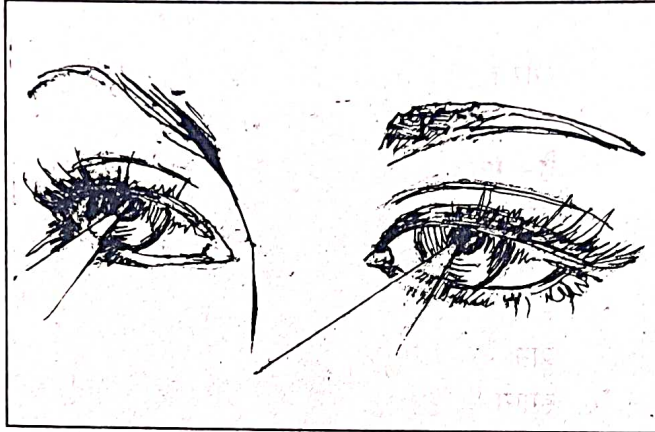
मध्य आयु पार कर चुके पुरुष भी हैं। यद्यपि तंत्र के क्षेत्र में भी इसी प्रकार की एक विशेष विद्या है जिसे हिडिम्बा तंत्र कहा गया है, किन्तु डॉ० श्रीमाली जी द्वारा प्राप्त की गई यह पद्धति अधिक अनुकूल है क्योंकि इसमें शरीर को कोई आघात नहीं सहन करना होता।

चार-पांच वर्ष पूर्व की बात है कि बम्बई की एक महिला जो एक प्रख्यात उद्योगपति की पत्नी है डॉ० श्रीमाली जी के सम्पर्क में आई। आयु के साथ ही साथ उनका सौन्दर्य ढल जाने के कारण तथा मानसिक तनाव से शरीर बेडौल होने के कारण उनके पति ने उनका एक प्रकार से त्याग कर दिया था और उन्हें भय था कि कहीं वे उससे तलाक न ले लें। डॉ० श्रीमाली जी ने उन्हें इसी सम्मोहन दीक्षा से उपचार प्रदान किया और लगभग छः महीने बीतते-बीतते उन्होंने पुनः अपना वजन तो नियंत्रित किया ही उनके सारे शरीर और चेहरे पर एक अनोखी सी चमक भी उतर आई।

ऐसे लोगों की सूची बहुत बड़ी है जिन्होंने पूज्य गुरुदेव से सम्मोहन दीक्षा के द्वारा लाभ प्राप्त किया। **लखनऊ का एक दंत-चिकित्सा का छात्र, कलकत्ता का एक प्रमुख युवा उद्योगपति जो अपने कुरूप चेहरे के कारण खिन्न रहते थे या हिमाचल प्रदेश के एक साधक जो पत्नी के व्यवहार से तंग आकर आत्महत्या करने की सोच रहे थे अथवा जबलपुर की एक साधिका जिसने प्रेम में धोखा मिलने के बाद नींद की गोली खाकर आत्महत्या करनी चाही थी या हैदराबाद का एक युवा खिलाड़ी जो अपनी प्रदर्शन क्षमता में पर्याप्त वृद्धि न होने के कारण खेल जगत से संन्यास लेने की सोच रहा था– इन सभी ने केवल मात्र सम्मोहन दीक्षा के द्वारा ही अपने जीवन को संवारा है और नये उत्साह के साथ ही साथ पुनः जीवन के साथ जुड़े हैं।**

डॉ० श्रीमाली जी ने इस रूप में वास्तव में विश्व को एक नई उपलब्धि दी है। सम्मोहन विज्ञान को तो पूर्णता दी ही है। उनके पास बैठने से ही ऐसा अनुभव होता है जैसे हम अपने शास्त्रों में वर्णित किसी ऋषि के पास ही बैठे हैं। उनकी आंखों से बहता करुणा का अजस्र प्रवाह व्यक्ति को इस प्रकार भिगो देता है कि व्यक्ति की अधिकांश समस्याएं तो उसी क्षण से समाप्त होने लग जाती हैं। डॉ० श्रीमाली जी ने अपने स्वयं के व्यक्तित्व से यह स्पष्ट किया कि सम्मोहन विज्ञान जीवन का एक पूर्ण विज्ञान है और वे अपने एक-एक क्रियाकलाप से इसी को प्रदर्शित करते से लगते हैं। सचमुच उनके पास बैठकर ऐसा लगता है कि सम्मोहन चिकित्सा की कोई औपचारिक पद्धति नहीं वरन् उससे भी कहीं आगे बढ़कर निश्छल हृदय का एक प्रवाह होता है, और यदि सम्मोहन विज्ञान इस विश्व को भारत की एक अनुपम भेंट है तो डॉ० श्रीमाली जी की उपस्थिति भी किसी अनुपम भेंट से कम नहीं है।

मंत्र प्रामाणिक कैसे हों?

मंत्र में शक्ति किस रूप में होती है? मंत्र-शक्ति का आधार क्या है? मंत्र और मन का क्या सम्बन्ध है? साधक के मन में इन प्रश्नों पर विचार-विमर्श चलता ही रहता है। यह विषय गूढ़ तो है ही आवश्यक भी है क्योंकि इन प्रश्नों का समाधान प्राप्त किए बिना न तो मंत्र जप मे सफलता मिल सकती है न साधना में प्रामाणिकता आ सकती है।

मंत्र विशेष ध्वनियों का समूह है और इस पूरे शब्द समूह में चार क्रियाओं का समोवश किया जाता है। **ये चार क्रियाएं है– मनन, विज्ञान, अध्ययन और भाव।** जब इन चारों का सही रूप में मिलन होता है एवं उससे जिस ध्वनि शक्ति का जागरण है वही मंत्र-शक्ति है। यही मंत्र की प्रामाणिकता होती है। जब मंत्र का आधार हमारा मुख न होकर मन होता है तभी एक सही प्रक्रिया का जन्म होता है मन में जब शब्द स्वरूप की उत्पत्ति होकर मस्तिष्क में ज्ञान को सचेत करती है तभी उसमें वैज्ञानिकता अर्थात् क्रमबद्धता आ पाती है

अभी कुछ वर्षों पहले अमेरिका में न्यूजर्सी राज्य में एक डेयरी फार्म में दो गायों के समूह को अलग-अलग रखा गया एक समूह को नित्य प्रति तेज ध्वनि पर हाई स्पीड म्यूजिक सुनाया गया और दूसरे समूह को मधुर धीमा संगीत सुनाया गया। दस दिनों तक यह प्रयोग करने के बाद पाया गया कि जिन गायों को तेज संगीत सुनाया जाता था उनकी दूध देने की क्षमता करीब-करीब एक चौथाई कम हो गयी और जिन्हें मधुर संगीत सुनाया जाता था उस बाड़े की गायों के दूध में औसतन १० से २५ प्रतिशत तक की वृद्धि हो गयी।

यही प्रभाव है ध्वनि में निहित शक्ति का और इसी मूल शक्ति का संयोजन ही तो मंत्र है जिनमें प्रामाणिकता होनी आवश्यक ही होती है . . .

जिसे साधक अपने अध्ययन से संयुक्त करता है। अर्थात् वह अपने जिस इष्ट का स्मरण करते हुए मंत्र जप में संलग्न होता है उसकी छवि को अपने मानस में स्पष्ट करते हुए भाव पक्ष से प्रबलता प्रदान करता है। यह सम्पूर्ण पद्धति वैज्ञानिक होते हुए भी यंत्रवत नहीं कही जा सकती। मंत्र-जप अने मूल से लेकर फल प्रदान करने तक सम्पूर्ण रूप से एक लयबद्ध प्रक्रिया ही है। **मंत्र जप कुछ अक्षरो का समूह नहीं है जिसे हड़बड़ी में दोहरा भर दिया जाए** वरन् प्रारम्भ मे स्पष्ट किए गए चारों पक्षों को स्वीकृत करते एक लय के द्वारा एक शक्ति उत्पन्न करने की क्रिया है। मंत्र जप में जितना महत्व शब्द का है उतना ही मस्तिष्क का, उतना ही भावनाओं का एवं उतना ही स्वर का।

ध्वनि की लयबद्धता में कितनी शक्ति होती है इसका सामान्य सा उदाहरण परेड करते हुए सैनिकों के द्वारा प्राप्त होता है। यद्यपि प्रकट रूप से इस शक्ति को देखा नहीं जा सकता। एक प्रयोग में वैज्ञानिकों ने इस तथ्य को प्राप्त किया कि यदि १२० सैनिक एक साथ परेड करते हुए अर्थात् लयबद्ध ढंग से पैरों का आघात करते हुए किसी ५० फीट ऊंचे पुल से गुजरे तो उसके टूटने की संभावना ७० प्रतिशत से भी अधिक बढ़ जाती है। यह शक्ति २४० किलोडायनामाइट के समकक्ष मानी थी। इसी कारणवश पुल पर से गुजरते समय सैनिकों को लयबद्ध तोड़ने का आदेश दिया जाता है। इसका प्रमुख उदाहरण रेल से लिया जा सकता है जो इसी

प्रकार पुल पर से गुजरते समय अपनी रफ्तार को कई बार बदल कर ध्वनि आघात की सम्भावनाओं को समाप्त करती है।

अतः यह महत्वपूर्ण है कि जो साधक मांत्रोक्त साधना में सफलता प्राप्त करने के इच्छुक है वे किस प्रकार से 'लय' को उत्पन्न करे। यदि साधक अपने सम्पूर्ण शरीर से इस लय को उत्पन्न कर लेता है तो कोई कारण नहीं कि उसे साधना में सफलता हस्तगत न हो। साधना किसी भी प्रकार की हो अर्थात् मांत्रोक्त हो अथवा तांत्रोक्त उसमें शरीर का मुख्य स्थान होता ही है। मांत्रोक्त साधनाओं में भी शरीर को मंत्र ध्वनि उत्पन्न करते समय सम्पूर्ण अस्तित्व से सक्रिय होना पड़ता ही है। जो साधक वास्तव में मंत्र का उपयोग करना चाहते है उन्हें आवश्यक हो जाता है कि वे अपने मन से उस ध्वनि अर्थात् शब्द समूह का पूर्णरूप से मनन करते हुए सहस्रार तक प्रवाहित कर उच्चतम चेतना से अनुप्राणित कर मुख द्वारा उच्चारित करें और तब मंत्र का प्रभाव सटीक व अचूक होता ही है। तब वास्तव में मुंह से निकला एक-एक शब्द गोली की भांति जाकर आघात करने वाला होता ही है।

मंत्र जप में ध्वनि को मुंह से उच्चारित करने के पूर्व उसे सम्पूर्ण रूप से शरीर में गुंजरित करना होता है **यही मंत्र जप का रहस्य एवं उसकी प्रामाणिकता है।** जब हमारा मंत्र जप केवल कथा या भाषा की तरह पढ़ कर इस रूप से घूर्णित कराया जाता है तो उसका प्रभाव शरीर स्थित सूक्ष्म ग्रन्थियों, सातों चक्रों एवं शक्ति केन्द्रों पर पड़ता है तथा ये शक्तियाँ क्रियाशीलता में बदल जाए, यही तो मंत्र जप का लक्ष्य होता है तब इन केन्द्रों से बल लेकर क्रियाशील हुई ध्वनि साकार अथवा निराकार रूप में उत्पन्न होकर मनोवांछित सफलता व सिद्धि प्रदान करने वाली होती है।

अलग-अलग ढंग से शक्ति जागरण के लिए अथवा जीवन में अलग-अगल क्षेत्रों की सफलता प्राप्त करने के लिए मंत्र भी अलग-अलग प्रकार के होते है। ऐसे विशिष्ट मंत्रों की स्वर लहरी विशेष ग्रंथि पर एवं विशेष शक्ति केन्द्र पर प्रभाव डालती है तथा यहीं क्रिया सही रूप से सम्पन्न होने पर साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने जीवन में असाधारण बन जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए भौतिक सफलता तो बहुत साधारण बात होती है, वह अध्यात्म में सफलता एवं सिद्धियों को प्राप्त करने की दिशा में भी सक्रिय हो ही जाता है। **विश्वामित्र संहिता** में वर्णित है—

बर्हिमुखस्य मंत्रस्य वृत्तयो या प्रकीर्तितः
त एदान्तर्मुखस्यास्य शक्तियः परिकीर्तितः

विचार अर्थात् मंत्र बाहर्मुखी होने पर वृत्ति बन जाते है तथा वे ही विचार मंत्र रूप में अर्न्तमुखी होने पर साधक की शक्तियां बन जाते है। मंत्र को केवल चेतना शक्ति अथवा साधक द्वारा उत्पन्न शक्ति मात्र मानना ही सत्य नहीं है वरन् इसके साथ ही साथ देवता का अथवा अपने इष्ट का बल भी संयुक्त होता ही है। यही भाव रखना और ऐसी ही आस्था रखना मंत्र जप का आवश्यक अंग "भाव" है। देवता अन्तस्थ भी होते हैं और बाह्य भी। व्यक्ति मंत्र जप से जितना शुद्ध होता जाता है अन्तस्थ देवता उसी परिणाम में स्पष्ट होते जाते है। मंत्र जप तो आंतरिक क्रिया होने के कारण जहां एक ओर शरीर को चैतन्य करती है, वहीं आन्तरिक शुद्धि के साथ वह पात्रता भी प्रदान करती है, जिससे हृदय शुद्ध, निर्मल, पवित्र व चैतन्य हो सके। मंत्र के प्रति विश्वास उसे देवता का ही स्वरूप माना अति आवश्यक होता है तथा इसके अभाव में कोई भी मंत्र साधना सफल हो ही नहीं सकती। **शारदा तिलक** में वर्णित है—

देवस्य मंत्र रूपस्य समाप्तिम् जानताम्।
कृताचनादिक सर्व व्यर्थ भवति शम्भावि।।

अर्थात् मंत्र ही देवता का सच्चा स्वरूप है और जो मंत्र के सच्चे स्वरूप को बिना ज्ञान के अर्थात् उसे सामान्य भाव से पढ़ता है तो उसकी अर्चना निष्फल हो जाती है।

मंत्र जप के माध्यम से ही साधक के मानस में अथवा ध्यानवास्थित होने पर दृश्य बिम्ब के रूप में नेत्रों के समक्ष देवता का प्रामाणिक स्वरूप स्पष्ट होता है और वही स्वरूप वास्तविक होता है। मंत्र जप के पूर्व की जानी वाली कल्पना प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती जबकि मंत्र जप की ध्वनि के संघात एवं समाहितीकरण से अणुओं के संयोजन द्वारा जो स्वरूप परिलक्षित होता है वहीं देवता अथवा इष्ट का यथार्थ रूप होता है। इस प्रकार से मंत्र जप ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हमें प्रामाणिकता प्राप्त होती है।

जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य के विचार अलग-अलग होते है उसके कार्य करने का तरीका अलग-अलग होता है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के लिये भिन्न प्रकार का मंत्र उपयोगी होता है। किस साधक को किस मंत्र की साधना में लाभ मिलेगा उसे इस का ज्ञान केवल अपने सद्गुरु के द्वारा ही हो सकता है। साधक को चाहिए कि वह सामान्य गुरु दीक्षा प्राप्त कर उस दीक्षा की प्रार्थना करे जो उसके गुरुदेव की दृष्टि में उसके लिये उपयुक्त हो, ऐसी विशिष्ट दीक्षा को प्राप्त कर एवं विधा विशेष की दीक्षा को प्राप्त करते हुए सम्बन्धित मंत्र प्राप्त किया जा सकता है। उसका अर्थ, उसकी उपासना विधि, उसका रहस्य एवं उच्चारण का प्रामाणिक ढंग प्राप्त किया जा सकता है तथा उसे गुरु कृपा से आत्मसात किया जा सकता है।

इन चरणों को पूर्ण करने के बाद जब साधक एकाग्र भाव से मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न करता है तो उसके अन्दर एक प्रामाणिकता होती है तथा निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती ही है।

❁

तंत्र-शास्त्र का विस्तार अत्यन्त विशाल है, जीवन का प्रत्येक कार्य तंत्र से जुड़ा है, और किस कार्य के सम्बन्ध में किस प्रकार की साधना की जाए, इसका उत्तर भी हमारा प्राचीन तंत्र-शास्त्र देता है। शास्त्रों में दी गई साधनाओं को हमारे प्राचीन ऋषियों ने, तंत्र विशेषज्ञों ने स्वयं साधना कर, अनुभव करके ही शास्त्रों में दिया है, जब तक कोई बात पूर्णतया सिद्ध नहीं हो जाती, तब तक उसका ज्ञान शिष्यों को नहीं दिया जाता था, और न ही उसे लेखनबद्ध किया जाता था।

तंत्र साधना के दो प्रमुख भेद हैं, प्रथम तो वे साधनाएं हैं, जो कि अपना फल तत्काल देती हैं, और दूसरी वे साधनाएं हैं, जो कि विशिष्ट होते हुए पूरे जीवन के लिए उपयोगी होती हैं, उनका प्रभाव स्थायी होता है, और इस प्रकार की साधनाओं को पूर्ण करने के लिए साधक को निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता रहती है।

कार्त्तवीर्यार्जुन साधना

तंत्र साधना केवल तांत्रिकों के लिए ही सीमित नहीं है, अपितु अधिकतर साधनाएं तो गृहस्थ लोगों के लिए हैं जिन्हें अपने गृहस्थ जीवन में पग-पग पर बाधाएं उठानी पड़ती हैं, रोज जीवन में एक-एक कदम सोच कर आगे बढ़ाना पड़ता है, उसके जीवन में नित्य ही नई घटनाएं होती हैं, कभी प्रसन्नता आती है, तो कभी दुःख, बाधाएं, बीमारी, पारिवारिक अशान्ति, शत्रुभय, व्यापार, हानि आदि, साधु तथा संन्यासी को इन सभी स्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता है, उनके लिए तो वर्ष का प्रत्येक दिन एक जैसा है, जब कि गृहस्थ के जीवन में तो नित्य नवीनता है।

इसीलिए प्रत्येक गृहस्थ को अपने जीवन में कुछ साधनाएं नियमित रूप से अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे कि उसके जीवन में उपद्रव नहीं रहें, उसके कार्य सरलता से पूरे होते रहें।

कार्त्तवीर्यार्जुन साधना भी एक ऐसी ही विशेष साधना है, जिसे प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, और इसके मंत्र का जप निरन्तर करते रहना चाहिए, जिससे कि उसे बाधाओं से पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सके, उसके जीवन में किसी प्रकार के भय का कोई स्थान न रहे।

विशिष्ट साधना

यह साधना मूल रूप से मेरु तंत्र की साधना है, और इस तंत्र का ज्ञान गोपनीय ही रहा है, इसका ज्ञान प्रत्येक गुरु ने अपने शिष्यों को कराया और शिष्य ने आगे अपने शिष्यों को यह ज्ञान दिया। इसे लिपि-बद्ध करने का प्रयास ही नहीं किया गया, जिसके कारण इस विशिष्ट साधना के सम्बन्ध में बहुत कम ज्ञान है। इसके सम्बन्ध में कहा गया है, कि यह आदि शंकराचार्य से भी पूर्व आचार्यों, ऋषियों द्वारा प्राप्त किया हुआ विशेष मंत्र-तंत्र ज्ञान है, जो कि भूमण्डल पर विशेष प्रभावकारक है।

यह सुदर्शन चक्र का अवतार है, और इसकी उत्पत्ति के लिए जहां भगवती काली ने अपना रौद्र स्वरूप प्रदान किया, तो लक्ष्मी ने धन-धान्य, प्रतिष्ठा, सम्मान और शान्ति प्रदान की, सरस्वती ने जहां सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान की, तो ब्रह्मा ने ब्रह्माण्ड भेदन का ज्ञान दिया, पृथ्वी ने बिन्दु साधना दी, तो पवन ने वायु वेग से उड़ने की क्षमता दी, तारा ने आकस्मिक धन प्रदान

की शक्ति दी, तो समस्त देवताओं ने शरीर से शक्ति प्रवाहित कर जिस तेजस्वी स्वरूप का निर्माण किया, उसे कार्त्तवीर्यार्जुन कहा गया।

इसीलिए उपनिषदों और तान्त्रिक ग्रंथों में बताया गया है, कि कार्त्तवीर्यार्जुन साधना के द्वारा कई-कई साधनाएं स्वतः सम्पन्न हो जाती हैं, और मनुष्य के जीवन में शीघ्र ही अनुकूलता प्राप्त होने लगती है।

कार्त्तवीर्यार्जुन मूल रूप से रक्षाकारक, विपत्तिनाशक, विजयप्रदायक देव हैं, जिनके सम्बन्ध में मेरु तंत्र में लिखा है, कि—

उद्यत्सूर्यसहस्रकान्तिरखिलक्षौणीधवैर्वन्दितो,
हस्तानां शतपंचकेन च दधच्चापानिषूस्तावता।
कण्ठे हाटकमालयापरिवृतश्चक्रावतारो हरेः
पायात्स्यंदनगोरुणाभवसनः श्री कार्त्तवीर्योनृपः।।

अर्थात् कार्त्तवीर्यार्जुन देव उदयमान सूर्य जैसी आभा वाले, सब प्रकार के राजाओं, ज्ञानियों द्वारा पूजे जाने वाले, अपने पांच-पांच सौ हाथों में धनुष-बाण धारण करने वाले, सुदर्शन चक्र के अवतार हैं। कार्त्तवीर्यार्जुन रक्षा, अभय एवं विजय प्रदान करने में समर्थ हैं, इन्हें बार-बार नमन करना चाहिए।

एक साधना–अनेक सिद्धियां

शास्त्रों में लिखा है, कि यह साधना एक ऐसी साधना है, जिसको सिद्ध करने से कई सिद्धियां अपने-आप सिद्ध हो जाती हैं, इस विषय में ग्रंथों में दिया गया विवरण साधकों के लिए स्पष्ट करना आवश्यक है।

दुःखनाशं दुष्टनाशं दुरिताभयनाशकी।
दिक्ष्वष्टशक्तयः पूज्याः प्राच्यादिषु सितप्रभाः।।

यह विशिष्ट प्रयोग सभी प्रकार के दुःखों का नाश करने वाला, शत्रुओं को समाप्त करने वाला तथा विरोधियों के भय को नाश करने वाला है, सभी दिशाओं में स्थित शक्तियों की साधना **कार्त्तवीर्यार्जुन साधना** ही है।

क्षेमकरी वश्यकरी श्रीकरी च यशस्करी।
आयुष्करी तथा प्रज्ञाकरी विद्याकरी पुनः।।

आठ दिशाओं में श्वेत आभा वाली आठ शक्तियां क्षेमकरी, वश्यकरी, श्रीकरी, यशस्करी, आयुष्करी, प्रज्ञाकरी, विद्याकरी और धनकरी, जो कि यश, आयु, विद्या, धन, श्री आदि प्रदान करने वाली हैं, ये सभी कार्त्तवीर्यार्जुन में ही स्थित हैं।

।।कण्ठे निबद्धमेतत्तु भृशं रक्षति बालकान्।।

यदि बालक के गले में यह यंत्र बांध दिया जाए, तो सभी प्रकार से उसकी रक्षा होती है।

।।मंत्रस्यास्य जपादेव नष्टं द्रव्यं च लभ्यते।।

इस प्रयोग के द्वारा निश्चय ही गया धन पुनः प्राप्त हो जाता ही है।

।।यंत्रमस्य प्रवक्ष्यामि सर्वकार्याऽव सिद्धये।।

इस प्रयोग के द्वारा संसार के समस्त प्रकार के कार्य सिद्ध हो सकते हैं।

।।निशीथेऽष्टोत्तरशतं नष्टद्रव्यादिसिद्धये।।

रात्रि को यह प्रयोग करें, तो जमीन में गड़ा हुआ धन दिखाई दे जाता है।

।।तस्माद्दीपो गतं पुत्र शीघ्रं प्राप्स्यते ध्रुवम्।।

इसके माध्यम से गया हुआ पुत्र वापिस लौट आता है।

।।चौरमदविभंजनो मारी मदविभंजन।।

चोर का पता लगाने और उसके घमण्ड को समाप्त करने में सहायक है।

ये सब उद्धरण यह स्पष्ट करते हैं, कि कार्त्तवीर्यार्जुन प्रयोग एक विशेष सिद्धिदायक प्रयोग है, जो कि शत्रुनाश करने में उतना ही अधिक प्रभावशाली है जितना कि गड़े धन को प्राप्त करने के सम्बन्ध में उपयोगी, और उतना ही घर से भागे हुए किसी भी बालक को देखने के सम्बन्ध में और उसे पुनः वापिस बुलाने के सम्बन्ध में प्रभावशाली है।

ये विशिष्ट प्रयोग मूलतः दीप प्रयोग है, जो कि अलग-अलग कार्यों में अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न किए जाते हैं, अलग-अलग प्रकार से साधना करने से इसका लाभ भी अलग-अलग प्रकार का है, आपको अपनी आवश्यकतानुसार, सुविधानुसार पूर्ण श्रद्धा से जो भी प्रयोग आवश्यक हो, उसे सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विवरण

किसी भी शुक्रवार के दिन, रात्रि को स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएं, साधक या साधिका सफेद वस्त्र धारण कर लें, और चारों तरफ दीपक लगा लें, दीपकों के मध्य अपना आसन लगा लें, और सामने **कार्त्तवीर्यार्जुन यंत्र** को स्थापित कर दें।

यह यंत्र मेरु तंत्र के अनुसार पंचाम्नाय एवं दशाम्नाय तरीके से सिद्ध किया हुआ हो, क्योंकि इस पूरे प्रयोग में यह यंत्र ही महत्वपूर्ण है।

इस यंत्र को सामने पात्र में स्थापित कर कार्त्तवीर्यार्जुन का ध्यान करें।

ध्यान

नमः श्रीकार्त्तवीर्याय कीर्तितोयं शिखामनु
हैयाधिपतिर्डन्तः कवचस्य मनुर्मतः
सहस्रबाहवे तु स्यादेवं पंचागमीरितम्

उदग्रबाणांश्चापानि दधतं सूर्यसन्निभम्
प्रपूरयन्तं वसुधां धनुर्ज्यानिः स्वनैस्तथा
कार्त्तवीर्यनृपं ध्यायेद्दण्डशोभितकुण्डलम् ।।

बीज मंत्र

।।प्रों क्लीं ॐ ऐं ईं स्व भूं ह्रीं त्रिं फट्।।

उपरोक्त मंत्र अपने-आप में मंत्र राज कहलाता है, इसका प्रयोग केवल **कार्त्तवीर्यार्जुन माला** से ही किया जा सकता है। मंत्र-जप समाप्त होने पर यंत्र को वहीं रहने दें, और जब तीन दिन की साधना पूरी हो जाए तो वह यंत्र अपने गले में धारण कर लें, बांह पर बांध लें, या पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

पाठकों की सुविधा हेतु तथा सरलतम रूप में साधना हेतु विशिष्ट साधना के कुछ प्रयोग नीचे दिए जा रहे हैं, जिन्हें साधक अपने कार्य की आवश्यकता के अनुसार सम्पन्न कर सकते हैं।

शत्रु बाधा–शान्ति प्रयोग

यदि शत्रुओं का प्रकोप अत्यन्त बढ़ रहा हो, और जिसके कारण निरन्तर मानसिक अशान्ति हो रही हो, तो रात्रि के प्रथम प्रहर के पश्चात् अपने सामने यंत्र रख कर ग्यारह सौ दीपक, तेल भर कर लगाने चाहिए, और इक्यावन माला मंत्र-जप उसी स्थान पर बैठ कर करना चाहिए, तीन दिन यह प्रयोग करने से कार्य के सम्बन्ध में निश्चय ही अनुकूलता प्राप्त होती है, और शत्रुओं का प्रकोप, भय दूर हो जाता है, तथा शत्रुओं का नाश प्रारम्भ हो जाता है, इस प्रयोग को प्रारम्भ करने से पहले दांये हाथ में जल ले कर संकल्प अवश्य करना चाहिए और जिस शत्रु को पराजित करना हो, उसका नाम लिख कर यंत्र के नीचे रख देना चाहिए।

रोग मुक्ति एवं भूत-प्रेत शान्ति के लिए

यदि किसी रोगी के रोग नाश हेतु दूसरा व्यक्ति उसके नाम का संकल्प कर, उसके निमित्त यह प्रयोग सम्पन्न करे, तो रोगी पूर्णरूप से रोग मुक्त हो जाता है। इस प्रयोग में चार सौ दीपक लगा कर तीन दिन तक प्रतिदिन २१ माला मंत्र-जप करना चाहिए, यदि किसी प्रकार का भूत-प्रेत प्रकोप है, तो वह भी इसी प्रयोग से दूर हो जाता है, तान्त्रिक प्रभाव को दूर करने में भी यह प्रयोग विशेष सहायक है।

रुके हुए धन को प्राप्त करना

व्यापार में अथवा सामान्य रूप से भी धन उधार देना पड़ता है, और कई बार यह धन उचित समय पर प्राप्त नहीं होता है, इस सम्बन्ध में यदि धन-प्राप्ति की आशा कम हो, अथवा देने वाला आनाकानी कर रहा हो, तो यह प्रयोग करें। अपने सामने आठ सौ दीपक जला कर कार्त्तवीर्यार्जुन मंत्र की २१ माला का प्रतिदिन जप करना चाहिए, तीन दिन तक जप करने से ही उसकी बुद्धि अनुकूल होने लगती है, और वह स्वयं ही आ कर धन लौटाने की इच्छा प्रगट करता है, और इस प्रकार उधारी में फंसा हुआ धन प्राप्त हो जाता है। यही प्रयोग यदि धन की चोरी हो गई हो और चोर का कोई पता नहीं लग रहा हो तो सम्पन्न करने से उचित फल प्राप्त होता है।

घर से भागे हुए बालक को बुलाने हेतु

इस प्रयोग में सहस्र अर्थात् एक हजार दीपक आवश्यक हैं, और बालक का नाम तथा चित्र, यंत्र के नीचे रखना चाहिए, और संकल्प कर तीन दिन तक प्रतिदिन २१ माला मंत्र-जप करना चाहिए, इससे भागे हुए बालक अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त हो जाती है या वह अपने-आप घर आ जाता है।

इस प्रकार जो विशेष दीपक विधान दिए हैं, उसमें किसी भी प्रकार के दीपक अर्थात् मिट्टी अथवा धातु के दीपक प्रयोग में लाये जा सकते हैं, उसमें किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है, जप काल में दीपक निरन्तर अवश्य जलते रहने चाहिए, दीपकों को बुझने से रोकने के लिए साधक किसी अन्य व्यक्ति का सहयोग भी ले सकता है, जिससे कि दीपकों में जरूरत पड़ने पर तेल डाला जा सके।

ये प्रयोग अत्यन्त सिद्ध तान्त्रिक प्रयोग है, और साधकों को अपनी आवश्यकतानुसार अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

चित चकमक लागे नहीं

वाराणसी में गंगातट का स्थान और सीढ़ियों पर प्रातः के झुटपुटे में लेटा हुआ एक विद्रोही युवक, मन में एक ही हठ कि मुझे गुरु का स्पर्श प्राप्त करना है और चाहे जैसे भी हो मुझे प्राप्त करना ही है। जात-पांत, ऊंच-नीच, वर्ण सभी बन्धनों से सर्वथा निर्मुक्त होकर वह स्पर्श प्राप्त कर ही लेना है, गुरु-चरणों की वह ठोकर ग्रहण कर ही लेनी है, जिसको विशिष्ट स्पर्श 'दीक्षा' कहा गया है। जिसकी प्राप्ति के बिना जीवन की कोई सार्थकता ही नहीं, जो यथार्थ में सभी क्रियाओं का मूल रहस्य है और मानव जीवन की पूर्णता है।

काशी का उत्तारकालीन वर्जनाओं से जकड़ा दम्भी समाज, पग - पग पर बाधाएं खड़ा करता हुआ मर्मान्तक वचनों के आघात से मनोबल तोड़ने का प्रयास करता हुआ और सामाजिक दवावों के आगे गुरु का भी विवश हो जाना . . .

नियत समय पर प्रतिदिन की ही भांति गुरु पधारे और पैरों की ठोकर लगने पर अभ्यास वश करुणा में भीगकर बोल उठे . . . **वच्चा! राम राम कह।** और इतने से ही उस युवक ने दीक्षा ग्रहण ही नहीं करी, दीक्षा एक प्रकार से छीन ली। इतने से ही अपने अन्तर्मन को आलोकित कर लिया। चार शब्दों से ही अपने को एक प्रकाश पुञ्ज में बदल दिया।

. . . आनन्द से उसका मन नाच उठा और वह गाकर सारे विश्व में कह आया — **राम नाम का मरम है जाना,** सही अर्थों में उसी ने तो 'राम' शब्द का अर्थ समझा, उसी ने तो राम का 'मरम' जाना। वह राम जो 'दशरथ-सुत' नहीं थे वरन् वह राम जो सभी के थे। जिनकी पूर्णता घट-घट में रमने से हो रही थी और ऐसा स्वर समाज के ठेकेदारों को क्यों सुहाने लगा। जो राम केवल उसकी ही सम्पदा थे वे सभी के क्यों हों? लेकिन विद्रोह के स्वर थमे नहीं और जब तक उसको बलात् कुचल कर समाप्त नहीं कर दिया गया तब तक वह अकेला व्यक्तित्व अपने दमखम पर ही समाज की कुरीतियों से लड़ता रहा, और **एक अनपढ़ व तथाकथित पिछड़े समाज के दबे वर्ग का व्यक्ति जो कुछ कर गया वही तो आने वाले वर्षों में भारतीय चेतना का मूल स्वर बना, गुरुत्व को पुनः स्थापित करने की सार्थक भूमिका निभा गया और भक्ति के दलदल में डूब रहे समाज को एक नई राह बता गया,** जिसकी एक-एक पंक्ति को लेकर विद्वान एक- एक ग्रंथ में वर्णन करके भी तृप्त नहीं हो पाते। वही तो सही अर्थों में गुरुत्व की चेतना को ग्रहण करने वाला व्यक्तित्व था— **''कबीर''।**

जबकि हमारे-आपके पास चैतन्य गुरु हैं, हमारे समक्ष जीवित- जाग्रत परम्परा है, शास्त्रों का वह लुप्त ज्ञान प्रस्तुत है जो मृत मान लिया गया है, और इससे भी बड़ी बात यह है कि खींच कर अपने हृदय से लगा कर बहुत देने का आग्रह है। हमें कहीं किसी घाट की सीढ़ियों पर लेट कर दबे-छुपे और एक प्रकार से आवरण डालकर चेतना ग्रहण करने की आवश्यकता भी नहीं है, फिर भी क्यों नहीं जीवन को आलोकित करने के लिए पांव आगे बढ़ते? क्यों नहीं चेतना की ऐसी धधक आती कि आगे बढ़कर अपने ही जीवन को संवार लें? किसी और के लिए करना तो बहुत दूर की बात है। क्यों तर्कों कुतर्कों का धुंआ इतना घना हो गया है? क्यों मन में हलचल नहीं रह गई है? क्यों मन में ललक नहीं फूट रही है? क्यों एक ढर्रे पर जीते हुए ही जीना सुरक्षा मान लिया है? ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर भी वही व्यक्तित्व देकर गया था।

पावक रूपी राम है, घट - घट रहा समाई
चित चकमक लागे नहीं, ताथे धुंआ है जाई

एक बार अपने को भी टटोल लेना चाहिए कि कहीं कमी हमारे अन्दर ही तो नहीं रह गई, कहीं ऐसा तो नहीं रह गया कि जिस चित पर रगड़ लग कर अग्नि उत्पन्न होती वह अविश्वास, अश्रद्धा, तर्क से गीली रह गई हो और गुरु का संस्पर्श और उसकी रगड़ व्यर्थ चली गई हो। वह तो पहले भी घट-घट में रम रहा था, आज भी रम रहा है और अभी अवसर है कि उसके साथ हम खुद भी रम सकें। अभी भी वे क्षण हैं कि कृपा का स्पर्श प्राप्त कर लिया जाए उसके संस्पर्श से अग्नि प्रज्ज्वलित कर ली जाए। जीवन के पथ को आलोकित कर लिया जाए और उसके प्रकाश में आगे के मार्ग को देख लिया जाए। **गुरु और कुछ नहीं करते बस अपने सम्पर्क में आने पर चित को रगड़ ही तो देते हैं, प्रकाश देते हैं और उसे प्रकाश में आगे का मार्ग दिखा देते हैं।** यह क्रिया कोई अन्य नहीं कर सकता, यह क्रिया प्रवचन और उपदेश भी नहीं कर सकते, यह क्रिया स्वयं की साधना भी नहीं कर सकती क्योंकि किस प्रकार से किसके चित को कैसे रगड़ देनी है, कैसे उसे आलोकित करना है और कैसे उसे उसके जीवन का पाथेय उसकी ही आंखों के सामने स्पष्ट कर देना है यह केवल सद्गुरु ही जानते हैं। क्योंकि सद्गुरु ही तो जानते हैं कि यह पथिक जो आज उनका शिष्य है, वह किस पथ से चलता हुआ आ रहा है, उसका लक्ष्य किस पथ से जाकर पूर्ण होगा। यही दीक्षा का रहस्य है, यही सद्गुरु- कृपा का अर्थ है और

यही सारे जीवन का मर्म भी है। जीवन की अन्य सहायक क्रियाएं तो चलती ही रहती हैं और चलती ही रहेंगी।

इस ऊहापोह, उलझन और घुटन के वातावरण में एक महीन सा सूत्र है, इस दुविधा की समाप्ति का बस एक ही तन्तु है, एक ही रज्जु है और एक ही सहारा है और वह है प्रेम का। ऐसे निश्छल प्रेम का जिससे मन में विश्वास की राह स्वतः फूटती है, जिसमें नेह की बातें और भी प्रबल हो जाती हैं, तब यह मार्ग कठिन नहीं लगता, तब अस्पष्ट जैसा कुछ नहीं रह जाता और न तब मन में कोई भ्रम शेष रह जाता है। नहीं तो मुंहजबानी कितना ही कुछ क्यों न कह दिया जाए कोई शंका शेष रह ही जाती है, धुंधलके का अंश भर ही सही लेकिन यदि रह जाता है, तो राह नहीं सूझ पाती और आस प्रबल नहीं हो पाती।

एक बार, बस एक बार अपने अन्दर अपने को ही टटोल कर अपने ही विश्वास की उंगली पकड़ने की बात है। यदि अपने विश्वास की उंगली पकड़ ली, तो गुरु की उंगली पकड़ ही ली। इतने से ही बहुत कुछ घट जाता है, अंधेरे में जहां कुछ न सुझाई पड़ रहा हो वहां छोटा सा स्पर्श बहुत सार्थक बन जाता है और बहुत कुछ घट जाता है। ऐसे ही तो लग जाती है चित में चकमक। उजाला और प्रकाश ऐसे ही तो होता है और यही सब घट जाना तो नई प्रातः है।

जब प्रातः होगी तो स्वतः ही पाथेय अपनी ओर खींच कर बुला ही लेगा। प्रातः के प्रकाश में कुनमुनी सुनहरी ऊष्मा, रश्मियों की स्वर्णिम आभा में किसका मन नहीं हिलोर कर उठेगा कि वह गुरु पथ पर न चल ले और जो गुरुपथ है वही तो जीवन का भी पथ है, वही चैतन्यता का पथ है, वही आह्लाद का पथ है, वही पूर्णता का
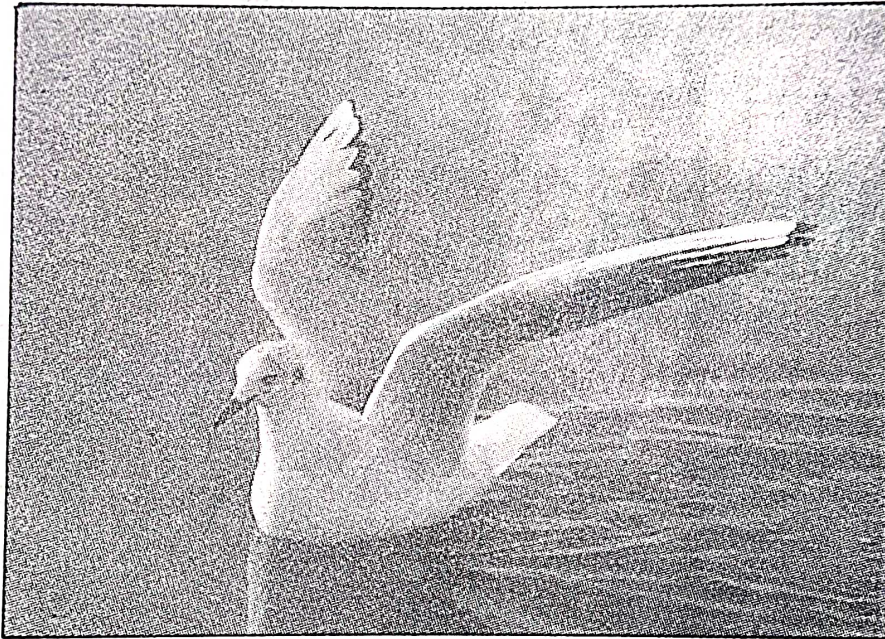
भी पथ है और यहां एक बात यह भी स्पष्ट हो जानी चाहिए कि वही विद्रोह का भी पथ है। सामान्य और सरल पथ नहीं है यह। **कुछ तो चुनौतियां लेनी ही होंगी, कुछ तो छोड़ना ही होगा, कुछ तो नया करने की बात सोचनी ही होगी और कुछ तो जूझने के हौसले संजोने ही होंगे, नहीं तो जीवन जहां खड़ा है वहीं खड़ा रह जायेगा।** आयु के वर्ष बीतने के साथ-साथ जीवन नहीं बढ़ता। हृदय कितना विकसित हुआ है, आत्मीयता कितनी प्रगाढ़ हुई है, क्या दृष्टि सुदूर क्षितिज के सौन्दर्य को निहार रही है या आसमान में उड़ते पक्षी की तरह केवल जमीन की गन्दगियों को ही देख रही है - इन दो चेतनाओं में बहुत अन्तर होता है। पलकों पर सौन्दर्य आकर समाया है कि नहीं, विश्व को एक नई दृष्टि से निहारा है कि नहीं— यही तो हैं वे बातें, जो साधक को एक आम मनुष्य से अलग करती हैं। **साधना से दृष्टि ही तो बदलती है, जीवन को निहारने की कला ही तो आती है अन्यथा साधक के और एक सामान्य मनुष्य के शरीर में तो कोई अन्तर नहीं होता।** दोनों के दो हाथ और दो पैर होते हैं। दोनों के ही दो-दो आंखें, दो कान और एक नाक होती है लेकिन एक व्यक्ति 'व्यक्तित्व' बन जाता है और एक व्यक्ति जीवन के वर्ष व्यतीत करके चला जाता है। जिस प्रकार से वह अपने जीवन के पहले दिन एक मूढ़ता और अज्ञान पर खड़ा होता है, उसी प्रकार चिता पर जाने वाले दिन भी मूढ़ और अज्ञानी ही रहता है क्योंकि उसने कभी कोयल के गीतों को नहीं सुना होता है, कभी सतरंगी इन्द्रधनुष को देखकर नाचना नहीं सीखा होता है, कभी बच्चों की किलकारी में भीगा नहीं होता है और जीवन की सारी चैतन्यताएं उसके समक्ष भोंडी और व्यर्थ बनकर ही तो रह जाती हैं।

कहत सुनत सब दिन गये,
उरझि न सुरझा मन।
कहें कबीर चेते नहीं,
अजहुं पहिला दिन।।

विशेष
तंत्र रक्षा
कवच
जब जीवन में विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते
यदि
किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग
करवा दिया जाए तो. . .
विशेष तंत्र रक्षा कवच
संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास
(न्यौछावर - ११०००/- मात्र)
जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।
※ कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
※ शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
※ पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
※ विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
※ घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
※ ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
※ निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता जाना
※ वार - वार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो
या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों
रोजमर्रा
की समस्याओं
का
विश्वसनीय
निवारण
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोनः ०११-७१८२२४८,फेक्स-०११-७१८६७००
मंत्र शक्ति केन्द्र,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.),फोन-०२९१-३२२०६
या फिर झगड़े झंझटों में वार- वार फंस जाना, मुकदमें बाजी, जैसी बातों
के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं।
तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . .
उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है,
उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है
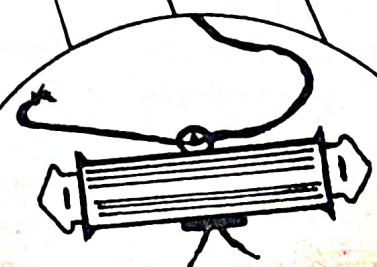
रत्नमय शिवलिंग जिनकी चैतन्यता तो स्वयं सिद्ध है

श्रावण का तो पूरा माह ही चैतन्य और सिद्धि प्रदायक है। साधक इस माह में जो भी साधना करे उसमें निश्चित फल-प्राप्ति होती ही है। किन्तु जो साधक किसी कारणवश पूरे माह साधना में संलग्न न हो पाए उन्हें तो प्रयास करके भी श्रावण पूर्णिमा का लाभ लेना ही चाहिए।

आषाढ़ एवं श्रावण- ये दो माह साधना की दृष्टि से सर्वाधिक अनुकूल माने गये हैं, जब गुरुत्व की गम्भीरता एवं शिवत्व के औदार्य से पूरी धरा-स्निग्ध और सरस रहती ही है। केवल साधनात्मक दृष्टि से ही नहीं वरन् वातावरण की दृष्टि से भी देखा जाए तो मानो प्रकृति पग-पग पर मनुष्य की सहयोगी व सहचरी बनकर खड़ी रहती है। वर्षा ऋतु का यह काल प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल व सुखद तो होता ही है, साथ ही वातावरण में इस प्रकार की तरंगें व्याप्त होती हैं जिससे साधक का मन साधना एवं उपासना में अधिक सघनता से लगने लगता है।

एक प्रकार से देखा जाए तो वर्ष के यही दो माह तो सम्पूर्ण धरा का पोषण करने वाले होते हैं। क्योंकि वर्षा से जिस रसमयता और पोषण को पृथ्वी प्राप्त करती है, उसी से तो वह आगे चलकर सभी जीव-जन्तुओं का पोषण करने में समर्थ हो पाती है, और ठीक इसी प्रकार जब इन दो विशेष माह में साधक अनुकूल साधनाएं सम्पन्न करता है, विशेष पद्धति से साधनारत होता है, तभी वह पूरे वर्ष भर के लिए उचित आधार और साधनात्मक पोषण का सही मार्ग प्राप्त करता है। भगवान शिव की जिन कृपा-रश्मियों की इन महीनों में प्रचुरता होती है उनको अपने जीवन में उतार कर सभी दृष्टियों से सुख-सौभाग्य, सम्पन्नता और आध्यात्मिक चैतन्यता प्राप्त करता है।
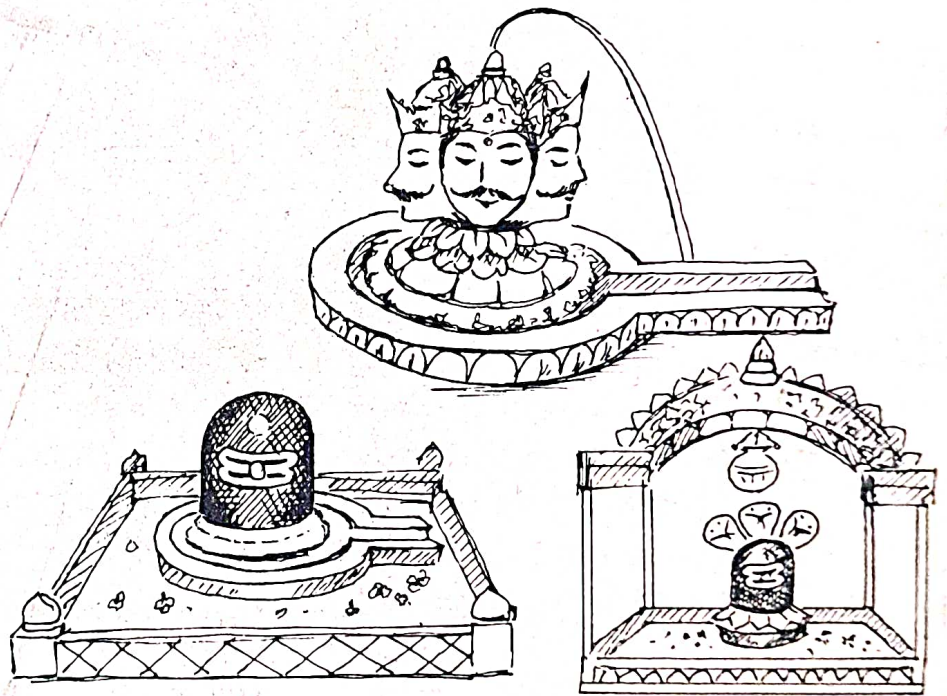
अनेक साधना पद्धतियों और अनेक देवी-देवताओं के बीच भगवान शिव का स्थान एक ऐसा अनूठा स्थान है जो प्रत्येक साधक और साधिका के जीवन में उपयोगी रहता ही है। ऐसे अद्भुत देव तो कोई दूसरे हैं ही नहीं, केवल जिनकी साधना मात्र से ही विभिन्न प्रकार के मनोरथ पूर्ण हो जाएं।

शत्रु संकट के समाधान की बात हो या जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य युक्त होने की, रोग से मुक्ति पाने का प्रश्न हो या आकस्मिक रूप से मुकदमेबाजी में फंस जाने पर उससे छुटकारे की, जीवन की ऐसी अनेक प्रकार की समस्याओं के लिए व्यक्ति दीन भाव से सदा-सदा से भगवान शिव की शरण में जाता रहा है। केवल गृहस्थ ही नहीं सर्वथा वीतराग भाव से रहने वाले, श्मशान की भस्म को शरीर में लपेटे साधकों और प्रखर योगियों के आराध्य देव भी भगवान शिव ही रहे हैं। इसका कारण है कि जहां वे विविध भौतिक पक्षों में सहायक देव हैं, जीवन की विविध सम्पदाओं के अधिष्ठाता देव हैं, वहीं वे पूर्ण निर्लिप्त होते हुए अपने साधक और भक्त को भी समस्त राग, द्वेष, जरा, मृत्यु, शोक, पीड़ा से रहित करते हुए उस भावभूमि तक ले जाने में सक्षम हैं जिसे अखंड समाधि की स्थिति कहा है, और जिस स्थिति में पहुंच कर साधक ब्रह्मानन्द में लीन हो जाता है।

किन्तु इतने विराट देव भगवान शिव को बांधा भी जाए तो कैसे? चित्र रख देने से ही भगवान शिव के स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। जबकि शिवलिंग भगवान शिव का प्रतीक व पूर्ण स्थापन है।

देवाधिदेव भगवान शिव अपनी जीवन-शैली से इस बात को पूर्णता से प्रदर्शित करते हैं कि किस प्रकार गृहस्थ के मध्य रहकर भी जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। किस प्रकार सम्पूर्ण गृहस्थ होते हुए भी, विषपान करते हुए भी, द्वन्दों से जूझते हुए भी उनसे अप्रभावित रहा जा सकता है, और शायद यही कारण है कि फिर उन्हें अवतार लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। **भगवान विष्णु के अनेक अवतार तो हम जानते हैं किन्तु भगवान शिव के अवतार की बात नहीं जानते। इसका कारण यही है कि वह प्रत्येक काल में, प्रत्येक युग में, प्रत्येक दशा में अपने सभी साधकों के मध्य, उनके आस-पास उपस्थित रहते ही हैं।** छोटे से छोटे ग्राम में भी शिवालय की स्थापना, समाज के सामान्य जन में भगवान शिव और मां पार्वती के सदैव सूक्ष्म रूप से विचरण करते रहने की कथा तथा विवाहित एवं अविवाहित स्त्रियों के द्वारा अपने जीवन को संवारने के लिए उनके अभिषेक की परम्परा जैसी अनेक बातें इस तथ्य की पुष्टि करती हैं। समाज का स्वरूप बदला और परम्पराएं बदलीं, किन्तु समाज की इन मान्यताओं में आज भी कोई परिवर्तन नहीं आया है और आधुनिक से आधुनिक महानगर में भी श्रावण माह में इन परम्पराओं का पालन करते हुए आधुनिक नर-नारियों को देखा जा सकता है। यही भगवान शिव की व्यापकता और विराटता का मुखर परिचय है।

भगवान शिव के विचित्र स्वरूप में प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित अर्थ और बोध है जिसको शास्त्रकारों ने, विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से व्यक्त किया और समाज के सामान्य वर्ग ने उसको अपने ढंग से समझा, फिर भी भगवान शिव जितने व्यक्त हो सके हैं उससे कहीं अधिक अव्यक्त ही रह गए हैं, और यही कारण है कि सर्वव्यापक और सर्वसुलभ होते हुए भी उनकी पूजा-पद्धति सर्वाधिक जटिल और दुष्कर कही गई है, **क्योंकि पूर्णत्व के प्रतीक और पूर्णत्व के प्रदाता भगवान शिव की पूजन पद्धति नितान्त सहज और हल्की हो भी नहीं सकती।** यों तो साधक अपनी मनोभावना के अनुसार उनकी जिस रूप में चाहे प्रार्थना-पूजा कर सकता है। यहां तक कि मिट्टी से अंगुष्ठ प्रमाण का पार्थिव शिवलिंग बनाकर भी भगवान शिव की उपासना की जाती है लेकिन जहां वास्तविक साधना एवं ठोस लाभ प्राप्त करने की बात आती है वहां यह कार्य सहज नहीं रह जाता।

भगवान शिव सर्वाधिक शीघ्रता से प्रसन्न होने वाले देव के रूप में, अपने आशुतोष स्वरूप में जगत विख्यात हैं, और जब साधक उनके विशिष्ट फलदायक स्वरूप का लाभ प्राप्त करने के लिए विशिष्ट विधान को सम्पूर्ण कर लेता है, तो निश्चय ही उसे अपने जीवन में जिस बात की भी कामना होती है, वह प्राप्त होती है। भगवान शिव की साधना में नियमों एवं मर्यादाओं का पालन दृढ़ता से करना पड़ता ही है क्योंकि जहां वह देवाधिदेव हैं वहीं सम्पूर्ण स्वरूप में जगद्गुरु भी हैं और ऐसे जगद्गुरु के समक्ष मर्यादाओं का पालन सदैव सर्वोच्च होता ही है।

मर्यादाओं का पालन करने से सीधा सा तात्पर्य है कि साधक को जिस कृपा विशेष की कामना हो उसकी प्राप्ति के लिए विशेष पद्धति का पालन करे, भगवान शिव के उस विशिष्ट स्वरूप का पूजन करे, जो उसकी इच्छा विशेष से सम्बन्धित हो।

किन्तु इतने विराट देव को किसी स्वरूप में बांधा भी जाए तो कैसे? केवल मूर्ति बना देने अथवा चित्र रख देने से ही भगवान शिव के स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया जा सकता क्योंकि चित्र या मूर्ति तो एक बिम्ब अथवा दृश्यमान स्वरूप मात्र होती है, जबकि यंत्र आदि से किसी भी देवता या देवी की यथार्थ उपस्थिति न केवल प्रदर्शित की जा सकती है अपितु अपने साधना कक्ष में स्थापित भी की जा सकती है। भगवान शिव की उपस्थिति का प्रमाण शिव यंत्र भी हो सकता है, लेकिन यंत्र से भी अधिक उनकी उपस्थिति और उनके स्थापन को सूचित करने के लिए शिवलिंग को ही प्रामाणिक माना गया है। शिवलिंग ही यथार्थ में उनकी व्यापकता का सूचक है अपने विविध स्वरूपों के साथ उनकी किसी एक विशेष शक्ति को प्रदर्शित करने वाला हो सकता है। शिवलिंग के सम्बन्ध में शास्त्रों में उल्लेख

मिलता है —

आकाशं लिंग मित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयः सर्वदेवानां लयनालिंगमुच्यते।।

अर्थात् जिसमें सभी देवता अपनी विशिष्ट शक्तियों के साथ आलिंगन कर स्थापित हैं वही शिव हैं, वही शिवलिंग है और जिसकी पीठिका यह पृथ्वी और विस्तार आकाश पर्यन्त है।

शिवलिंग की कल्पना विराट रूप में की गई है, सम्पूर्ण धरा को ही उनकी पीठिका बनाते हुए समस्त ब्रह्माण्ड को शिवलिंग रूप में परिकल्पित किया गया है। इसी कारणवश शिवलिंग के एक सौ आठ प्रकार भी शास्त्रों में वर्णित किये गए हैं। विभिन्न पदार्थों के द्वारा निर्मित शिवलिंग की विशेषताएं भी अलग-अलग बताई गई हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण शिवलिंगों का वर्णन पत्रिका के पूर्व अंकों में किया गया है। ताम्र, शीशा, शंख, कांसा, लोहा, रक्त चन्दन, स्वर्ण, चांदी, पीतल, स्फटिक, पुष्प, शर्करा, फल, भस्म एवं विविध वस्तुओं से साधक अपनी - अपनी भावनाओं के अनुसार शिवलिंग निर्माण करते हैं अथवा प्राकृतिक रूप में प्राप्त करते हैं।

प्राकृतिक रूप में प्राप्त होने वाले शिवलिंगों में रत्नमणि शिवलिंग सर्वोच्च कहे गये हैं, क्योंकि कभी - कभी ही ऐसा होता है कि कोई विशिष्ट रत्न शिवलिंग की शक्ल में प्राप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए **पन्ना रत्न** केवल रत्न के रूप में न मिलकर जब शिवलिंग के रूप में प्राप्त होता है तो वह रत्नमणि शिवलिंग के अन्तर्गत आता है और बहुत कम व्यक्ति ही इस प्रकार के शिवलिंग के दर्शन, उनका स्थापन करने में सक्षम हो पाते हैं क्योंकि रत्नों द्वारा निर्मित होने के कारण ये दुर्लभ एवं अप्राप्य ही होते हैं।

इस सन्दर्भ में शास्त्रों का स्पष्ट प्रमाण है कि जो साधक अपने जीवन में कभी भी किसी भी रत्नमणि शिवलिंग का पूजन कर लेता है अथवा श्रावण माह में उनका अपने घर में स्थापन कर लेता है, तो उसे एक विशेष प्रकार की कांति और चैतन्यता प्राप्त होने लग जाती है।

पत्रिका परिवार ने इस दिशा में प्रयास करके तीन विशिष्ट रत्नमणि शिवलिंगों की प्राप्ति की है। ये शिवलिंग हैं **माणिक्य शिवलिंग, नीलम शिवलिंग एवं पन्ना शिवलिंग**। अपने रत्न के गुण के अनुरूप ही इन शिवलिंगों की महत्ता भी स्वयं सिद्ध है और साधक अलग- अलग स्थिति में अलग-अलग प्रकार का शिवलिंग स्थापित कर न केवल इस श्रावण माह को ही सफल बना सकते हैं वरन् अपने पूजा स्थान में ऐसी दुर्लभ वस्तु स्थापित कर सकते हैं, जो कि वरदान तुल्य ही कही जा सकती है, और यह भी सत्य है कि जिसके घर में जिस रत्न से सम्बन्धित शिवलिंग स्थापित होता है उसके परिवार को उसके गुण प्राप्त होने लगते हैं तथा यह क्रम आगामी पीढ़ियों तक भी बना रहता है। **यदि व्यक्ति कोई रत्न धारण करता है तो वह केवल और केवल उसके लिए ही उपयोगी होता है, बाद में उसकी आर्थिक उपयोगिता तो हो सकती है लेकिन व्यवहारिक उपयोगिता नहीं हो सकती।** यदि कोई व्यक्ति अपनी उंगली में माणिक्य रत्न धारण करता है तो यह तो हो सकता है कि उसे बाद में बेचकर कुछ धन प्राप्त कर लिया जाय, किन्तु यह नहीं हो सकता कि कोई दूसरा व्यक्ति उस रत्न को धारण कर उससे सम्बन्धित लाभ प्राप्त कर सके। जबकि माणिक्य शिवलिंग ऐसी ही विशेषता से युक्त होते हैं और उनकी रश्मियां घर के सभी सदस्यों को स्पर्श कर, बिना किसी भेदभाव के सभी को सुखी, सम्पन्न व पुष्ट बनाती रहती हैं।

जीवन की अलग - अलग दशाओं के अनुसार, अलग - अलग शिवलिंग का महत्व है। **माणिक्य शिवलिंग** जहां तेजस्विता, निरोगता और राज्यबाधा से मुक्ति दिलाने में सहायक शिवलिंग है वहीं **नीलम शिवलिंग** समस्त प्रकार की गृह कलह का नाश कर घर में अशुभ वातावरण को समाप्त कर सर्वप्रकारेण अनुकूलता देने में समर्थ है और **पन्ना शिवलिंग** पूर्णरूप से बुद्धि, चातुर्य, व्यापार-वृद्धि देने के साथ - साथ पूर्ण पौरुष प्रदाता भी है। वास्तव में माणिक्य शिवलिंग सूर्य ग्रह से सम्बन्धित सभी लाभ देने में, नीलम शिवलिंग शनि ग्रह से सम्बन्धित समस्त लाभ देने में तथा पन्ना शिवलिंग बुध ग्रह से सम्बन्धित सभी लाभ देने में समर्थ शिवलिंग है।

यहां एक बात यह भी स्पष्ट कर लेनी नितान्त आवश्यक है कि इन शिवलिंगों को स्थापित करने में व्यक्ति को उस प्रकार निर्णय नहीं करना है जिस प्रकार रत्नों के निर्धारण में करना पड़ता है, क्योंकि रत्न तो व्यक्ति के शरीर से सम्पर्कित रहते हैं। जबकि ये शिवलिंग रत्न शिवलिंग स्वरूप में भगवान शिव की उपस्थिति के प्रतीक हैं अतः साधक बिना इस बात का विचार किए या मन में कोई शंका लाए कि नीलम रत्न उसके अनुकूल है अथवा नहीं, नीलम शिवलिंग अपने साधना कक्ष में स्थापित कर सकता है और पूर्ण गृह सुख प्राप्त करने के साथ - साथ कलह, ऋण, दरिद्रता, दीनता और अशुभ की समाप्ति कर सकता है।

इन शिवलिंगों को स्थापित करने में भी किसी विशेष विधि - विधान की आवश्यकता नहीं है। श्रावण माह के किसी भी सोमवार को अथवा श्रावण पूर्णिमा (२१.०८.९४) के दिन इनको अपने पूजा स्थान में स्थापित कर इनका सामान्य पंचोपचार पूजन कर पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। यदि साधक चाहे तो भविष्य में इन शिवलिंगों पर साधनाएं भी सम्पन्न कर सकते हैं किन्तु वे साधनाएं शिवलिंग के स्वरूप से सम्बन्धित ही होनी चाहिए। सामान्य शिव पूजन के रूप में इन शिवलिंगों का प्रयोग वर्जित है। इन शिवलिंगों की श्रावण माह में प्राप्ति होना पाठकों का सौभाग्य है।

स्वास्थ्य रेखा

मानव के जीवन में स्वास्थ्य का महत्त्व सबसे अधिक माना गया है। व्यक्ति के पास यश, मान, पद, प्रतिष्ठा तथा ऐश्वर्य हो, परन्तु यदि उसके पास स्वास्थ्य की कमी हो, तो उसका यह सारा वैभव एक प्रकार से व्यर्थ है। इसलिए शास्त्रों में स्वास्थ्य को सबसे उत्तम धन माना गया है।

उत्तम स्वास्थ्य का उसके पूरे जीवन और कार्य-कलापों पर प्रभाव पड़ता है। यदि स्वास्थ्य उत्तम होता है, तो वह सब कुछ कार्य कर सकता है, प्रत्येक कार्य में मानसिक और शारीरिक शक्ति लगा सकता है, परन्तु यदि स्वास्थ्य उसका साथ नहीं दे तो उसका जीवन एक प्रकार से व्यर्थ सा हो जाता है।

हथेली में स्वास्थ्य-रेखा का उद्‌गम किसी भी स्थान पर हो सकता है, परन्तु यह बात निश्चित है कि इसकी समाप्ति बुध पर्वत पर ही होती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि कोई एक रेखा प्रारम्भ होकर बुध पर्वत की ओर आने का प्रयत्न करती है, परन्तु बुध पर्वत तक नहीं पहुंच पाती। ऐसी स्थिति में वह रेखा स्वास्थ्य रेखा नहीं कहला सकती। स्वास्थ्य रेखा वह तभी कहला सकती है, जबकि वह बुध पर्वत को स्पर्श करे या बुध पर्वत पर पहुंचे। कुछ रेखाएं बुध पर्वत को मात्र स्पर्श करके ही रह जाती हैं। ऐसी रेखा को भी बुध रेखा या स्वास्थ्य रेखा मान लेना चाहिए।

यह रेखा हथेली के किसी भी भाग से प्रारम्भ हो सकती है। मुख्य रूप से इसका प्रारम्भ निम्न स्थानों से होता है:-

१. शुक्र पर्वत से,
२. जीवन रेखा के पास से,
३. हृदय रेखा से,
४. चन्द्र पर्वत से,
५. मणिबन्ध से,
६. भाग्य रेखा से और
७. मंगल पर्वत से।

जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूं कि स्वास्थ्य रेखा का प्रारम्भ कहीं से भी हो सकता है, परन्तु उस रेखा की समाप्ति बुध पर्वत पर ही होती है।

इस रेखा का भली-भांति अध्ययन करना चाहिए। हथेली में यह रेखा जितनी अधिक स्पष्ट, निर्दोष व गहरी
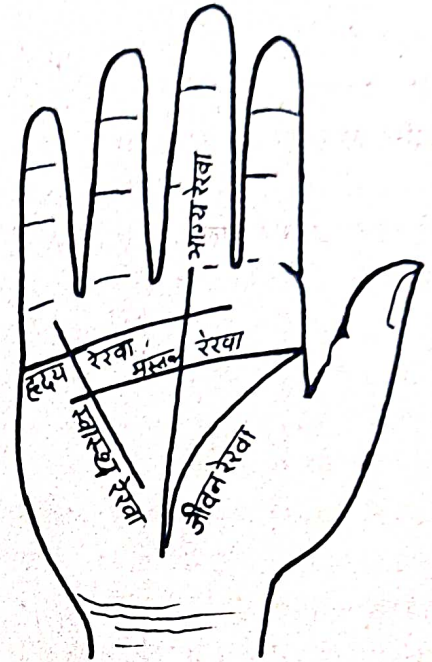
होती है, सम्बन्धित व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ एवं उन्नत होता है। उसका शरीर सुगठित और व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा टूटी हुई हो या कटी-फटी, छिन्न-भिन्न, लहरदार या जंजीर के समान हो, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अपने-आप में कमजोर होगा। जीवन में उसे किसी प्रकार का कोई आनन्द नहीं रह पाएगा। व्यक्ति की हथेली में स्वास्थ्य रेखा का स्पष्ट होना बहुत अधिक जरूरी है।

कुछ हथेलियों में स्वास्थ्य रेखा का अभाव भी देखने को मिलता है। इस सम्बन्ध में मेरा यह अनुभव है कि स्वास्थ्य रेखा का न होना भी अपने-आप में एक शुभ संकेत है। जिन व्यक्तियों के हाथों में स्वास्थ्य रेखा नहीं होती, वे स्वस्थ, आकर्षक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी भी प्रकार के रोग से दूर रहते हैं, तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर सब कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं।

जिस हथेली में यह रेखा चौड़ी होती है, उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है। यदि यह रेखा कड़ी के समान जुड़ी हुई हो, तो उसे जीवन भर पेट की बीमारी रहती है। यदि लहर के समान यह रेखा ऊपर की ओर बढ़ रही हो, तो उसे जिगर की बीमारी अवश्य ही होती है। इस रेखा का पीलापन इस बात को स्पष्ट करता है कि ऐसा व्यक्ति पीलिया या रक्त से सम्बन्धित बीमारी से पीड़ित रहेगा। स्वास्थ्य रेखा पर जितने अधिक बिन्दु होते हैं,

उसका स्वास्थ्य उतना ही ज्यादा खराब रहता है। यदि किसी की हथेली में स्वास्थ्य रेखा कई जगह से कटी हुई हो, तो वह व्यक्ति जीवन भर बीमार बना रहता है।

अब मैं स्वास्थ्य रेखा से सम्बन्धित कुछ विशेष तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं—

१. यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से मिली हुई न हो, तो ऐसा व्यक्ति दीर्घायु होता है।

२. स्वास्थ्य रेखा जितनी अधिक लम्बी, स्वस्थ और पुष्ट होती है, उस व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही अधिक श्रेष्ठ कहा जाता है।

३. यदि इस रेखा का प्रारम्भ लाल हो, तो उसे जीवन में हार्ट की बीमारी होती है।

४. यदि यह रेखा मध्य में लाल हो, तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमज़ोर बना रहता है।

५. यदि यह रेखा अन्तिम स्थल पर लाल रंग की हो, तो उसे सिर दर्द की बीमारी बनी रहती है।

६. यदि यह रेखा कई रंगों की हो, तो उसे जीवन में पक्षाघात का सामना करना पड़ता है।

७. यदि यह रेखा पीले रंग की हो, तो उसे गुप्त रोग होते हैं।

८. यदि स्वास्थ्य रेखा चन्द्र पर्वत से होती हुई हथेली के किनारे-किनारे चलकर बुध पर्वत तक पहुंचती हो, तो वह जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

९. यदि यह रेखा पतली हो, स्पष्ट हो एवं मस्तिष्क रेखा भी पुष्ट हो, तो उस व्यक्ति की स्मरण-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है।

१०. यदि इस रेखा पर तथा मस्तिष्क रेखा पर धब्बे हों, तो व्यक्ति जीवन भर बीमार बना रहता है।

११. यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा सुर्ख रंग की हो, तो ऐसा व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भोगी तथा कामी होता है।

१२. यदि मस्तिष्क रेखा कमजोर हो या स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो, तो उसे पेट की बीमारी बनी रहती है।

१३. यदि बुध पर्वत पर यह रेखा आकर कट जाती हो, तो ऐसे व्यक्ति को पित्त दोष होता है।

१४. यदि यह रेखा लाल रंग की होकर हृदय रेखा से मिलती हो, तो उसका हृदय अत्यन्त कमजोर समझना चाहिए।

१५. यदि कोई स्वास्थ्य रेखा हृदय रेखा पर क्रॉस का चिन्ह बनाती हो, तो उसे मन्दाग्नि रोग होता है।

१६. यदि स्वास्थ्य रेखा से कई सहायक रेखाएं निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हों, तो ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है।

१७. यदि स्वास्थ्य रेखा लम्बी तथा लहरदार हो, तो उसे जीवन में दांतों की बीमारी होती है।

१८. यदि स्वास्थ्य रेखा कमजोर हो एवं हृदय रेखा भी कमजोर हो, तो व्यक्ति दुर्बल मनोवृत्ति का होता है।

१९. यदि स्वास्थ्य रेखा के अन्तिम स्थल पर चतुर्भुज हो, तो व्यक्ति दमे के रोग से पीड़ित होता है।

२०. यदि उंगलियां कोणदार हों तथा स्वास्थ्य रेखा कमजोर हो, तो व्यक्ति लकवे के रोग से पीड़ित रहता है।

२१. यदि स्वास्थ्य रेखा से कई छोटी-छोटी शाखाएं नीचे की ओर जा रही हों, तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर बना रहता है।

२२. यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई प्रशाखा शनि पर्वत की ओर जा रही हो, तो उस व्यक्ति के पास अतुलनीय धन होता है।

२३. यदि स्वास्थ्य रेखा की कोई प्रशाखा शनि पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति स्वास्थ्य से गंभीर, मननशील तथा दीर्घायु होता है।

२४. यदि स्वास्थ्य रेखा में कोई चन्द्र रेखा आकर मिल रही हो, तो वह व्यक्ति सफल व [illegible] होता है, तथा कई बार विदेश यात्राएं करता है।

२५. यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई प्रशाखा अर्द्धवृत्त सा बनाती हुई मंगल पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति सफल भविष्यवक्ता होता है।

२६. यदि मनुष्य की हथेली में स्वास्थ्य रेखा चलकर हृदय रेखा को काट रही हो, तो उस व्यक्ति को मिर्गी का रोग होता है।

२७. यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श कर लेती है, तो उस व्यक्ति का भाग्य जीवन भर कमजोर बना रहता है।

२८. यदि ऐसी रेखा मस्तिष्क रेखा को छूती हो, तो उस व्यक्ति का दिमाग अत्यन्त कमजोर रहता है।

२९. यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को स्पर्श करती हो, तो वह जीवन में कई बार बदनामी उठाता है।

३०. यदि स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तथा बुध पर्वत को पार करती हो, तो उसे व्यापार में जबरदस्त हानि सहन करनी पड़ती है।

३१. यदि उंगलियां नोकीली हों और हथेली में स्वास्थ्य रेखा का अभाव हो, तो वह व्यक्ति क्रियाशील होता है।

३२. यदि बुध पर्वत अत्यन्त विक्षिप्त हो और स्वास्थ्य रेखा का अभाव हो, तो वह व्यक्ति खुश मिजाज होता है।

३३. यदि लहरदार बुध रेखा मुड़कर शुक्र की ओर जा रही हो, तो उसे प्रेम के क्षेत्र में जबरदस्त धक्का लगता है।

३४. यदि स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो उसे रक्त सम्बन्धी बीमारियां होती हैं तथा उसके फेफड़े कमजोर होते हैं।

३५. यदि स्वास्थ्य रेखा के आस-पास कई छोटी-छोटी रेखाएं हों, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य हमेशा कमजोर बना रहता है।

३६. यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से बढ़कर मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा को स्पर्श करती हुई आगे बढ़ती है, तो उसे जीवन में कमजोरी रहती है।

३७. यदि जीवन रेखा के साथ यह रेखा जुड़ी हुई हो, परन्तु इस रेखा पर नीले धब्बे हों, तो उसे हृदय रोग की शिकायत बनी रहती है।

३८. यदि मस्तिष्क रेखा के अन्त में तथा स्वास्थ्य रेखा के अन्त में क्रॉस हो, तो वह व्यक्ति सफल होता है।

३६. यदि स्वास्थ्य रेखा कहीं पर चमकदार तथा कहीं पर फीकी हो अथवा टुकड़ों में बंटी हो, तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है।

४०. यदि स्वास्थ्य रेखा कमजोर और अत्यन्त पतली हो, तो उसके चेहरे पर सुस्ती बनी रहती है।

४१. यदि स्वास्थ्य रेखा और सूर्य रेखा का परस्पर सम्बन्ध बन गया हो, तो उस व्यक्ति का मस्तिष्क अत्यन्त उर्वर होता है।

४२. यदि इस रेखा के अन्त में क्रॉस हो तथा मस्तिष्क रेखा पर भी क्रॉस का चिन्ह हो, तो व्यक्ति जीवन में अन्धा होता है।

४३. यदि स्वास्थ्य रेखा को मार्ग में कहीं पर तिरछी रेखा काटती हो, तो आयु के उस भाग में जबरदस्त एक्सीडेन्ट (दुर्घटना) होता है।

४४. यदि रेखा पर तारे का चिन्ह हो, तो उसे जीवन में परिवार का सहयोग नहीं मिलता।

४५. यदि स्वास्थ्य रेखा के आस-पास क्रॉस का चिन्ह हो, तो उसके जीवन में कई बार दुर्घटनाएं घटित होती हैं।

४६. यदि राहु क्षेत्र पर गुजरते समय स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, तो ऐसा व्यक्ति टी० बी० के रोग से पीड़ित रहता है।

४७. यदि मस्तिष्क रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो और उस द्वीप के ऊपर से होकर स्वास्थ्य रेखा गुजर रही हो, तो व्यक्ति का स्वास्थ्य जीवन में अत्यन्त कमजोर रहेगा।

४८. यदि भाग्य रेखा कटी हुई हो तथा स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पीड़ित रहता है।

४६. यदि स्वास्थ्य रेखा हथेली के अन्दर धंसी हुई हो, तो उसे गुप्त रोग रहते हैं।

५०. स्वास्थ्य रेखा पर क्रॉस स्वास्थ्य की हानि की ओर ही संकेत करते हैं।

५१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र हों, तो व्यक्ति को पारिवारिक सुख नहीं मिलता।

५२. यदि बुध रेखा तथा प्रणय रेखा आपस में मिली हुई हों, तो उस व्यक्ति की पत्नी का स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है।

५३. यदि दोनों हाथों में स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट हो, तो वह व्यक्ति कामुक और भोगी होता है।

५४. यदि स्वास्थ्य रेखा दोहरी हो, तो व्यक्ति श्रेष्ठ भाग्य का स्वामी होता है।

५५. यदि देहरी स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को भी स्पर्श करती हो, तो व्यक्ति राजनीति में अत्यन्त श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है।

५६. यदि स्वास्थ्य रेखा तथा हृदय रेखा का मिलन बुध पर्वत के नीचे हो, तो उस व्यक्ति की मृत्यु हार्ट-अटैक से होती है।

५७. यदि स्वास्थ्य रेखा के साथ में कोई सहायक रेखा भी चल रही हो, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

५८. यदि स्वास्थ्य रेखा ठीक हो, परन्तु नाखूनों पर पीली धारियां हों, तो उस व्यक्ति की असामयिक मृत्यु होती है।

५६. यदि स्वास्थ्य रेखा नीचे से पुष्ट हो, परन्तु ऊपर चलते-चलते क्षीण होती जाती हो, तो व्यक्ति की यौवनकाल में ही मृत्यु हो जाती है।

६०. यदि स्वास्थ्य रेखा मणिबन्ध से निकल रही हो पर टूटी हुई हो, तो उस व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र ही समझनी चाहिए।

६१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर जाली का चिन्ह हो, तो व्यक्ति पूर्ण आयु नहीं भोगता।

६२. यदि जीवन रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा का आपस में सम्बन्ध हो जाए और ऊपर तारे का चिन्ह हो, तो व्यक्ति की मृत्यु यात्रा में होती है।

६३. यदि जरूरत से ज्यादा लम्बे नाखून हों, तो व्यक्ति को स्नायु सम्बन्धी बीमारी होती है।

६४. यदि नाखूनों का रंग नीला हो, तो व्यक्ति पक्षाघात से पीड़ित रहता है। यदि नाखून छोटे-छोटे हों और स्वास्थ्य रेखा कटी हुई हो, तो व्यक्ति को मिर्गी का रोग होता है।

६५. यदि जीवन रेखा कमजोर हो तथा बुध रेखा लहरदार हो, तो उसे गठिया की बीमारी होती है।

६६. उत्तम स्वास्थ्य रेखा व्यक्ति के लिए सभी दृष्टियों से सुखदायक कही जाती है।

हस्तरेखा विशेषज्ञ को स्वास्थ्य रेखा का सावधानी के साथ अध्ययन करना चाहिए। इस रेखा से हम भविष्य में होने वाली बीमारियों तथा दुर्घटनाओं की जानकारी पहले से ही कर सकते हैं और इस प्रकार की चेतावनी देकर उसे सावधान कर सकते हैं।

वस्तुतः स्वास्थ्य रेखा का महत्त्व हथेली में अन्यतम है, इसमें कोई दो राय नहीं।

पूज्यपाद गुरुदेव के योग्यतम संन्यासी शिष्य स्वामी निरूपानंद जी कुमाऊं के क्षेत्र में निरन्तर विचरण करते हुए उन साधनात्मक विधियों की खोज में संलग्न हैं जिनका आदेश उन्हें पूज्य गुरुदेव से प्राप्त हुआ था। साथ ही वे अपनी साधनाओं का फल समाज को देते हुए सहज व संन्यस्त जीवन भी जी रहे हैं। इस हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर उन्होंने अपनी मनोभावनाओं को एक पत्र के रूप में पत्रिका कार्यालय भेजकर पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी जिस मनः स्थिति का परिचय दिया है, हम उसमें बिना किसी संशोधन के अविकल प्रस्तुत कर रहे है।

''पहुंचेंगे तब कहेंगे'' लेख के प्रत्युत्तर में एक प्रकार से स्वामी निरूपानंद जी का प्रश्न है– ''पहुंचेंगे किस ठौर''

गुरुदेव ! आज जब आपका इस भौतिक स्वरूप में चिरस्मरणीय साठवां वर्ष आ गया है या स्पष्टता से कहूं तो हमसे बिछोह का साठवां वर्ष प्रारम्भ हो चुका है, तब उत्सव से भी अधिक मेरे मन में कुछ बातें उमड़ने-घुमड़ने लगी हैं। आप जिस प्रकार से निरन्तर इस समाज में गृहस्थों के मध्य इन्हीं के अनुरूप बन कर, इनको चेतना दे रहे हैं, उसके बाद मन में जिज्ञासाएं उठना स्वाभाविक भी हैं। संन्यस्त धर्म के अनुसार यह मेरी धृष्टता कही जा सकती है, किन्तु मैं यह पूछे बिना रह नहीं पाता कि क्यों आप इस प्रकार से एक आवरण के मध्य में लिपट कर गतिशील हैं? मुझे विधाता ने यह सौभाग्य दिया है कि मैं आपके प्रखर संन्यस्त जीवन में आपका एक अकिञ्चन शिष्य बन सका। आपके साथ पल-पल रह सका और आपके गुरुत्व की गरिमा से गुरु तत्व को समझ

सका। जीवन की उदात्तता, श्रेष्ठता, मर्यादा, शालीनता मेरे अन्दर आपके साहचर्य में रहने पर स्वतः ही उतरती चली गई। शास्त्रों में जिस प्रकार से गुरु को चन्दन वृक्ष कहा गया है, जिससे कोई खेजड़ी भी रगड़ खाए तो वह भी सुगन्धित हो जाती है, ठीक वही स्थिति मेरे जीवन की रही। मैंने अपनी आंखों से आपका वह अग्नि स्फुलिंग से भरा स्वरूप देखा कि जब हम सभी शिष्य कई-कई सप्ताह गुजर जाने पर भी आपकी ओर दृष्टिपात तक नहीं कर पाते थे, वार्तालाप करना तो बहुत दूर की बात है, किन्तु फिर भी अत्यन्त उल्लास व वेग में भरकर निरन्तर साधनाओं में रत रहते हुए उसी सुख का अनुभव करते थे, जिस प्रकार से एक छोटा गौरैया का बच्चा अपनी मां के पंखों के नीचे एकदम उससे चिपक कर अपने-आप को सुरक्षित और ऊष्मा से भरा पाने लगता है। प्रतिपल आपके साहचर्य में आपकी पवित्र देह से आती हुई तपः रश्मियों की ऊष्मा और दिव्य गन्ध हमें ऐसी ही पुलक देती रहती थी, कि हम सभी दुबक कर सुरक्षित और आनन्दित बने रहते थे।

गुरुदेव! आपके जाने के बाद से हमारे जीवन में बस वह पुलक नहीं रह गई। यद्यपि आज हमारे पास साधनाएं हैं, सिद्धियां और आप द्वारा दी गई वह चैतन्यता है, जिसके द्वारा हम समस्त प्रकृति को वशीभूत कर सकते हैं . . ., लेकिन आप तो नहीं हैं।

दूसरी ओर आप भी जिन लोगों के मध्य पूज्यपाद दादा गुरुदेव की आज्ञा से सक्रिय हैं, उनकी भी चेतना और साधनात्मक स्थिति हम देख ही रहे हैं। आप भगवान श्रीकृष्ण की ही भांति उनके मध्य विविध रूप रखकर लीला का भाग बन रहे हैं और प्रतिक्षण अपने स्वरूप को बदलने की सामर्थ्य से युक्त हैं। बच्चे, युवा, स्त्री, वृद्ध, ज्ञानी, संन्यासी, योगी, साधु और यहां तक की कुतर्की और वाचाल लोग भी आपके स्वरूप के आगे मंत्र-मुग्ध हैं, किन्तु हम जानते हैं कि यह आपका मायां स्वरूप है, यह आपका वास्तविक स्वरूप नहीं है। **आपका वास्तविक स्वरूप तो सच्चिदानन्दमय है, परमशांत और निर्विकल्प है।** पूर्ण गुरुत्व की गरिमा से ओत-प्रोत है, किन्तु आप प्रत्येक मानव की मनः स्थिति से तादात्म्य करते हुए साथ ही साथ उसे जिस उच्च स्थिति का बोध कराना चाहते हैं, उसकी प्राथमिक भाव-भूमि ही इनके मन में कदाचित् स्पष्ट नहीं है।

आपने मनुष्य को प्रेम और उत्सव की धारणा दी है, उसे प्रकृति के संग हंसना खिलखिलाना सिखाया है। आपने प्रतिपल नूतन होने की कला का बोध कराना चाहा है। इन्हें उस स्थिति तक ले जाना चाहा है, जहां प्रत्येक मनुष्य एक फूलों भरी डाली जैसा हो जाए और यह सारी धरा इसी प्रकार के सुगन्धित फूलों से भर जाए। किन्तु आप जिस उत्सव की धारणा समाज के सामने रखने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं, उसका इन्हें कोई बोध नहीं है। प्रभु हम सभी संन्यासी शिष्यों ने भी आपके साहचर्य में उत्सवमयता प्राप्त की है, इसी से ऐसा करने का साहस कर रहा हूं। कहां वह उद्दाम, धरा को छोड़ ऊपर उठता हुआ, प्रचण्ड वेग से नाचता हम संन्यासियों का उत्सव जिसमें प्रत्येक शिष्य अपने-आप को भुलाकर गुरुदेव को अपने मध्य पाकर, उन्मत्त होकर उन्हें भुजाओं में भरने को तड़प उठता था और कहां ये नितान्त घिसटते, शोरगुल, हल्ला-कोलाहल को ही अपना उत्सव समझते, भोंडे ढंगों से अपनी देह को पटकते, सांसारिक शिष्य।

उत्सव का तो मूल अर्थ मैंने आपसे यही सीखा कि जब तक समाज के एक-एक व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कराहट न ला दी जाए तब तक कोई उत्सव सम्भव होता ही नहीं। उन्मत्तता और उन्माद में अन्तर करना मैंने आपसे ही सीखा है। उन्मत्ता कुछ सार्थक घटित करने को तड़फती है और उन्माद निरन्तर भौतिक स्तर पर रहने वाला, शरीर का एक ओछा उफान होता है। गुरुदेव! यह आपके होने को सार्थक करना तो दूर सामान्य अर्थयुक्त भी नहीं बना पाये हैं और नितान्त सांसारिक वासनाओं में लिपटे गुरुपद को केवल शगल या समय बिताने की कोई वस्तु मान बैठे हैं, जबकि गुरुदेव तो जीवन का श्रृंगार हैं, एक सम्पूर्ण जीवन शैली हैं, रूप, सौन्दर्य, प्रेम के पर्याय हैं, हास्य, कला, लालित्य, संगीत और जीवन के गीत के मूर्त स्वरूप हैं, शायद ये आपका ऐसा स्वरूप देखना ही नहीं चाहते, ये अपने ही मापदंड पर आप को भी परखते हैं, समझने का दम्भ भरते हैं, उसी मल- मूत्र में जीते हैं और फिर आलोचना में खो जाते हैं। **कोई आवश्यक नहीं कि आलोचना मुख से ही की जाए,** दिल के किसी कोने में भी कुछ दबा-छुपा

गुरुदेव! मुझे क्षमा कीजिएगा किन्तु यदि आज भी ऐसा नहीं कहा तो एक चूक हो जाएगी . . .

यह समाज आपके कृपा पुंज से वंचित रह जाएगा, आपका आगमन सार्थक न हो पाएगा इसी से मैंने दो टूक कुछ कहने का साहस किया है. . .

चलौ चलौ सब कोई कहे, मोहिं अंदेसा और
साहब सौ परिचय नहिं ,पहुंचेंगे किस टौर

. . . इस छोटे से काल खण्ड में अपनी अल्प क्षमताओं में हम कैसे आपका परिचय प्राप्त करें, कैसे आपका सायुज्य ग्रहण करें, कैसे आपकी उपस्थिति को सार्थक बनाने की कला से युक्त हों, यही प्रश्न मेरे मानस में निरन्तर उमड़ते - घुमड़ते रहते हैं।

कर रख लिया, वह भी तो आलोचना ही है। उस परम उज्ज्वल गुरुत्व पर डाला गया एक मलिन छींटा ही है।

मुझे वे क्षण याद हैं जब मैं आपकी आज्ञा प्राप्त होने के बाद **वर्ष १९९२** में जन्मोत्सव (२१ अप्रैल) के अवसर पर **गोधरा** (पंचमहाल-गुजरात) में सूक्ष्म रूप से सिद्धाश्रम के कुछ अन्य गुरु भाइयों के साथ आने में सफल हो पाया था और आपने उस अवसर पर कहा था कि **"... मेरी वेदना ही यही है कि मैं विश्व को जिस ढंग से संवारना चाहता हूं, जो सौन्दर्य, प्रेम, कला और जीवन जीने की शैली देना चाहता हूं, उसके लिए कोई तैयार ही नहीं है।** उन्हीं पुराने घिसे-पिटे तरीकों से ये सब गुरु-पद का वन्दन कर रहे हैं, जिस प्रकार से किसी भी अन्य मत के अनुयायी। मैंने इन्हें साधना देनी चाही किन्तु इन्होंने भक्ति को अपना लिया। मैंने इन्हें चेतना देनी चाही, गुरु तत्व का अर्थ बताना चाहा किन्तु इन्होंने स्वार्थपरता प्रारम्भ कर दी। ये मेरे हृदय के उस अन्तः स्थल तक नहीं गए जहां चिरशान्ति है, . . . ये एक लिजलिजे आवरण में लिपट कर देह तक ही सीमित रह गए, क्योंकि इससे इनका स्वार्थ सधता है, इससे इनके अहं को सन्तुष्टि मिलती है।"

आश्चर्य है गुरुदेव आप कितना अधिक नीचे उतर कर इन लोगों से बात कर रहे हैं, कितना अधिक अपने-आप को दबोच कर इनके जैसे क्रिया-कलाप कर रहे हैं। **हम लोगों को तो कोई अन्तर नहीं पड़ता, आप जिस रूप में भीं गतिशील रहें, हमारी आंखों के समक्ष आपका ब्रह्म स्वरूप नाचता रहता है,** आपकी दिव्य आत्मा हमारे प्राणों के साथ लिपटी रहती है, किन्तु स्थूल दृष्टि से तो देखने पर हम भी आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि कैसे एक वीतराग योगी इस प्रकार से पिता, भाई, बन्धु, चातुर्यपूर्ण, और कुटिलों के साथ नम्र बना हुआ है। हम अनुभव कर सकते हैं कि आपको भले ही माया रूप में, किन्तु ऐसा करने में कितनी अधिक वेदना होती होगी। आप अपने गृहस्थ शिष्यों को जिस प्रकार से भौतिकता से आध्यात्मिकता के मध्य लिए जा रहे हैं और इसमें जितना अधिक कष्ट सह रहे हैं, कदम-कदम पर उफनती वासनाओं का नृत्य देख रहे हैं, लोभ, ईर्ष्या, मोह, और मद का साक्षात् ताण्डव देख रहे हैं, आश्चर्य है कि कैसे **साक्षात् शिवस्वरूप पूज्यपाद परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** शांत हैं, किन्तु फिर यहीं पर आकर समझने को बाध्य हो जाना पड़ता है कि गुरुपद 'बहुत अधिक उच्चपद है जिसमें शिष्य के कल्याण और उसकी उन्नति के अतिरिक्त कोई दूसरा चिन्तन ही नहीं है। शिष्य कामी हो, वाचाल हो, लम्पट हो, धूर्त हो, या गुरु से छल करने वाला भी हो फिर भी गुरु उसे उन्नति के पथ पर ही लेकर के चलना चाहते हैं और अपनी ओर से उसकी उंगली नहीं छोड़ते हैं, वह भले ही छुड़ाकर चला जाए।

मैं विदग्ध होने के कारण ऐसा सब कुछ कह गया। निश्चय ही कोई और चेतना, कोई और करुणा है जिससे आप अत्यन्त सहज बनकर, बच्चों के साथ बच्चा बनकर, वृद्धों के साथ वृद्ध बनकर उसे किसी भी प्रकार से अपने हृदय के बल से, अपने प्रेम के रस से उस ओर उन्मुख कर देना चाहते हैं, जो शाश्वत पथ है और इस प्रक्रिया में सारा विष पान स्वयं करते रहते हैं। मेरी ग्लानि और मेरा खेद केवल यही है कि इसके उपरान्त भी ये सभी उस तरह से हैं जिस प्रकार से बाढ़ का पानी आता है तो नदी के किनारे के सभी छोटे-छोटे गड्ढे भर जाते हैं लेकिन बाद में उनमें कीचड़ ही शेष रह जाता है। आपका इस धरा पर आगमन आध्यात्मिकता की बाढ़ सदृश्य है और जो कुछ भी शुभ दिखाई पड़ रहा है, जो भी सद्प्रवृत्तियां व्याप्त हैं, वे आप के तप के द्वारा ही हैं। ये छोटे-छोटे गड्ढे आपके प्रवाह से भर गए हैं, इनमें अपना स्रोत नहीं है और इसी कारणवश मन में शून्य आ जाता है कि आपके इतने प्रयासों के बाद भी यदि कोई शिष्य, धरती का कोई टुकड़ा अपना स्रोत ढूंढने को आतुर नहीं है, तो यह स्थिति कैसे सह्य होगी? इससे तो वह परम्परा ही समाप्त हो जाएगी, जो आप प्रवाहित करना चाहते हैं। जिस प्रकार संसार के अन्य पंथ अपने अग्रपुरुष के जाने के बाद विसंगतियों में खो गए, आप उस प्रकार नहीं करना चाहते। आप अपनी ही प्रतिकृति बना देना चाहते हैं, किन्तु कौन तैयार है इसके लिए? **कौन आप के इस विराट चिन्तन को समझने के लिए आगे बढ़ रहा है? कौन जुबानी-जमा खर्च से आगे बढ़कर आपके चिन्तन को ज्यों का त्यों उतारने के लिए उपस्थित हो गया है?**

इस सदी का अंत भयावह होगा

"... मैं नहीं जानता कि आप मेरी बात को किस प्रकार ले रहे हैं, एक न्यूज मैटर के रूप में या मानवता पर मंडरा रहे भावी खतरे के प्रति मेरी चिन्ता को समझते हुए"

पिछले अंक में हमने प्रसिद्ध पत्रकार **श्री विजय कलाल** एवं **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** के मध्य हुई टेलीफोन-वार्ता के उन अंशों को प्रस्तुत किया था जो देश के उतार-चढ़ाव व राजनीतिक परिवर्तनों से सम्बन्धित थे जबकि इस बार उन अंशों को प्रकाशित किया जा रहा है जो अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के हैं।

आगामी वर्ष कैसे होंगे? इस सदी के अंत तक किस प्रकार से परिवर्तन आएंगे? भारत का भावी विश्व रंगमंच पर क्या स्थान होगा? जैसे अनेक विचारोत्तेजक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर आधारित प्रख्यात भविष्यवक्ता एवं ज्योतिर्विद डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली का स्पष्ट एवं दो टूक रहस्योद्घाटन . . .

- **वर्ष १९९९ में तृतीय विश्व युद्ध निश्चित है**
- **भारत द्वारा शांति दूत के रूप में सक्रिय होना**
- **ग्यारह दिवसीय इस तांडव में मानवता की अकल्पनीय क्षति. . .**
- **भविष्य में चीन, भारत और रूस का पारस्परिक पूर्ण सहयोग**

(गतवार्ता से आगे)

श्री विजय कलाल : डॉ० श्रीमाली जी, यह तो आप भी अनुभव कर रहे होंगे कि देश इस समय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही मोर्चों पर एक साथ जूझ रहा है, इसका भावी परिणाम कैसा होगा? आगामी विश्व कैसा होगा? भारत का उसमें क्या स्थान होगा?

डॉ० श्रीमाली जी : यह सत्य है कि देश के समक्ष आंतरिक एवं वाह्य दोनों ही प्रकार की चुनौतियां प्रवलता से हैं और यह वास्तव में केवल सदी के संक्रमण काल का ही काल नहीं अपितु परिस्थितियों के संक्रमण का भी काल है। मैं जहां तक अपनी ज्योतिषीय दृष्टि से विश्व के भविष्य को आंक रहा हूं तो वह अत्यन्त निराशाजनक, भयावह और पीड़ायुक्त ही प्रतीत हो रही है। इस संदर्भ में केवल देश को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को देखना होगा।

श्री कलाल : क्या आप उस ओर इंगित कर रहे हैं जैसी कि अन्य ज्योतिषियों की भविष्यवाणी है, यानि तीसरा विश्वयुद्ध?

डॉ० श्रीमाली जी : मैं नहीं जानता कि आप मेरी बात को किस दृष्टि से ले रहे हैं, एक पत्रकार के रूप में न्यूज मैटर की तरह अथवा भावी विश्व के समक्ष मंडरा रहे एक भीषण खतरे की विडम्बना से चिन्तित हो कर, किन्तु मैं तो केवल उस परिस्थिति का उल्लेख कर रहा हूं जो इस सदी के अंत तक इस सम्पूर्ण विश्व में आनेवाली है। **मात्र ग्यारह दिवसीय यह युद्ध जो वर्ष १९९९ में होगा, सारी मानवता को मथ कर रख देगा।** ऐसा नरसंहार, विनाश और विध्वंस होगा जो अपने-आप में एक अकल्पनीय है, मुझे यह कहते हुए अपार वेदना हो रही है। मैं इस घटना को एक ज्योतिषी की तरह नहीं अपितु एक सामान्य मानव की ही भांति देख रहा हूं और इसी से मुझे क्षोभ हो रहा है।

श्री कलाल : भारत की इस विश्वयुद्ध में क्या भूमिका रहेगी?

डॉ० श्रीमाली जी : भारत अपनी क्षमता भर शांति स्थापित करने का ही प्रयास करेगा और चीन का भी अतिरिक्त सहयोग उसे प्राप्त होगा लेकिन फिर भी जो समीकरण बनेंगे उसके बाद उसे विवश होकर युद्ध भूमि में भी उतरना ही पड़ेगा। सम्पूर्ण रूप से कहूं तो भारत इस विश्वयुद्ध के बाद शांति के मसीहा के रूप में ही आगे आएगा और विश्व को अपने स्पर्श से नया जीवन देगा।

श्री कलाल : क्षमा कीजिएगा किन्तु मैं बीच में यह पूछना चाहूंगा कि "चीन का भी अतिरिक्त सहयोग" से आपका क्या तात्पर्य है?

डॉ० श्रीमाली जी : मैं इस बात को पूर्व में भी कह चुका हूं कि भारत एवं चीन के मध्य वैमनस्यता घटेगी और इसके प्रमाण भी हैं। पिछले वर्ष चीन की भारत के साथ जिस प्रकार से तनाव में कमी आई है वह विश्व को अचम्भित किए हुए हैं। वार्ताओं के चक्र प्रारम्भ हुए हैं और सबसे बड़ी बात कि चीन का स्वर बदला है।

मैं आज पुनः इसी बात पर जोर देकर अतिरिक्त रूप से यह भी कहने का इच्छुक हूं कि यह मेल-मिलाप इसी वर्ष के अंत तक और प्रगाढ़ होने जा रहा है। इसकी सर्वाधिक सुखद परिणति तो तब होगी **जब चीन अगस्त ९६ में मानसरोवर का क्षेत्र भी भारत को सौंप देगा।** एक प्रकार से दोनों देशों की प्राचीन परम्पराएं सेतु का कार्य करेंगी।

श्री कलाल : राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप में आपकी इस भविष्यवाणी का अत्यंत महत्व है, किन्तु सामरिक दृष्टि से भारत चीन की समता कैसे कर पाएगा?

डॉ० श्रीमाली जी : आप संभवतः यह प्रश्न मेरी उस बात को ध्यान में रखकर पूछ रहे हैं जो मैंने अभी-अभी कही कि भारत व चीन तृतीय विश्व युद्ध में साथ होंगे। आप तो फिर भी बहुत आगे की बात को ध्यान में रखकर प्रश्न पूछ रहे हैं। मैं आपको यह भी बता दूं कि भारत आज भी सामारिक क्षमता में चीन के समकक्ष ही खड़ा है और मेरी इस बात का प्रमाण शीघ्र ही मिल जाएगा जब भारत अपनी कुछ चौंकाने वाली क्षमताओं का स्पष्टीकरण करेगा?

श्री कलाल : मैं व्यक्तिगत रूप से आपकी ज्योतिषीय क्षमताओं का कायल होते हुए भी एक पत्रकार के रूप में इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रहा हूं। क्या विश्व का और विशेषकर अमेरिका का दबाब भारत की सामरिक क्षमता को प्रभावित नहीं कर रहा है?

डॉ० श्रीमाली जी : उचित होगा कि मैंने जिस बात को संकेत मात्र किया है उसे कुछ और स्पष्ट कर दूं। भारत ने आणविक क्षेत्र में जिस प्रकार से उत्तम तकनीकी को प्राप्त कर लिया है उसका स्पष्टीकरण भी शीघ्र ही अर्थात् गणतंत्र दिवस के आसपास कर देगा। रही बात अमेरिका के दबाव की उसके विषय में मैंने बहुत पहले ही **जनवरी ९४** में भविष्यवाणी की थी कि भारत अमेरिका के समक्ष तनकर खड़ा होगा और इससे सम्बन्धित विवरण **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका के जनवरी अंक में प्रकाशित भी हुआ था। आप वर्तमान में इन बातों को प्रत्यक्षतः देख ही रहे हैं।

श्री कलाल : आप इन परिपेक्ष्यों में भारत के प्रति किस प्रकार की आशा कर रहे हैं?

डॉ० श्रीमाली जी : भारत की प्रतिष्ठा एवं सम्मान पूरे विश्व में बढ़ेगा ही और विशेष रूप से मैंने आणविक क्षेत्र में जिस प्रगति का उल्लेख किया है उसके स्पष्ट होने के बाद तो निश्चित रूप से ही, किन्तु अभी भारत को आन्तरिक रूप से सुदृढ़ होने में कुछ समय लगने की सम्भावना है। जातीय विद्वेष एवं संकीर्णता की मनोभावनाएं राष्ट्र को बाधा पहुंचाती रहेंगी और जिस प्रकार राष्ट्र बाहरी संकट के समय आपसी मतभेद भुलाकर एकजुट हो जाता है, वह भावना स्थाई होने में अभी कुछ समय और है।

श्री कलाल : क्या इसका तात्पर्य यह लगाया जाए कि अभी साम्प्रदायिक वैमनस्य व जातीय हिंसा के दौर चलते ही रहेंगे?

डॉ० श्रीमाली जी : हमें भविष्य के प्रति इतना अधिक निराशाजनक होना भी उचित नहीं है, यह स्थिति तो एक प्रकार से पूरे विश्व में फैली है। भारत के सम्बन्ध में विडम्बना यह हो गई कि यहां की पृष्ठभूमि प्रारम्भ से कभी भी जातीय विद्वेष में रुचि रखने वाली नहीं थी जो अब शनैः शनैः उग्र व हिसंक होती जा रही है किन्तु मेरा विश्वास है कि कुछ समय बीतने के बाद शीघ्र ही देश अपनी पूर्व परम्पराओं का स्मरण करके सम्बन्धों की पुनर्विवेचना करेगा और यह अप्रिय स्थिति समाप्त होगी।

श्री कलाल : इसके लिए सामाजिक व राजनीतिक रूप से क्या परिर्वतन होंगे?

डॉ० श्रीमाली जी : मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह कार्य राजनीति से नहीं अध्यात्म के माध्यम से पूरा होगा और ऐसी चेतना से साकार रूप ले सकेगा जो संकीर्णता से न बंधी हो। धर्म पर आधारित राजनीति का भविष्य आगे जाकर धुंधला ही होगा।

यद्यपि इसके बाद भी श्री कलाल एवं डॉ० श्रीमाली जी का वार्तालाप जारी रहा जिसमें उन्होंने डॉ० श्रीमाली जी के संरक्षकत्व में गतिशील आध्यात्मिक संस्था ***सिद्धाश्रम साधक परिवार*** *की गतिविधियों, विस्तार, कार्य प्रणाली से सम्बन्धित प्रश्न पूछे एवं उनके उत्तर प्राप्त किए, जिसके माध्यम से धर्म पर आधारित राजनीति के स्थान पर विद्वेष रहित आध्यात्मिकता का प्रसार हो सके, किन्तु मूल विषय से यह प्रसंग कुछ अलग होने के कारण हम उसे सम्पादन की दृष्टि से यहां प्रकाशित नहीं कर रहे है।*

– सम्पादक

पिछले ही दिनों परम पूज्य गुरुदेव माताजी और पत्रिका के लब्ध प्रतिष्ठ सम्पादक **श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी** विदेश यात्रा पर थे, और **लन्दन, बेल्जियम, आष्ट्रिया, जर्मनी, स्विट्जर लैण्ड, फ्रांस, पेरिस** आदि देशों की यात्रा कर **६ जुलाई** को ही स्वदेश लौटे हैं, वहां सभी जगह गुरुदेव का अद्वितीय स्वागत हुआ। **लन्दन के ''साउथाल'' में तो अद्वितीय समारोह प्रवचन एवं स्वागत समारोह हुआ।**

इसकी विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है और अगले अंक में इस यात्रा का विस्तार से विवरण प्रकाशित कर रहे हैं।

श्री गणेश वटाणी

श्री गणेश वटाणी एक समर्पित साधक एवं परम पूज्य गुरुदेव के अत्यन्त प्रिय शिष्यों में से एक हैं, उन्होंने बम्बई में निरन्तर साधना शिविर लगाकर एक चेतना . . .एक जागृति पैदा की है. . . और बता दिया है कि अगर ठान ले तो एक व्यक्ति भी तूफान ला सकता है, हलचल मचा सकता है. . .और बहुत कुछ कर सकता है।

इसी श्रृंखला में इस बार एक अद्वितीय शिविर का आयोजन हो रहा है. . . जो अपने-आप में ही उपलब्धिकारक है, एक ऐसा शिविर. . . .जिससे शिविर में भाग लेने वाले प्रत्येक साधक को लाभ हो ही. . . क्योंकि **कात्यायनी शिविर** कई वर्षों के बाद पहली बार हो रहा है—

बम्बई (महाराष्ट्र) में

(पूज्य नन्दकिशोर जी श्रीमाली जी के सान्निध्य में)

२८ अगस्त १९९४

दुर्लभ कात्यायनी प्रयोग युक्त

साधना स्थल : धरम सी भाटिया हॉल, एस. वी. रोड, बोरीवली (वेस्ट) बम्बई
सम्पर्क : श्री गणेश वटाणी, फोन : ८०५-७११०

सिद्धिदात्री महालक्ष्मी साधना शिविर

'सिद्धाश्रम साधक परिवार' का एक महत्वपूर्ण शिविर उत्तरांचल में

(पूज्य नन्दकिशोर जी श्रीमाली जी के सान्निध्य में)

देहरादून (उ० प्र०) : दिनांक ७ अगस्त १९९४

स्थानीय सम्पर्क

श्री अनिल कुमार नन्दवानी, ओम प्रकाश एण्ड ब्रदर्स, जनरल मर्चेन्ट, २ आराघर, देहरादून
श्री हरवंश आनन्द, ५६, हरिद्वार रोड, देहरादून
श्री महेन्द्र जुनेजा, प्रेम नगर, देहरादून, फोन : ६८३४३६ (ऑफिस), ६८३५८६ (घर)
श्री अनिल कुमार धामा, पाला बाजार, देहरादून, फोन : २२६६२ (ऑफिस), ६२५६६५ (घर)
श्री मदन लाल, ३०३, विदेश संचार कॉलोनी, देहरादून
सुश्री ललिता कपूर (लिली), १८४/१, राजपूत रोड, देहरादून, फोन : ६८४२२६१
श्री धूम सिंह, कान्स्टेबल आराघर पुलिस चौकी, देहरादून
श्री वेदकान्त शर्मा, ग्रुप इंजीनियर, पी० डब्लू० डी०, देहरादून
श्री एस० एन० गुप्ता (जे० ई०), पी० डब्लू० डी०, टेहरी गढ़वाल

शिविर शुल्क - ३३०/-

शाबाश साधना

डॉ. साधना

जीवन के दो पक्ष है भौतिक और आध्यात्मिक, और दोनों का सन्तुलन ही जीवन की पूर्णता है। **डॉ. साधना** एक लब्ध प्रतिष्ठ एवं विख्यात डॉक्टर है और होमियोपैथी में उन्होंने निरन्तर शोध कर के ऐसी औषधियों का निर्माण किया है, जो अचूक सफलतादायक हैं।

कुछ समय से वह भौतिक कार्य (चिकित्सा कार्य — नपुंसकता निवारण, गर्भ धारण औषधि आदि) के साथ - साथ आध्यात्मिक कार्यों में भी रूचि लेकर जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर कर रही है। पत्रिका के लिए उनका सक्रिय सहयोग सराहनीय है . . . . बधाई।

बलसाड (गुजरात में)

काफी वर्षों बाद

गुजरात में अद्वितीय साधना शिविर

महालक्ष्मी प्रत्यक्ष शिविर

(पूज्य नन्दकिशोर जी श्रीमाली जी के सान्निध्य में)

२४ अगस्त १९९४

आयोजन स्थल : **देसाई बाडी, मणिनगर सोसाइटी, तीथल रोड, बलसाड**

सम्पर्क :
- जयेश एम. देसाई, ५-६ गुरुकृपा एपार्टमेन्ट, बेचर रोड, बलसाड
- रमेश डी. प्रजापति, जनता टेलर्स, टाउन हॉल, बलसाड
- देवन्द्र पंचाल, दीप सागर, एपार्टमेन्ट, उदवाड़ा, बलसाड

शाबाश मिश्रा

श्री एस. के. मिश्रा (इलाहाबाद) पूर्णतः समर्पित एवं श्रेष्ठ शिष्य हैं, इनके पास कुछ पुरानी पत्रिकाएं बच गई थीं, केन्द्र ने पत्र लिखा कि यहां पुरानी पत्रिकाओं की मांग पूरे भारत से आ रही है, आपके पास यदि पत्रिकाएं बची हों तो पुनः भिजवा दें, इसके जवाब में मिश्रा जी का पत्र. . .

एस. के. मिश्रा

आदरणीय गुरुदेव,

श्री कैलाश जी का पत्र मिला, जिसमें उन्होंने लिखा है, कि पुरानी पत्रिकाएं जो आपके पास बची हैं वे भिजवा दें।

मैं, **एस. के. बनर्जी , एस. पी. बांगड़** और **डॉ० प्रमोद कुमार यादव** आदि ने यह निश्चय किया है कि पुरानी पत्रिकाएं भेज कर केन्द्र पर भार नहीं बढ़ाना चाहते, हम स्वयं इसकी बिक्री की व्यवस्था कर लेंगे। इस हेतु हम बीस लोगों ने पांच- पांच हजार रुपये लेकर एक अलग से कोष बनाया है जिसके अन्तर्गत इन पत्रिकाओं को समायोजित कर लेंगे। इसके अन्तर्गत पचास हजार का ड्राफ्ट भिजवा रहे हैं। हमने उत्तर प्रदेश के सभी बड़े शहरों में **'होर्डिंग'** भी लगाने का निश्चय किया हैं, इलाहाबाद में जो होर्डिंग लगाया है, उसका चित्र साथ में संलग्न है।

आपका

एस. के. मिश्रा, इलाहाबाद

वास्तव में मिश्रा जी का कार्य एवं योजना अनुकरणीय है, जो भारत के अन्य शिष्यों के लिए भी मार्गदर्शक के रूप में है। **शाबाश मिश्रा, बनर्जी, बांगड़, यादव और अन्य सभी सदस्य. . .**

— कैलाश चन्द्र श्रीमाली

सुखद जीवन का अहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा सर्वथा मुफ्त

पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा

अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक सूर्यकान्त उपरत्न निःशुल्क

समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग उपहार स्वरूप

प्रथम, साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिद्धासन सर्वथा निःशुल्क)

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद गुरुदेव का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र आशीर्वाद स्वरूप

सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा। सर्वथा मुफ्त
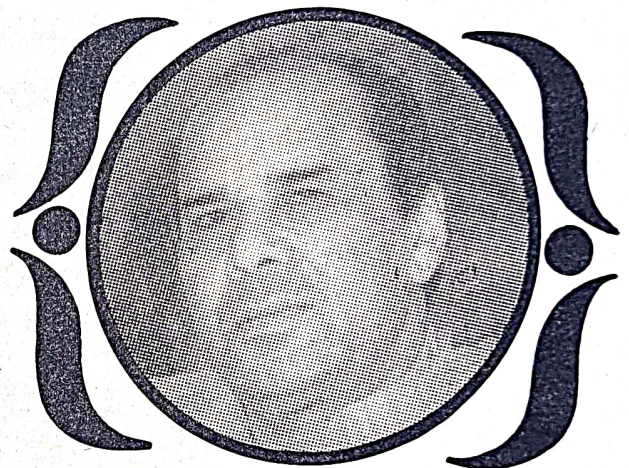
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता सुखद जीवन का आधार है

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे। केवल **६६६६/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः०२९१-३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

यह भी नपुंसकता ही है!

● डॉ० साधना
भोपाल

पत्रिका के मई अंक में हमने **डॉ० साधना** द्वारा प्रस्तुत विवरण प्रकाशित किया था जिसका शीर्षक था **''यौन रोग''** और उसके अन्तर्गत पुरुषों में व्याप्त नुपंसकता के मूल कारण शीघ्र पतन की विवेचना की गई थी। इसके उपरान्त पत्रिका के जून अंक में **डॉ० साधना** से इसी विषय पर इन्टरव्यू प्रकाशित हुआ था जिसमें पुरुषों में व्याप्त नपुंसकता के दूसरे प्रमुख कारण 'शुक्रमेह' पर चर्चा की गई थी।

इन दोनों लेखों में **डॉ० साधना** की गहन विवेचना क्षमता से प्रभावित होकर अनेक पाठकों ने हमें सीधे भी पत्र लिखे और डॉ० साधना से भी व्यक्तिगत रूप से पत्राचार किया। हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि पाठकों के मन में नपुंसकता को लेकर जो धारणा है वह अस्पष्ट है और इसी कारणवश हमने उनके प्रश्नों को क्रमबद्ध कर एक प्रश्नावली तैयार की जिसे **डॉ० साधना** को प्रेषित किया तथा इस विषय पर विशद चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया।

प्रत्युत्तर में **डॉ० साधना** ने हमें सूचित किया कि उन्हें भी जो पत्र मिले हैं उनमें भी यही बात उभर कर सामने आती है कि पाठकों के मन में नपुंसकता को लेकर बहुत अधिक भ्रांतियां फैली हुई हैं। जबकि नपुंसकता तो एक व्यापक शब्द है।

इस सम्बन्ध में पत्रिका कार्यालय द्वारा जो प्रश्नावली **डॉ० साधना** को भेजी गई और उनके जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

प्रश्न : नपुंसकता का तात्पर्य चिकित्सकीय दृष्टि से क्या है?

डॉ० साधना : यह शब्द एक बहुप्रचलित शब्द हो गया है। लेकिन इसका तात्पर्य शायद ठीक- ठीक नहीं लगाया गया है और इसको लेकर अनेक भ्रांतियां फैली हुई है। नपुंसकता का सीधा से अर्थ है पुरुष स्वयं भी सम्भोग करने में असमर्थ रहे और पत्नी को भी संतुष्ट करने के योग्य न हो। जबकि नपुंसकता की कुछ विशेष स्थितियां भी होती हैं।

प्रश्न : क्या नपुंसकता एक असाध्य स्थिति है?

डॉ० साधना : नहीं। केवल जन्मजात नपुंसकता और किसी दुर्घटना में अण्डकोष अथवा स्पाइनल कार्ड के उस भाग पर चोट लगने पर जहां से सेक्स सम्बन्धी गतिविधि नियंत्रित होती है, ही व्यक्ति असाध्य रूप से नपुंसक हो रह सकता है अन्यथा अन्य स्थितियों के लिए विशेष रूप से होम्योपैथी में ऐसी औषधियां सुलभ है जिनसे व्यक्ति शीघ्र ही अपनी दुर्बलता से निकल कर पूर्ण वैवाहिक सुख का आनन्द ले सकता है।

मेरा अनुभव तो यह है कि आज के युग में नपुंसकता का मूल कारण केवल मानसिक ही है। कभी - कभी कुछ अन्य रोग भी अपना साईड इफेक्ट इस प्रकार से डालते हैं जिससे व्यक्ति अस्थायी रूप से नपुंसकता जैसी स्थिति से गुजरने को वाध्य हो जाता है।

प्रश्न : पुरुषों में बांझपन से क्या तात्पर्य है?

डॉ० साधना : यह एक नया प्रचलित शब्द है जिसके अनुसार पुरुष सम्भोग करने में तो समर्थ होता है किन्तु सन्तान उत्पत्ति करने में सक्षम नहीं होता। प्रारम्भ में यह माना जाता था कि पुरुष सदैव सक्षम होता है स्त्री ही बांझ होती है किन्तु जब समाज का दृष्टिकोण व्यापक हुआ और विज्ञान ने प्रगति की तो पाया कि स्त्री के साथ - साथ पुरुष भी 'बांझ' हो सकता है अर्थात् उसके वीर्य में शुक्र कीटाणु या तो नहीं होते हैं अथवा निर्धारित मापदण्ड से कम होते हैं। इन दो स्थितियों को शुक्राणुहीनता **(Azzospermia)** तथा शुक्राणु अल्पता **(Oligospermia)** कहा जाता है।

प्रश्न : क्या पुरुषों की यह विशिष्ट स्थिति जब वे सम्भोग करने में तो सक्षम हो किन्तु सन्तानोत्पत्ति करने में न सक्षम हों असाध्य है?

डॉ० साधना : यहां आवश्यक है कि आपको थोड़े विस्तार में जानकारी दी जाए। पुरुष के वीर्य में एक भी शुक्राणु न होना शुक्राणुहीनता है और यदि वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या ६ करोड़ प्रति मिली. से कम हो तो वह शुक्राणुअल्पता है।

एक बार के स्खलन में लगभग ४.५ मिली. वीर्य निकलता है जिसमें लगभग ४० करोड़ शुक्राणु होते हैं। प्रति मिली. वीर्य में ६ से १५ करोड़ तक शुक्राणु होते हैं यदि प्रति मिली. वीर्य में दो करोड़ से भी कम शुक्राणु पाये जाएं तो उसे असामान्य वीर्य माना जाता है।

प्रश्न : पुरुषों के वीर्य के सक्षम होने का निर्धारण किस प्रकार किया जा सकता है?

डॉ० साधना : वीर्य की सक्षमता का निर्धारण उसमें शुक्राणुओं के माध्यम से ही किया जा सकता है। वीर्य में उपस्थित शुक्राणु कुछ मिनटों से लेकर दो दिन तक जीवित रहते हैं। यदि वीर्य को प्राप्त करने के बाद तीन घंटे के भीतर परीक्षण किया जाए और ६० प्रतिशत से कम शुक्राणुओं में गतिशीलता दिखाई दे तो ऐसा वीर्य असमान्य होता है।

प्रश्न : गर्भ धारण के सन्दर्भ में कौन से शुक्राणु अस्वस्थ कहे जा सकते हैं?

डॉ० साधना : शुक्राणुओं को डिम्ब को गर्भित करने के लिए गतिशील होना चाहिए और सामान्य वीर्य में ६० से ७० प्रतिशत से अधिक शुक्राणुओं को गतिशील होना चाहिए। विकृत शुक्राणु लम्बे सिर वाले, दो सिर वाले, बहुत चौड़े सिर वाले, दो दुम वाले, अपरिपक्व कई तरह के होते हैं।

प्रश्न : क्या शुक्राणु अथवा वीर्य की अशुद्धता जन्मजात ही होती है?

डॉ० साधना : निश्चित रूप से ऐसा नहीं कहा जा सकता। यद्यपि पैतृक कारणों अथवा जन्मगत कारणों से ऐसे दोष हो सकते हैं किन्तु विविध बीमारियों के कारण भी वीर्य में असुद्धता अथवा शुक्राणुओं में विकृति आ सकती है। गलसुवा होना, हाइड्रोसिल होना, शुक्र ग्रन्थियों की सूजन, सुजाक, सिफलिस होने के बाद संक्रमण की वजह से शुक्र ग्रन्थियों में शुक्राणु नहीं बनते। शुक्र ग्रन्थियों या अण्डकोष का ट्यूमर, वेरिकोसिल, वीर्य के बहाव के मार्ग में अवरोध, कॉउपर ग्रन्थियों के स्राव का अभाव अथवा विटामिन 'ई' की कमी जैसी कई बातें हों सकती है।

पुरुष के वीर्य की शुद्धता की जांच करते समय वीर्य का आयतन, वीर्य का रंग, गाढ़ापन, वीर्य विकार प्रतिक्रिया (क्षारीय है या अम्लीय) जैसी कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

प्रश्न : वीर्य विकार के सन्दर्भ में आप किन औषधियों को उचित मानती हैं?

डॉ० साधना : यद्यपि इस सन्दर्भ में क्षेत्र बहुत व्यापक है किन्तु जव मुख्य रूप से चर्चा शुक्राणुहीनता एवं शुक्राणु अल्पता की हो तब मैं मुख्य रूप से **स्ट्रिकनीनम** नामक औषधि का नाम लेना चाहूंगी। ऐसी स्थिति में रोगी की यौन इच्छा बहुत अधिक प्रबल हो जाती है और स्त्री के सम्पर्क में आने पर उसके अण्डकोष असमान्य रूप से कड़े पड़कर शुक्र कीटों का अभाव कर देते हैं। दूसरी प्रमुख दवा **कोनियम २००** है। कई बार जब अण्डकोष शुक्रकीट उत्पन्न करने में असमर्थ होते हैं तथा शीघ्र पतन की भी शिकायत होती है तव सप्ताह में एक बार यह औषधि चिकित्सक के परामर्श से लेना लाभकारी रहता है।

शुक्राणु हीनता तथा शुक्राणु अल्पता दोनों ही स्थितियों में अण्डकोषों का मुख्य स्थान होता है जहां से शुक्रकीट उत्पन्न होते हैं। यदि अण्डकोष सूज गया हो कड़ा पड़ गया हो अथवा उसमें पानी पड़ गया हो तथा नपुंसकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी हो तब **आयोडम ३०** एक उपर्युक्त औषधि है।

प्रश्न : मानसिक नपुंसकता का निदान किस प्रकार सम्भव है?

डॉ० साधना : मानसिक नपुंसकता और स्नायविक नपुंसकता दो बातें एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि मनोभावनाओं को लम्बे समय तक दबाने के कारण नपुंसकता जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई हो तब **चिनिनम ३०** नामक औषधि लाभकारी रहती है। इसके प्रभाव से शुक्र कीटों की संख्या में भी वृद्धि होती है जबकि स्नायविक नुपंसकता के लिए **योहिम्बीनम अर्क** नामक औषधि प्रसिद्ध है।

स्नायविक दुर्बलता में ऐसी भी स्थति आती है जबकि व्यक्ति सम्भोग तो पूर्ण क्षमता से करता है लेकिन तनाव के कारण शुक्रकीटों का अभाव होता है तब उसे **डेमिऑना टरनेरा अर्क** नामक औषधि देना लाभप्रद रहता है।

प्रश्न : किन विशेष बातों का ध्यान व्यक्ति की काम निर्धारण क्षमता में अथवा इससे सम्बन्धित उपचार में रखना आवश्यक होता है?

डॉ० साधना : होम्योपैथिक दवाओं का एक निर्धारित क्रम होता है और रोगी का पूर्व इतिहास, उसके माता - पिता, दादा - दादी, नाना- नानी के रोगों का इतिहास, पारिवारिक वंशानुगत रोग, रोगी की प्रकृति आदि आधार पर उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार आयुर्वेद में वात, पित्त, कफ का आधार लिया जाता है। उदाहरण के लिए यदि रोगी प्रारम्भ में बहुत अधिक शराब, ड्रग्स का आदि रहा हो तो दवा देने का शुरुवात **नक्सवोमिका** से की जाती है। यदि रोगी का पूर्व इतिहास टी.बी. का पाया जाए तो **टुबरकुलिनम** की उच्च शक्ति से किया जाता है।

यही बात काम सम्बन्धी सभी रोगों के सम्बन्ध में भी लागू होती है। प्रायः काम सम्बन्धी रोगों के रोगियों का इतिहास गुप्त रोगों से भी सम्बन्धित रहता है और तब उन्हें प्रारम्भ में एन्टीसिफिलिटीक या एन्टीसाइकोटिक औषधि द्वारा इलाज दिया जाता है। रोगियों को भी चाहिए कि वे इस बारे में जैसी भी स्थिति हों अपने चिकित्सक को स्पष्ट बता दें।

नोट : *पाठक अपने व्यक्तिगत प्रश्नों के उत्तर डॉ० साधना से सीधे भी प्राप्त कर सकते हैं। वे अपने पत्र के साथ जवाबी लिफाफा (पता लिखा टिकट लगा) भी अवश्य भेजें।*

यदि **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका का हवाला देकर सम्पर्क किया जाय तो औषधि - मूल्य में काफी कटौती करने का निश्चय **डॉ० साधना** का है।

डॉ० (श्रीमती) साधना
शॉप नं० २५, छठा बस स्टॉप , सुभाष मार्केट,
शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.),फोन : ०७५५-५५४६२५
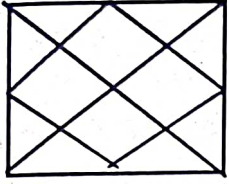
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

नितिन ए० टोंगसे, नागपुर
प्रश्न— **मैं भविष्य में क्या बनूंगा?**
उत्तर— चिकित्सक के रूप में आपको सफलता मिलेगी।

अब्दुल सलाम सैयुयद, नाथद्वारा
प्रश्न— **क्या डॉक्टर बनने का योग है?**
उत्तर— नहीं।

कैलाश बेन एन० पटेल, बलसाड
प्रश्न— **क्या मैं आर्किटेक्ट बन सकूंगी?**
उत्तर— हां।

देवेन्द्र चन्द्रकांत, बडौदा
प्रश्न— **क्या मैं शेयर का कार्य करूं?**
उत्तर— हां। लाभदायक रहेगा।

प्रशान्त कुमार, कुल्लू
प्रश्न— **मनोकामना कब पूर्ण होगी?**
उत्तर— अगले वर्ष।

अजय शुक्ला, कानपुर
प्रश्न— **क्या सरकारी नौकरी मिलेगी?**
उत्तर— हां। किन्तु थोड़ा विलम्ब सम्भावित।

संजय सोहल, मोहाली
प्रश्न— **सरकारी नौकरी कब तक मिलेगी?**
उत्तर— अगले वर्ष के मध्य तक।

अनिरुद्ध कुमार त्रिवेदी, इटावा
प्रश्न— **क्या सरकारी नौकरी लगेगी?**
उत्तर— हां किन्तु भाग्योदय प्रयोग अवश्य सम्पन्न करें।

प्रकाश के० तनवानी, बम्बई
प्रश्न— **क्या मैं व्यापार करूं?**
उत्तर— हां, लाभदायक रहेगा।

अमलेन्दु कुमार ठाकुर, मधुबनी
प्रश्न— **क्या मुझे व्याख्याता की नौकरी मिलेगी?**
उत्तर— अध्यापन कार्य व्यक्तिगत रूप से करें, अधिक लाभ रहेगा।

शशि भूषण, रायबरेली
प्रश्न— **क्या वेताल सिद्धि मिलेगी?**
उत्तर— कुण्डली के अनुसार प्रबल योग है।

वेणीस्वर ताम्रकार, विलासपुर
प्रश्न— **क्या मैं डॉक्टर बन सकता हूं?**
उत्तर— सम्भावनाएं क्षीण हैं।

अशोक पी० ओंकार, ठाणे
प्रश्न— **क्या वुडन फर्नीचर व्यवसाय लाभप्रद रहेगा?**
उत्तर— हां, किन्तु साथ में सहयोगी व्यापार भी अवश्य करें।

पी० व्यंक्टेश्वर राव, राजनांदगांव
प्रश्न— **प्रमोशन कब होगा?**
उत्तर— थोड़ा विलम्ब सम्भावित है।

देवेन्द्र कुमार, दिल्ली
प्रश्न— **क्या पुत्र-लाभ संभव है?**
उत्तर— सम्भावनाएं क्षीण हैं।

राजकुमारी ठाकुर, भागलपुर
प्रश्न— **वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा?**
उत्तर— सुखी व निर्विघ्न।

सनु कुमार तिवारी, कलकत्ता
प्रश्न— **सफलता किस क्षेत्र में? रत्न बतायें।**
उत्तर— पैतृक व्यवसाय में। पन्ना रत्न।

धनंजय कुमार श्रीवास्तव, गोरखपुर
प्रश्न— **सरकारी नौकरी कब तक मिलेगी? अनुकूल रत्न बताएं।**
उत्तर— सरकारी नौकरी का योग क्षीण है। चन्द्रमणि धारण करें।

मुकेश काजवे, धार
प्रश्न— **किस साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर— तांत्रोक्त गुरु साधना में।

सविता महान्ती, भद्रख (उड़ीसा)
प्रश्न— **मेरे सुख का संसार कब बसेगा?**
उत्तर— गुरु साधना करें, शीघ्र लाभ मिलेगा।

मूर्ति चन्द्रवंशी, भिलाई
प्रश्न— **मेरी नौकरी लगेगी अथवा नहीं?**
उत्तर— तांत्रोक्त गणपति साधना सम्पन्न करें, शीघ्र लाभ होगा।

अनुराधा चौधरी, रांची
प्रश्न— **शिक्षा समाप्ति के बाद नौकरी मिलेगी?**
उत्तर— कुछ व्यवहारिक कठिनाइयां बाधा डालेंगी।

शिखा द्विवेदी, वाराणसी
प्रश्न— **क्या मैं मेडिकल में सफल रहूंगी?**
उत्तर— संभावनाएं कम हैं।

रमेश आर० जोलानी, ठाणे
प्रश्न— **क्या वकालत चलेगी?**
उत्तर— हां।

गजेन्द्र खैरवाल, बैतूल
प्रश्न— **व्यापार, खेल, नौकरी में से सफलता किस में?**
उत्तर— खेल में।

योगी शर्मा, ग्वालियर
प्रश्न— **किस साधना के योग प्रबल हैं, छायापुरुष अथवा अप्सरा?**
उत्तर— छाया पुरुष साधना।

संतोष कुमार वर्मा, नरसिंहगढ़
प्रश्न— **क्या नवीं कक्षा में सफलता मिलेगी?**
उत्तर— सफलता संदिग्ध है।

श्री शक्ति कुमार, कोरबा
प्रश्न— **क्या मेरी नौकरी स्थायी होगी?**
उत्तर— हां।

मनोहर राम, नैनीताल
प्रश्न— **पदोन्नति कब तक होगी?**
उत्तर— अगले वर्ष के अंत तक।

संतोष कुमार शर्मा, जमशेदपुर
प्रश्न— **उचित रत्न बताएं।**
उत्तर— पन्ना।

जयशंकर प्रसाद, मुजफ्फरपुर
प्रश्न— **मुझे ऋण-मुक्ति कब तक मिलेगी?**
उत्तर— अभी तीन वर्ष कठिन हैं।

श्रीमती रश्मि मंसारे, भोपाल
प्रश्न— **विभिन्न प्रकार के स्वप्न आते हैं, निदान बताएं?**
उत्तर— अलौकिक गुटिका धारण करें।

कु० कल्पना अग्रवाल, विलासपुर
प्रश्न— **क्या मैं डॉक्टर बन सकूंगी?**
उत्तर— हां।

प्रदीप कुमार अग्रवाल, बिजनौर
प्रश्न— **विवाह कब तक होगा?**
उत्तर— इसी वर्ष।

कूपन क्रमांक :- १२१ (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्...............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-...

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतम पुरा,
नई दिल्ली-११००३४

मेष - मन में उत्साह रहेगा, जबकि कार्यो की भी अधिकता रहेगी। द्वितीय सप्ताह में कार्य की अधिकता से स्वास्थ्य में उतार - चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। जीवन साथी से विचारों से पूर्णतयः तालमेल रहेगा। सन्तान की ओर से किंचित खेद सम्भावित। प्रतिष्ठा के प्रति सतर्क रहें। शत्रु पक्ष गुप्त रूप से प्रतिष्ठा पर क्षति पहुंचाने वाली बातें कर सकता है। धन का संचय करें। यह समय जमा पूंजी निर्मित करने के शुभ योग से युक्त है अतः इस समय का लाभ अवश्य उठाएं। यात्राएं सम-फलदायक ही रहेंगी। मित्र वर्ग की ओर से पूर्ण सहयोग मिलेगा। राज्य पक्ष की ओर से कुछ व्यवहारिक बाधाएं आ सकती है जो माह के अन्त तक स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी। व्यवसायी वर्ग के लिए एक श्रेष्ठ माह।

वृषभ - मन में किंचित तनाव व उग्रता बनी रह सकती है। गुप्त चिंताओं की प्रबलता रहेगी, जिन्हें व्यक्त न कर पाने के कारण मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है। सहयोगियों पर विश्वास कर सकते हैं। धन से सम्बन्धित समस्याओं का इस माह कोई उचित समाधान प्राप्त नहीं होगा। पारिवारिक जीवन में तनाव बना रह सकता है। यात्राएं लाभप्रद रहेंगी तथा स्थान परिवर्तन के द्वारा मानसिक तनाव समाप्त करने की दृष्टि से लाभप्रद भी। परिस्थितियों वश द्वंद्वों में बार-बार उलझना पड़ सकता है। यथा सम्भव अपने- आपको द्वंद्वों में पड़ने से बचाएं। राज्य पक्ष की ओर से अनुकूलताएं रहेंगी।

मिथुन - एक सामान्य माह जबकि कोई उथल - पुथल नहीं रहेगी तथा जीवन सामान्य रूप से सुव्यवस्थित ढंग से चलता रहेगा। यद्यपि व्यवसायी वर्ग को व्यापार में थोड़े उतार- चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है किन्तु हानि की सम्भावना नहीं है। धन को नियोजित करने के लिए यह एक अनुकूल माह है। पारिवारिक, सामाजिक चिन्ताओं से मुक्त होने के कारण आप इस दिशा में शांत चित्त होकर उचित योजना का निर्माण कर सकते हैं किन्तु निर्माण कार्य में रूचि न लें। परिवार के सदस्यों की सलाह को महत्व दें। स्वास्थ्य को बस सामान्य रूप से ही अच्छा कहा जा सकता है। माह के तृतीय सप्ताह में मानसिक दौर्बल्य का सामना करना पड़ सकता है। प्रेम- प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी किन्तु विवाह से सम्बन्धित किए जा रहे प्रयासों में विलम्ब बना रहेगा।

कर्क - मनोनुकूल अवसर मिलेंगे, जिससे मन में भावनाओं की प्रबलता रहेगी। व्यवहारिकता के प्रति उपेक्षा रहेगी तथा सुखद कल्पनाओं में विचरण करने की प्रवृति बलवती बनी रहेगी। प्रेम- प्रसंगों में प्रगाढ़ता आयेगी। विवाहित स्त्री-पुरुष भी जीवन में सघनता और सन्तोष अनुभव करेंगे। सुख - सुविधाओं की सामग्री संजोने में भी सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन प्राप्ति के प्रबल योग है। व्यवसायी वर्ग के लिए यह माह अनुकूल नहीं है। यात्राओं को यथा सम्भव न करें, हानिप्रद सिद्ध होंगी। कार्यालय में सहयोगियों का व्यवहार उपेक्षा पूर्ण रहेगा। शत्रुपक्ष की गतिविधियां समाप्त होंगी।

सिंह - पिछले कुछ समय से चले आ रहे कार्यों को व्यवस्थित रूप देने में सफल होंगे जिससे मन में शांति और सन्तोष का अनुभव होगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी किन्तु साथ ही साथ विरोधियों के कुचक्रों का सामना भी करना पड़ सकता है। आय की दृष्टि से यह माह उल्लेखनीय तो नहीं कहा जा सकता है लेकिन धन को विभिन्न योजनाओं में नियोजित करने की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय अवश्य है। राज्यपक्ष की ओर से योजनाओं के प्रति बाधा उत्पन्न हो सकती है। शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट से सम्बन्धित व्यक्तियों को विपरीत स्थितियां देखनी पड़ सकती है। परिवार के प्रति व्यस्तता के कारण उपेक्षा जैसी स्थिति बनी रहेगी जिससे पारिवारिक दृष्टि से खींचतान का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या - पारिवारिक दायित्वों में उलझ कर ही यह पूरा माह व्यतीत हो जायेगा। स्वयं का स्वास्थ्य भी खेद जनक रहेगा तथा विरोधी विचारों की प्रबलता बनी रहेगी। पूरे माह एक अव्यक्त सा तनाव बना रहेगा तथा आमोद-प्रमोद के अवसर उपलब्ध नहीं होगे। जमापूंजी की स्थिति में सुधार होगा। आय के जिस नये स्रोत को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं उसमें सफलता संदिग्ध है। शेयर मार्केट से लाभ मिल सकता है। शत्रु पक्ष शांत रहेगा। राज्याधिकारी सहयोगी सिद्ध होंगे। प्रेम - प्रसंगों में शिथिलता आएगी। सम्पूर्ण रूप से विघ्नों के नाश के लिए गणपति आराधना आवश्यक है।

त्रिकाल संध्या विधान

गायत्री साधना

“ वर्तमान युग में नियम पूर्वक संध्या की जानकारी बहुत कम लोगों को रह गई है, जब नित्य प्रति पूजा करनी है तो क्यों नहीं विधि पूर्वक ही की जाए, संध्या, गायत्री उपासना और शक्ति उपासना का श्रेष्टतम रूप है, जिस घर में नित्य गायत्री साधना संध्या विधि से सम्पन्न होती है वहां आदि शक्ति अपनी समस्त शक्तियों सहित उस घर को आलोकित करती है। ”

ध्या का तात्पर्य समीपता से है, सर्दी-गर्मी की ऋतुओं के मिलन की तरह, दिन और रात के मिलन को संध्याकाल कहा जाता है, यह समय पूजा, उपासना और आत्म साधना के बहुत ही उपयोगी माना गया है, इस समय का किया गया थोड़ा श्रम भी अधिक लाभदायक होता है, इस तरह दिन और रात्रि के संधिकाल में पाप निवृत्ति और ब्रह्मवर्चस्व के लिए जो कर्मकांडात्मक द्विजों के लिए अत्यन्त आवश्यक नित्य कर्म माना गया है, उसे शास्त्रों का इतना उच्च मूल्यांकन प्राप्त है, कि इसकी अवहेलना उचित नहीं है।

संध्या की व्युत्पत्ति इस प्रकार है— सम-ध्यै-जन आप, “ध्यै” धातु का अर्थ होता है— ध्यान करना, अतः संध्या का अभिप्राय हुआ- तन, मन और वाणी से अपने आराध्य के समीप बैठना, उनसे एक रूपता प्राप्त करना, त्रिपदा की तीन रूपों में त्रिकाल संध्या का विधान है, प्रातः काल की ब्राह्मी, मध्याह्न की वैष्णवी और सायंकाल की शांभवी कही जाती है, इनमें जो निर्देश प्रेरणाएं एक समता भरी पड़ी हैं, उन्हें आस्तिकता, आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता कहा गया है।

संध्या का समय शास्त्र मर्यादित है, शास्त्रों में इसके नियमों पर भी प्रकाश डाला गया है।

उत्तम तारकोपेता मध्यमा लुप्तारका।
कनिष्ठा सूर्य सहिता प्रातः संध्या त्रिधा स्मृता।।

-देवी भागवत

प्रातःकालीन संध्या तारों के रहते हुए की जाती है, यदि ब्रह्म मुहूर्त में ही इसे सम्पन्न कर लिया जाए तो उत्तम माना गया है, तारे लुप्त होने पर उसे मध्यम और सूर्योदय होने पर कनिष्ठ होता है।

सायंकालीन संध्या के लिए—

उत्तमा सूर्य सहिता मध्यमा लुप्त सूर्यका।
कनिष्ठा तारकोपेता सायं संध्या त्रिधास्मृता।।

- देवी भागवत

सायंकाल की संध्या सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले की जाती है, तब उसे श्रेष्ठ माना जाता है, तारों के निकलने से पहले मध्यम और तारों के दिखाई देने पर कनिष्ठ मानी जाती है।

विधि

साधक का कर्त्तव्य है, कि प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौच, स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें, पवित्र मन से एकान्त स्थान अथवा अपने पूजा कक्ष में संध्या के लिए उपयुक्त आसन पर बैठें, तीन काल की संध्या में पूर्व, ईशान और उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए, गायत्री साधना और सूर्योपस्थान के लिए प्रातःकाल पूर्व और सायंकाल पश्चिम दिशा की ओर मुख करना चाहिए, संध्या के लिए साधकों के पास यज्ञोपवीत होना आवश्यक है।

पवित्रीकरण

पवित्रीकरण के लिए बाएं हाथ की हथेली में जल लें और दाहिने हाथ से ढक कर निम्न मंत्र बोलें, मन्त्र पूरा हो जाने पर उस जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने शरीर पर छिड़क दें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

तत्पश्चात् अपने हाथ में तीन बार जल ले कर आचमन क्रिया सम्पन्न करें, मस्तिष्क में स्थिर चिद्रूपिणी महामाया दिव्य तेज शक्ति का ध्यान करते हुए अपने सिर पर अपना दाहिना हाथ रखें।

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए प्राणायाम करते समय बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की कोहनी रखें और उंगलियां बन्द करके केवल अंगूठे से नाक का दाहिना स्वर बन्द कर लें, और बाएं से श्वास खींचते समय तेजस्वी प्राण का ध्यान करना चाहिए, कुछ देर श्वास अन्दर रोके रखें, तत्पश्चात् कनिष्ठिका एवं मध्यमा उंगलियों से नाक का बायां छिद्र बन्द करके दाहिने श्वास छोड़ देना चाहिए, श्वास छोड़ देना चाहिए, श्वास बहुत ही शनैः शनैः छोड़ते समय भी निम्न मंत्र को मन ही मन जपते रहना चाहिए—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्
तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

न्यास

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की समूह बद्ध पांचों उंगलियों से निम्न मंत्रों के साथ शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करते समय ऐसी भावना रखनी चाहिए कि वे सभी अंग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजस्वी बन रहे हैं—

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु (मुख को पहले दाहिने फिर बाएं)
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षु रस्तु (दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु (दोनों बाहों को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु (दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽगांनि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।

(शरीर के सभी अंगों पर जल छिड़कें)

अब पृथ्वी माता का ध्यान करें, सामने जल, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाएं तथा धूप-दीप अर्पित करें एवं हाथ जोड़ कर वेद माता गायत्री का आह्वान करें तथा गायत्री प्रतिमा अथवा यंत्र पर अक्षत चढ़ाएं, अब आसन पूजा, स्नान और फिर **"गायत्री यंत्र-चित्र"** तथा प्रतिमा पर चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप अर्पित करें और मां गायत्री के आगे एक पात्र में आचमन हेतु जल रखें।

अब गुरुदेव का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र बोलना चाहिए—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

इसके बाद एक माला गुरु मंत्र की जप करनी चाहिए—

गुरु मंत्र

।।ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

चेतना मंत्र

।।ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः।।

इसके बाद **गायत्री माला** से गायत्री मंत्र की दो माला जप करना अनिवार्य है, एक माला आत्म कल्याण के लिए और दूसरी माला विश्व कल्याण के लिए।

प्रातःकाल ब्रह्म रूप गायत्री का ध्यान करें—

ॐ बालांविद्यान्तु गायत्री लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरीं तथा।।

कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहन संस्थिताम्।।
ब्रह्माणीं ब्रह्मलैवत्याम् ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।
म त्रेणावाहयेद्देवीमायन्तीं सूर्यमण्डलात्।।

ब्रह्मलोक में निवास करने वाली, कन्या की तरह रूप, शील तथा गुण से सम्पन्न, हंसारूढ़, लाल वर्ण, चार गुख और चार हस्त वाली, रक्तवसना, हाथों में कमण्डल, पुस्तक, दंड और रुद्राक्ष की माला लिए हुए आदित्य मंडल से आने वाली गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। शिवो रजसे शिवातुम्।।

मध्याह्न काल में विष्णु रूप गायत्री का ध्यान करें—

ॐ मध्याह्नें विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्य मण्डल संस्थिताम्।।

विष्णुरूपा हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म लिए गरुड़ पर स्थित पीतवसना युवती के रूप में यजुर्वेद से युक्त सूर्य मण्डल में स्थित गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

सायंकाल में शिव रूप गायत्री का ध्यान—

ॐ सायाह्ने विश्वरूपांच वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

शिव रूप, हाथों में त्रिशूल, डमरू, पाश और पात्र धारण किए हुए वृषभ रुढ़ा सूर्य मण्डल में स्थित, सामवेद से युक्त गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

ध्यान विधि

पालथी मार कर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन लगा कर बैठें, मेरुदण्ड सीधा रखें, आंखें अर्द्धनिमिलित, ध्यान नासाग्र पर, भावना यह कि सारी सृष्टि में प्रलय की स्थिति हो गई है, ऊपर विस्तृत नील गगन है और नीचे जलप्लावन। जल के सिवा और कुछ भी नजर नहीं आता है, सिर्फ जल के ऊपर कमल पत्र पर एक नवजात शिशु लेटा अपने पैर के अगूंठे को मुख में डाले सुधारस का पान कर रहा है, यह कमल पत्र जल के ऊपर तैरता जा रहा है इस कल्पना चित्र को भावना लोक में भली-भांति स्थिर करने पर बहुत दूर तक एक ज्योति पिण्ड देखना चाहिए, सूर्य की तरह प्रकाशित होने वाले नक्षत्र के रूप में गायत्री का श्रेष्ठ ध्यान है, ध्यान के साथ यह भावना रखनी चाहिए कि जिस तरह सूर्य की किरणों में गर्मी, गतिशीलता और तेजस्विता होती है, इसी तरह गायत्री के ज्योतिपिण्ड में से सद्‌बुद्धि, सात्विकता और सशक्तता की किरणें निःसृत हो रही हैं और मैं इन शक्तियों का एक पुञ्ज वनता जा रहा हूं।

कल्पना नेत्रों से यह अनुभव करना चाहिए कि मैं निरन्तर विराट पुरुष को अपने चारों ओर देख रहा हूं, मुझमें तेजस्विता, श्रेष्ठता और दिव्यता बढ़ती जा रही है, उसके संरक्षण में गन्तव्य की ओर मैं बढ़ता चला जा रहा हूं आसुरी प्रवृत्तियां मेरे पास आने का साहस नहीं कर पा रही हैं, मैं प्रसन्नचित्त हूं, मेरा रोम-रोम प्रसन्नता और सन्तोष से खिल रहा है, दुःख और चिन्ता की रेखाएं मेरे मस्तक पर नहीं हैं, मैं हर प्रकार से सुखी हूं, क्योंकि मेरी बुद्धि में सात्विकता, तेजस्विता, दिव्यता और सशक्तता है।

उपयुक्त संकल्प का मनन धीरे-धीरे करते रहना चाहिए, ताकि इन विचारों की स्थायी छाप मन पर पड़ती रहे।

विसर्जन

हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए देवी की प्रतिमा पर छिड़क दें।

ॐ उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यानुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम्।।

सूर्यार्घ्य

जलपात्र के बचे हुए जल में अक्षत, कुंकुम और पुष्प डाल लें, फिर सूर्य के सामने जाकर इस प्रकार अर्घ्य दें, कि ऊपर से गिरता हुआ जल आपके चेहरे और हृदय के समानान्तर हो, जिसकी सूर्य रश्मियां भेदन करते हुए आपके चेहरे और हृदय का भी स्पर्श करे। साथ में निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ सूर्य देव सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पये।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

मध्यरात्रि में भी एक संध्या की जाती है, जिसे तुरीय संध्या कहते हैं, लेकिन यह सभी साधकों के लिए अभीष्ट नहीं है, साधना की उच्चतर स्थिति तथा विशिष्ट गुरु कृपा प्राप्त साधक ही इसे गुरु आज्ञा से करते हैं।

इस प्रकार साधारण साधकों को कम से कम नित्य प्रति प्रातः एवं सायं संध्या करना नितान्त आवश्यक एवं जीवन की अनिवार्य आवश्कता है।

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यानमुच्यते।
ब्रह्मवर्चस रूपा च नातः किंचित् ब्रह्मरतम्।।

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही ध्यान और साधना है, गायत्री ब्रह्मवर्चस्व रूपा है, इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधना और कोई नहीं।

जब गुरु कृपा से प्राण बचे

साधक एवं गुरु के सम्बन्ध केवल आध्यात्मिक जगत के ही सम्बन्ध नहीं होते, वरन् गुरु इसके सम्पूर्ण जीवन का भार अपने ही कन्धों पर ही ले लेते हैं। यह बात और है कि साधक कभी इस बात की अनुभूति कर पाता है और कभी नहीं, किन्तु इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि व्यक्ति जिस दिन से दीक्षा प्राप्त करता है उसी दिन से उसका व गुरु का आत्मीय सम्बन्ध बन जाता है।

यर्थाथ में सद्गुरु अपने स्वरूप को माया के आवरण में छुपाये रहते हैं वे अपने शिष्य अथवा साधक पर यह स्पष्ट ही नहीं होने देते कि वे किस प्रकार से उसके पल - पल के साक्षी बन रहे हैं, पग- पग पर उसके जीवन की रक्षा कर रहे हैं और विभिन्न उपायों से उसके जीवन का पथ निष्कण्टक कर रहे हैं, यदि वे ऐसा न करें माया का आवरण न डालें तो उनका सामान्य क्रियाकलाप और जगत का व्यापार चल ही नहीं सकता क्योंकि फिर तो उनका कोई भी शिष्य उनकी करुणा में ही भीग कर उनका साहचर्य छोड़ कर जा ही नहीं सकेगा। व्यवहारिक जगत में यह एक कठिन स्थिति हो सकती है। योग्य साधक अपने भौतिक जीवन को जीते हुए भी, घर-परिवार की ज़िम्मेदारियों को पुरा करते हुए भी गुरुदेव द्वारा प्राप्त संकेतों के माध्यम से अपने- आप को आध्यात्मिक व साधनात्मक पथ पर गतिशील बनाए रखते हैं। वे कर्तव्य और भावविह्वलता में उचित सामंजस्य बनाए रखते हैं। किन्तु सामान्य साधक कदाचित ऐसा नहीं कर सकते।

सद्गुरुदेव वास्तव में व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन के भार को ही ग्रहण करते हैं। अपने साधक अथवा शिष्य के भौतिक जीवन के प्रति उनका कोई दायित्व नहीं होता लेकिन वे उसे भी दायित्व मान कर ग्रहण कर लेते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि मेरा शिष्य अभी इतना सक्षम नहीं है जो भौतिक व आध्यात्मिक दोनों पथ पर एक साथ चल सके। यह अहैतुकी कृपा होती है अपने शिष्य एवं साधक पर।

दूसरी ओर जिस किसी ने भी निश्छल भाव से अपने जीवन को पूज्य गुरुदेव को सौंप दिया है और निष्कपट भाव से उनकी कृपा को अनुभूत किया है उसने पाया ही है कि न केवल जीवन में आपदाओं से वरन् छोटी से छोटी बात में भी वे उसके सहायक, सखा, मार्गदर्शक सभी कुछ बन कर आते ही रहते हैं भले ही वे किसी रूप में सहायक हों, किसी भी रूप में आएं। श्रद्धावान व्यक्ति पग- पग पर गुरु- कृपा का अनुभव करता ही रहता है। जबकि तर्क युक्त व्यक्ति उसे परिस्थितियों द्वारा निर्मित संयोग कह कर एक प्रकार से गुरु- कृपा को नकार देता है।

अनेक साधकों एवं शिष्यों ने अपने जीवन में जिस प्रकार की अनुभूतियां प्राप्त की हैं अपने भौतिक जीवन को सुखमय बनाया है और जिस प्रकार आध्यात्मिकता के क्षेत्र में पूर्णता के साथ अग्रसर हुए हैं उसकी झलक हमने अपने पाठकों के सामने "साधक साक्षी हैं" स्तम्भ के माध्यम से रखनी चाही, जिनमें ऐसी घटनाएं रहीं जो साधकों के जीवन में साधना के विकास के साथ - साथ अथवा दीक्षा प्राप्ति के बाद घटीं तथा साधकों ने एक क्रमबद्ध रूप में जीवन के लक्ष्य, निश्चिंतता और संतुष्टि प्राप्त की।

किन्तु जीवन में कुछ क्षण ऐसे भी होते हैं जब क्षण मात्र में ही बहुत कुछ घटित हो जाता है, क्षण मात्र में ही जीवन का निर्णय हो जाता है या और भी स्पष्ट हो जाता है या और भी स्पष्ट कहें तो जीवन और मृत्यु के बीच का फासला कम से कमतर होता हुआ समाप्त भी हो सकता है। लेकिन जो पूज्य गुरुदेव के शिष्य हैं उन्हें ऐसे अवसरों पर एक ऐसा अभेद रक्षा कवच मिला है जिसे दैवी वरदान से कम नहीं कहा जा सकता। हमें इस बात का ज्ञान विगत दिनों में साधना शिविरों के समय पाठकों, शिष्यों एवं साधकों से भेंट में सघनता से मिला।

अभी कुछ ही दिन पूर्व इलाहाबाद में जब 'हीरक जयन्ती' कार्यक्रम हुआ तब **जगदलपुर (बस्तर) के साधक श्री राधाकृष्ण कुशवाहा जी** ने जिस प्रकार से एक लोमहर्षक घटना का विवरण सुनाया उससे न हम केवल हतप्रभ हो गए वरन् गुरु-चरणों में नतमस्तक हुए बिना भी नहीं रह सके।

पिछले वर्ष श्री कुशवाहा जी ने जगदलपुर के समीप एक ग्रामीण अंचल के निवासी श्री शेंडे जी को पत्रिका सदस्य बनाया था और अपनी भावनाओं के कारण श्री शेंडे जी का सम्पूर्ण परिवार शीघ्र ही गुरु के प्रति समर्पण से भर गया। यद्यपि उन्होंने न तो अभी तक पूज्य गुरुदेव का साक्षात्कार किया है न सामान्य दीक्षा ही ली है। इसके बाद भी वे प्रति गुरुवार सम्पूर्ण विधि- विधान से पत्रिका में प्रकाशित तांत्रोक्त गुरु पूजन करते रहे। पिछले वर्ष मई के अन्तिम सप्ताह की बात है श्री कुशवाहा जी किसी कार्यवश उस क्षेत्र में गए थे और वहां उन्होंने रात्रि विश्राम के लिए श्री शेंडे जी के घर में ही रुकना उचित समझा। उस दिन गुरुवार था अतः सभी ने मिलकर. संयुक्त रूप से गुरु पूजन किया और रात्रि विश्राम की ओर अग्रसर हुए। वर्षा का आगमन हो चुका था तथा श्री शेंडे जी अपने घर के रख-रखाव से थोड़े चिन्तित थे। उनका घर ग्रामीण परम्पराओं के अनुसार कच्चा ही था और इससे भी अधिक उन्हें अपने परिवार
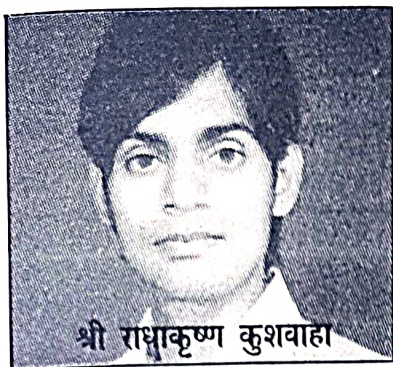
श्री राधाकृष्ण कुशवाहा

पर आये दिन होने वाले मूठ प्रयोगों से बहुत व्याकुलता रहती थी। यद्यपि गुरु- कृपा से उनको कोई गम्भीर क्षति नहीं हो सकी थी।

रात्रि का लगभग ग्यारह बज गया होगा। बाहर वर्षा का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा था। श्री शेंडे जी, उनकी धर्मपत्नी, सात वर्षीया पुत्री और एक ग्यारह वर्षीय पुत्र के साथ श्री कुशवाहा जी भी भूमि पर शयन करने की ओर अग्रसर हो चुके थे। रात्रि के लगभग बारह या उससे कुछ और अधिक समय रहा होगा कि श्री शेंडे जी का पुत्र चीखता हुआ उठ बैठा। जब उससे कारण पूछा गया तो उसने बताया कि उसके शरीर पर से अभी- अभी सर्प निकल कर गया है। यह सुनते ही पूरा परिवार भय से भर गया और टॉर्च व लालटेन की मदद से घर का कोना कोना छान मारा गया। लेकिन सांप का कहीं कोई पता नहीं चला। अन्त में यही निर्णय लिया गया कि किसी जोखिम को उठाने के बजाय यदि रात्रि शयन पड़ोसी के घर में किया जाय तभी सुरक्षित रहेगा। यह विचार कर श्री शेंडे जी का परिवार और श्री कुशवाहा जी बगल के घर में चले गए। पड़ोसी के घर में लेटे हुए बमुश्किल पांच मिनट हुए होंगे कि अचानक आसमान में जोर से बिजली कड़की तथा देखते ही देखते श्री शेंडे जी का घर धराशायी हो गया। एकाएक समझ में आ गया कि यह तो गुरु कृपा थी जो इस बहाने वे अपने घर से बाहर आ गए। श्री शेंडे जी और उनका सारा परिवार इस घटना को पूज्य गुरुदेव की प्रत्यक्ष कृपा ही मानता है। वे इसे तर्क की कसौटी पर एक घटना मात्र ही नहीं मानते वरन् इसे प्रकारान्तर से पूज्य गुरुदेव की कृपा ही मानते हैं। श्री शेंडे जी को यहां तक विश्वास है कि वास्तव में उनके घर पर जो बिजली गिरने के रूप में आघात हुआ वह उनके विरोधियों द्वारा कराया गया तांत्रिक प्रयोग ही था, जिसमें आर्थिक हानि तो हुई लेकिन विरोधियों का मुख्य उद्देश्य परिवार को समाप्त करना सम्भव नहीं हो सका। कुछ व्यक्तिगत कारणों से श्री शेंडे जी अपना परिचय नहीं देना चाहते हैं। किन्तु श्री राधाकृष्ण कुशवाहा जी तो इस घटना के साक्षी रहे ही हैं और कोई भी पाठक उनसे मिलकर इस घटना की सत्यता को जांच सकता है।

यदि देखा जाए तो अनेक साधकों को इस प्रकार की अनुभूतियां हुई हैं और उन्होंने अनुभव किया है कि पूज्य गुरुदेव प्रतिक्षण उनके साथ सूक्ष्म अथवा प्रछन्न रूप में रहते ही हैं। जिससे उनके जीवन की सुरक्षा बनी रह सके। **यमुना नगर के एक साधक श्री कुलवन्त मित्तल जी** को भी इसी प्रकार की अनुभूति विगत दिनों में हुई, जिसका विवरण हम ज्यों का त्यों उनके ही शब्दों में दे रहे हैं. . .

". . . उस दिन भी मैं हर रोज की तरह रात को पत्नी सहित बैड पर सो रहा था, रात को ख्वाब में परमपूज्य गुरुदेव जी नजर आए, मानो जैसे कि मैं कहीं गुरुदेव जी के संग किसी बहुत ही हरी- भरी जगह पहाड़ी स्थल पर रमणीक जगह का अवलोकन कर रहा था। गुरुदेव जी खुद अपने हाथों से इशारे कर- करके मुझे कुछ समझा रहे थे। अचानक गुरुदेव जी कहीं एकदम से गायब हो गए। मैं घबरा गया कि गुरुदेव कहां गए। घबराहट इतनी अधिक थी कि मेरी नींद खुल गई। नींद खुलते ही अचानक मैंने बैड से नीचे जम्प लगा दी और पता नहीं क्यों फैन का स्विच बंद कर दिया। ठीक उसी सेंकण्ड में मेरी पत्नी भी उसी अन्दाज में एकदम से उठी और उन्होंने बैड से नीचे जम्प लगा दी। पत्नी के नीचे कूदते ही अचानक पंखें में जो डोरी पलंग से आयी हुई थी वह पंखे के पंख के साथ
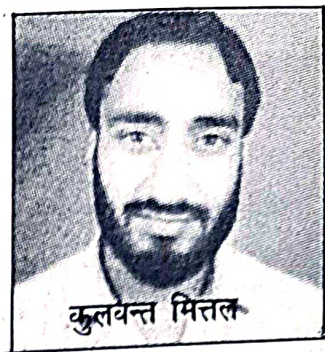
कुलवन्त मित्तल

लिपट गयी और उसके दोनों सिरे नंगे हो गए। वह ठीक वहां पर गिरी जहां कि हम बैड के बीचों- बीच सोए हुए थे। नंगी तार साथ ही उसमें करंट प्रवहित देखकर हम दोनों की रूह फना हो गई। कुछ खुद को सम्हालने के बाद पत्नी ने अचानक ही सवाल किया कि आप इस दुर्घटना के घटित होने के मात्र चन्द सेकण्ड पहले कैसे उठ गए? मैंने कहा— जब गुरुदेव साथ हैं तो फिर कोई दुर्घटना हो ही कैसे सकती है। मुझे तो साक्षात् पूज्य गुरुदेव जी ने ही उठाया है। तभी मुझे पत्नी का ख्याल आया कि आप कैसे उठ गईं? पत्नी का उत्तर था कि मुझे अचानक काफी शोर सा सुनाई दिया और ऐसा लगा कि जैसे यह शोर पंखे से हो रहा है। साथ ही मेरे दिल में यह बात आयी कि पंखा हमारे ऊपर गिरने वाला है। मेरी नींद खुली तो देखा आप एकदम नीचे जम्प लगा गए और मैंने भी जम्प लगा दी। बस यह सुनकर अनायास ही मेरे मुख से निकल पड़ा —

मौत भी घबराती है,
जब गुरुदेव सहाई होए
बाल भी बांका न कर सके,
चाहे जग बैरी होए।

फिर हम दोनों ने पूज्य गुरुदेव जी का आभार प्रकट किया और प्रार्थना की, कि गुरुदेव अपनी कृपा दृष्टि हमेशा ऐसे ही बनाए रखना।"

वस्तुतः इस तरह की घटनाएं अनेक हैं और आवश्यकता है तो केवल अपने मन की आंखें खोलकर देखने की, फिर न गुरु दूर हैं और न गुरु की कृपा ही हम से अदृश्य रह सकती है।

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

यह माह राजनीतिक दलों के आन्तरिक उथल - पुथल से भरा रहेगा और प्रत्येक राजनीतिक दल अपने संगठन की पुनर्विवेचना करेगा। जनता दल की स्थिति निरन्तर मजबूत होती जाएगी तथा कांग्रेस (आई) के विकल्प के रूप में भारतीय जनता पार्टी के स्थान जनता दल का स्थान प्रमुख होगा। किन्तु भविष्य में कोई साझा संगठन अथवा तालमेल जैसी स्थिति नहीं रहेगी।

राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद चिन्ता का विषय बना रहेगा। कश्मीर की स्थिति में पुनः चिन्ताजनक मोड़ आएगा अर्थात् सामूहिक नर संहार जैसी घटनाएं बंढ़ेगीं तथा पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था अपने संगठन का जाल और भी अधिक व्यापक कर लेगी। इसके द्वारा दिल्ली के आसपास भी गम्भीर घटनाएं घटित करने का प्रयास किया जा सकता है। प्रशासन इस तरह के घटनाओं को रोकने में निकम्मा सावित होगा।

प्रादेशिक स्तर पर राज्यों में भी उथल - पुथल व्याप्त होगी। श्री मुलायम सिंह अपनी छबि को तीव्रता से वदलेंगे। बिहार में श्री लालू यादव राजनीतिक कारणों से तो नहीं किन्तु जातिगत हिंसा के कारण जनाधार खो बैंठेगे। जवकि प्रांतों में व्याप्त समुदायों का तनाव ढीला पड़ेगा। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री को गम्भीर आरोपों का सामना करना पड़ेगा तथा नर्मदा जल सम्बन्धी विवाद से भी वे संकट पूर्ण स्थिति में जा पड़ेंगे। श्री दिग्विजय सिंह के विरोधी तीव्रता से सक्रिय होंगे। दक्षिण भारत के राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियों के संगठन में व्यापक उथल - पुथल व कलह का वातावरण रहेगा।

आतंकवादी के समस्या के कारण तथा आतंकवादियों द्वारा तराई क्षेत्र को आश्रय स्थल बनाए जाने के कारण नेपाल से राजनीतिक स्तर पर तनाव उत्पन्न होगा तथा ठीक यही स्थिति उत्तर पूर्व के उग्रवादियों को लेकर म्यांमार (बर्मा) के साथ भी रहेगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कश्मीर सम्बन्धी विवाद ठंडा रहेगा। जबकि पाकिस्तान इसके आधार पर व्यापक समर्थन व अस्त्र- शस्त्र एकत्रित करने में सफलता पायेगा। विशेषतः भारत पर दबाव डालने के लिए विश्व में आणविक अस्त्र - शस्त्र के परिसीमन को लेकर पुनः व्यापक बहस छिड़ेगी किन्तु भारत इससे अप्रभावित ही रहेगा। कूटनीतिक स्तर पर यूरोपिय देशों में भारत एवं जर्मनी के सम्बन्ध उल्लेखनीय प्रगति की ओर अग्रसर होंगे।

शेयर मार्केट

इस माह शेयर मार्केट में तेजड़ियों का बोलबाला रहेगा तथा व्यापार जोखिम से भरा रहेगा। स्पेसिफाइड शेयर्स पुनः अच्छे स्थान पर रहेंगे। जबकि नए उद्योगों के लिए स्थिति संकट पूर्ण हो सकती है। कुछ उद्योगों के समक्ष साख का प्रश्न भी आ खड़ा होगा। यद्यपि यह स्थिति अस्थायी ही रहेगी किन्तु इन परिवर्तनों से शेयर होल्डरों के मानसिकता में परिवर्तन आने की सम्भावना है और वे पुनः स्पेसिफाइड शेयरर्स की ओर झुकते दिखायी देंगे, साथ ही शेयर मार्केट में रूचि लेने वाला नया वर्ग सामने आएगा जिससे शेयर मार्केट की हलचल और बढ़ेगी। अच्छे मानसून की स्थिति का भी शेयर मार्केट पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। स्पेसिफाइड शेयरर्स में ए. सी. सी., बजाज ऑटो, टिस्को, एस्कोर्टस, हिन्द लीवर्स, हिन्द मोटर्स, कोलगेट एवं ग्लैक्सो तेजी से उछाल लेंगे।

द्वितीय स्तर पर गुजरात अल्कलीज, हिन्डाल्को, आई. टी. सी., जे. पी. इन्डस्ट्रीज एवं नेस्ले भी अच्छा व्यापार देंगे जबकि रेमण्ड, रेकिट एंड कोलमेन, एस. के. एफ., फाइजर, मोदी रबर एवं रिलायंस की स्थिति बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती।

नान स्पेसिफाइड शेयरर्स में बी. एच. ई. एल., बजाज टेम्पो हेक्सट, होटल लीला, जे. पी. होटल, कायनेटिक होंडा, लखन पाल, रेनबैक्सी, मोदी जिराक्स, नाहर स्पिनिंग एवं नाहर शुगर का नाम लिया जा सकता है। टाटा प्रेस की स्थिति भी मजबूत रहेगी।

किर्लोस्कर फेरस इन्डस्ट्रीज, कजरिया सिरेमिक्स, मेंगलोर रिफायनरी, नागार्जुना फर्टीलाइजर एवं योगी फर्मास्युटिकल्स भी इस माह के उल्लेखनीय शेयर रहेंगे।

कृष्ण . . . नाम लिया नहीं कि मन और प्राण खिंचकर एक अनदेखे सौन्दर्य में जा बंधे। मानो जो आकर्षण कर सके वही तो कृष्ण है। भले ही वे द्वापर युग में हुए हों लेकिन आज तक क्या विस्मृत हो सके? कितने ही नाम धरे गए, कितनी ही उपमाएं दी गईं, कितने ही स्वरूप व्यक्त किए गए लेकिन कृष्ण जो सौन्दर्य के पर्याय बने तो कोई और रूप टिकने ही कहां पाया? ज्ञानीजन-मुनिजन कहते ही रह गए कि वे तो साकार ब्रह्म हैं, साक्षात् ईश्वर हैं, लेकिन रसमयता के आगे फिर कोई भी बात बन ही नहीं सकी **और क्या वह ब्रह्म भी रसमय नहीं . . . "रसौ वै सः" यही तो आप्त वाक्य है उसके लिए भी। फिर उसी के ऐसे साकार रूप की आराधना-साधना और सबसे बड़ी बात कि कामना इतनी प्रबल क्यों न होती?** क्यों नहीं समाज का एक-एक प्राणी उनके सौन्दर्य के आकर्षण में बंध न जाता? वह सौन्दर्य जो

मात्र दैहिक ही नहीं आत्मिक भी था। ऐसा न होता तो आज कई सदियां बीत जाने के बाद भी देश और देश से सुदूर तक हजारों-लाखों "कृष्ण" सुनकर ही सुध-बुध न बिसरा बैठते। क्योंकि कृष्ण मात्र रूप ही नहीं विद्यापति के शब्दों में "अपरूप" हैं अर्थात् ऐसे दैविक सौन्दर्य से भरे प्रेम के पुञ्ज जो अविश्वसनीय जैसे लग रहे हों, जो एक नूर की तरह बिखर रहे हों और जिन के चेहरे से चांदनी जैसी कोई शीतलता उतर कर सभी के हृदय को भिगो दे रही हो- बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी के हृदय को। सभी उसमें आकंठ तृप्त हुए जा रहे हों और इससे भी आगे बढ़कर जो मानव की समस्त वृत्तियों के केन्द्र, उसके हृदय के साक्षात् प्रतिबिम्ब हों, जो मानव हृदय की आन्तरिकता, उसके प्रेम करने की सहज प्रवृत्ति को बिना किसी लाग-लपेट या वर्जना के प्रतिष्ठा प्रदान कर रहे हों। उसे स्वयं अपने आचरण से स्थापित कर रहे हों। जो स्वयं अप्रतिम प्रेमी और साक्षात् प्रेम के ही देव हों।

प्रेम- एक चिरपरिचित शब्द, किन्तु चिरपरिचित होकर भी पराया सा होता जा रहा, क्योंकि उसकी सार्थकता, सौन्दर्य, अस्मिता, यथार्थ बोध समाप्त जो हो चुका है। जो मात्र दैहिक विलास तक सीमित हो चुका है और सीमित दायरों में बंधकर, नैतिकता के चौखटों की भेंट चढ़ चुका है। जिसमें अब कोई भी तरंग शेष नहीं रह गई है, जिसको सुनकर मन में कोई भी हिलोर नहीं उठती, जिसे देखकर बुझ गई आंखों में कोई नई चमक, शरारत या हसरत नहीं उभर पाती।

शब्द नहीं मरा है, भाव मर गए हैं और कितना कुछ समेटे है यह शब्द अपने-आप में! जीवन का सारा सौन्दर्य, जीवन की सारी रसमयता, हिलोर और जीवन्तता। यह एक शब्द ही एक ग्रंथ के समान है, जिसके एक-एक पृष्ठ पर कहीं कामना लिखी है, कहीं समर्पण लिखा है, कहीं मिलन लिखा है, तो कहीं विछोह की लम्बी घड़ियां और फिर पुनर्मिलन के मूक क्षण! सौन्दर्य, लाज, उपालम्भ, आतुर क्षण, व्याकुल क्षण, प्रिय को बस एक बार देख लेने की कामना, प्रिय को किसी भांति संदेश भेजने की कोशिशें या सामने होने पर नयनों की भाषा में मूक बातें- **जो कुछ भी मानव अपने जीवन में मधुरता से व्यक्त कर सके, कृष्ण उसी के प्रतीक हैं, उसी के साकार स्वरूप हैं।** समाज मानो उनके रूप में अपने ही हृदय को प्रस्फुटित होते देख सका, उनकी लीलाओं के साथ-साथ उसके मुरझाये हुये हृदय कमल में बस नये प्राण ही नहीं आये, उसकी एक-एक पंखुड़ी भी खिलती चली गई। उन्हीं के लीला- विलास से तो प्रेम की कला सीखी जा सकी, और उन्हीं से जीवन को सरस बनाने की बातें जानी गईं। कब वे यही कलायें सिखाते हुए हृदय में आकर बैठ गए कुछ पता ही नहीं चला।

कुछ ही पल तो! मानव जीवन में कुछ ही पल तो होते

हैं, जब वह सही अर्थों में जीवन के समीप होता है और जीवन को जी लेता है। शेष तो जीवन जीने के प्रयास भर ही होते हैं। ये कुछ पल भी व्यक्ति यदि न जी पाये, तो जीवन शुष्क रेगिस्तान के अलावा क्या रह जाता है? प्रेम की सरस फुहार के बिना जीवन के दिन व्यतीत करने में सार्थकता ही कैसी है? जीवन के कुछ पलों को प्रेम के सौन्दर्य से सजा सके, कुछ क्षण के लिए व्यवहारिक जगत से कट नहीं सके, तो पथराई जमीन पर पथराई आंखें लेकर ही सारा जीवन व्यतीत हो जाता है।

यही आज के युग की बात हो गई है, क्योंकि प्रेम का अर्थ, जो खो गया है उसे ढूंढने की आवश्यकता पुनः सघन हो गई है। प्रेम मन से फिसल कर देह पर गया और देह से भी फिसल कर वासना के दलदल में चला गया। तथाकथित उन्मुक्तता ने भी व्यक्ति को कुछ नहीं दिया, न दैहिक तृप्ति न मानसिक तृप्ति। उसका यह सोचना भी गलत रहा कि वर्जनाओं में जकड़े होने के कारण व्यक्ति प्रेम का अर्थ भूल गया है, और वर्जनाओं से मुक्त होकर भी एक विचित्र सी आतृप्ति ही शेष रह गई, क्योंकि इस प्रकार से प्रेम की खोज नहीं की गई थी, वास्तव में समाज की वर्जनाओं को तोड़ने का प्रयास किया था, **जबकि कृष्ण न तो वर्जनाओं से मुक्त होने की बात कहते हैं न वर्जनाओं में बंधने की बात करते हैं, क्योंकि प्रेम को किसी भी तरह बांध कर देखा ही नहीं जा सकता।** प्रेम को तो अनुभव किया जा सकता है। प्राणों से कुछ-कुछ समझा जा सकता है।

और प्रेम को समझना है तो जन्माष्टमी से अधिक उपयुक्त अवसर हो भी कौन सा सकता है? प्रिय मिलन के लिए भाद्रपद की अष्टमी से अधिक उपयुक्त दिवस कोई भी तो नहीं हो सकता। यह मात्र एक अवतार का उत्सव पर्व ही नहीं है यह तो जीवन की सरसता का उत्सव पर्व है, अनूठेपन की घटना है, विलक्षणता की बात है।

क्योंकि कृष्ण की तो हर अदा ही निराली है, सभी परम्पराओं को छोड़ अवतरित भी हुए तो अंधेरे पक्ष में, जबकि शेष अवतरण हुए शुक्ल पक्ष में। वर्षा की नीरवता से घनी हो गई सुनसान रात्रि को अपने प्राकट्य से और भी अधिक मादक व संकेत पूर्ण बनाते हुए ही तो आते हैं वे इस धरा पर भाद्रपद में... उस भाद्रपद में जो कि यूं ही एक सांवला सलोना मास है।

भदव मास वरिस घनघोर, समदिस कहु कए दादुल मोर।
चेउकि चेउकि पिया करि समाय, गनमति सूतल अंकम लाए।।

भाद्रपद की काली रात्रि... चारों ओर मयूर व दादुरों का कलरव, जबकि सौभाग्यशाली युवतियां सहम-सहम कर, चौंक-चौंक कर अपने प्रिय के वक्षस्थल में और भी अधिक समाती चली जाती हैं, वही माह है प्रेम के प्रतीक कृष्ण के जन्म का, सघनता के प्रतीक के इस धरा पर पधारने का।

कृष्ण एक दृष्टि से सघनता के ही प्रतीक हैं। भाद्रपद के उमड़ते- घुमड़ते बादलों की ही तरह प्रेम हो या रस-विलास, चातुर्य हो या शूरवीरता, धूर्तों के साथ कौटिल्य हो या वाक्पटुता वे सभी में समाये हैं और कहीं भी न्यून बनकर नहीं, हर जगह सम्पूर्ण बनकर, सघन बनकर। जहां भी वे हैं, जीवन के जिस क्षेत्र में भी हैं घने बादलों की तरह ही तो छाये हैं। वे अपने अंगों में ही श्यामल नहीं हैं, अपनी अदाओं में भी श्यामल हैं। **इन्हीं सघनताओं, इन्हीं अंधेरी रातों, जीवन की विषमताओं के मध्य वे जिनसे प्रणय करते हैं, जो उनकी आह्लादिनी शक्ति हैं, वे हैं शुभ्र पूर्णिमा के चन्द्र की भांति ही निर्मल, सुकोमल, शीतल और विनयावनत उनकी चिर संगिनी-राधा!**

यूं देखा जाए तो घनी अंधेरी रात, माह का कृष्ण पक्ष और पूर्ण चन्द्र (राधा) की संयुक्ति यह एक विरोधाभास है, लेकिन कृष्ण के समक्ष तो मानो कोई विरोधाभास है ही नहीं या यूं कहें कि वे पूर्णरूप से विरोधाभासों से ही तो घिरे हैं। विरोधाभासों में ही तो उनका सारा चरित्र रचा- पचा है, फिर भी वे अपनी सरसता से स्निग्ध हैं, अपने सौन्दर्य से प्रफुल्लित हैं और प्रेममयता से निरन्तर गतिशील हैं। प्रेममयता ही तो सम्पूर्ण जीवन का रहस्य है, जो उनके तन- मन से भादों के बादलों की तरह रिमझिम - रिमझिम करके बरसी है।

यह ऐसी प्रेममयता है जिसमें दो से एक हो जाना ही पहली व आखिरी शर्त है। चाहे वह प्रेमी और प्रेमिका के बीच की बात हो, ईश्वर और भक्त के बीच के सम्बन्ध हों अथवा गुरु और शिष्य के मध्य की घटना हो। यह तो कानों में एक कूक पड़ने भर की बात है और दौड़ते हुए अपने प्रिय में लीन हो जाना है फिर प्रेम-प्रेमी और प्रेमास्पद अलग-अलग हैं ही कहां?

एक दिन हेरि हेरि हंसि हंसि जाय
अरु दिन नाम धए मुरलि बजाय

...जिस दिन कृष्ण की बासुंरी से राधा का नाम फूटा, बस उसी दिन राधा ने दौड़कर अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उनको सौंप दिया, अपने को सार्थक कर लिया, अपने को अमर कर लिया और फिर वे उनकी अभिन्न हृदया बनकर उनके जीवन में प्रतिक्षण की संगिनी हो गई। केवल रास के क्षणों में ही नहीं, मधुर वार्तालापों और नितान्त एकाकी क्षणों में अथवा प्रेम की सरसता में ही नहीं, विषाद और तनाव के क्षणों में भी, संघर्ष और द्वंद्व के क्षणों में भी उनके समीप ही रहीं। तन से नहीं प्राणों से। ज्यों कृष्ण राधामय रहे, उसी प्रकार राधा भी कृष्णमय हो गई और तब दैहिक समीपता की कोई आवश्यकता शेष नहीं रह गई, क्योंकि यह सामान्य मानवी संयुक्ति जो नहीं थी। जीवन में ऐसा सामान्य मानव सम्भव कर भी कहां सकता है। देह से ऊपर उठकर प्राणों से प्रेम कुछ ही तो कर पाते हैं, लेकिन जो कर पाते हैं वे एक हो जाते हैं, अमर हो जाते हैं, ज्यों राधा व कृष्ण दो नहीं एक हैं- राधाकृष्ण!

लो यह छांव कदम्ब की

मुझे आज तक चैत्र नवरात्रि ९३ का वह दिन याद है जिस दिन यह प्रकृति कुछ विशेष रूप से लयबद्ध थी यूं तो पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में मेरी जो भी नवरात्रि सम्पन्न हुई वह आज तक अवस्मरणीय रही। प्रत्येक नवरात्रि में कुछ न कुछ ऐसा घटित होते पाया जिसे मैं अपने सामान्य मानवीय जीवन में कदाचित नहीं ही देख सकता था। चाहे वह मां भगवती जगदम्बा का प्रत्यक्षीकरण हो अथवा सिद्धाश्रम के दिव्य पुण्यदायक महायोगियों का आगमन अथवा पूज्यपाद गुरुदेव की शक्तिपात क्रिया। मेरी स्मृति में ऐसे अनेक क्षण ज्यों के त्यों स्थिर बने हैं जिनकी उच्चता और गहनता से मैं अभिभूत रहता हूं।

प्रत्येक नवरात्रि में ऐसा ही लगता था मानो प्रकृति मूर्त रूप रखकर गुरुधाम जोधपुर के प्रांगण में विभिन्न साधक- साधिकाओं के माध्यम से नृत्य शील है लेकिन मैं जिस नवरात्रि की चर्चा कर रहा हूं उसमें तो अनोखी दिव्यता आ समाई थी। मैंने **बम्बई के श्री गणेश वटाणी जी** से भी कहा कि पता नहीं क्यों मुझे इस बार कुछ विशेष चैतन्यता और वातावरण में हलचल दिखाई पड़ रही है और वे भी मेरी बात से पूर्णतया सहमत थे।

मैं पूज्य गुरुदेव से विगत कई वर्षों से जुड़ा रहा हूं और मेरा सौभाग्य है कि उन्होंने मुझे विभिन्न दायित्वपूर्ण कार्य सौंपे। उनकी अत्यधिक निकटता से मैं यह निरन्तर अनुभव कर ही रहा था कि उनके ऊपर दायित्वों का बोझ असीमित होता जा रहा है। यह सत्य है कि वे परम पुरुष हैं, साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हैं किन्तु उन्होंने अपने-आपको, मानवीय स्वरूप में आने के बाद मानवीय आचरणों की मर्यादा में ही बांध रखा हैं क्योंकि इस माध्यम से वे स्पष्ट करना चाहते हैं कि सामान्य गृहस्थ में भी रहकर व्यक्ति चाहे तो अध्यात्म की ऊंचाईयां स्पर्श कर सकता है। वे सभी सिद्धियों के स्वामी और प्रदाता होने के बाद भी उनका उपयोग स्वयं के लिए कदापि नहीं करते, जिसका परिणाम उनके शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है साथ ही मानसिक तनाव भी कम नहीं रहते।

आज मुझे लगता है कि जो कुछ मेरे माध्यम से हुआ वह सब पूर्व निर्धारित था और इस धरा को जो कुछ विशेष प्राप्त करना था मैं उसमें एक निमित्त मात्र बना। इसी नवरात्रि के मध्य एक दिन पूज्यपाद गुरुदेव के मंच पर उपस्थित होने पर मैं अपने-आप को और अधिक नहीं रोक सका और हजारों साधकों के मध्य यह बालहठ कर बैठा कि हम सभी आप को और अधिक तनावग्रस्त नहीं देख सकते और इस पुण्यदायी नवरात्रि में आपको शक्तिपात की वह क्रिया करनी ही होगी **जो युगों-युगों से परम्परा रही है जब कि सद्गुरु अपने तेज और तप के अंश को अपने ज्येष्ठ पुत्र में स्थापित कर उन्हें गुरु पद पर आसीन करते हैं**। हजारों साधकों ने इस बात का करतल ध्वनि से स्वागत किया और पूज्य गुरुदेव से एक प्रकार जिद कर बैठे जिससे उन्हें उसी समय तीनों गुरु पुत्रों **श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी, श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी एवं श्री अरविन्द श्रीमाली जी** को शास्त्रोचित रूप से बुलाकर शक्तिपात की क्रिया सम्पन्न करनी पड़ी।

मैं जिस प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव से वर्षों से जुड़ा रहा हूं वहीं मुझे यह भी सौभाग्य मिला है कि हम पति-पत्नी पूज्य गुरुदवे के घर के सदस्य के भांति ही रहे हैं। पूज्यपाद गुरुदेव एवं पूज्यनीय माता जी के साथ -साथ तीनों गुरु पुत्रों को भी समीप से देखा है। आज जबकि **श्रीयुत नन्दकिशोर श्रीमाली जी** ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण पूज्य

गुरुदेव के साथ गुरु पद पर आसीन है तब मैं अपने- आप को स्मृतियों में खोता हुआ पाने लगता हूं। यद्यपि आज वे पद की मर्यादा एवं दायित्वों के कारण पहले की अपेक्षा बहुत गम्भीर हो गए हैं किन्तु मैंने सदैव से अनुभव किया है कि वे इस प्रकार के निश्छल व्यक्ति हैं जिनकी आत्मा मूल रूप से प्रकृति में ही बसती है। पूज्यपाद गुरुदेव ने उन्हें पुत्र होते हुए भी सदैव शिष्य की गरिमा से रहने का अभ्यास कराया और इसके परिणाम स्वरूप प्रारम्भिक जीवन से ही वे अल्पभाषी और एकान्तप्रिय बने।
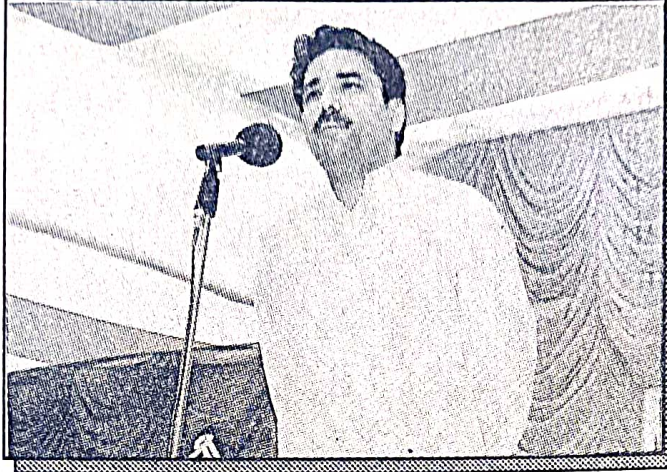
ये गुण आन्तरिक सम्पदा तो हो सकते हैं लेकिन जहां दायित्व के निर्वाह की बात आती है, जहां गुरु पद जैसे पद पर स्थापित होने के क्षण आते हैं वहां ऐसी आन्तरिक सम्पदा का त्याग कर अपने को बहुत दबोच कर सभी के सुख- दुख में एकरस होना पड़ता है और मैंने **श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी** के साथ स्पष्ट रूप से इसी बात को देखा। यद्यपि वे हास्य प्रिय और मधुर वार्तालाप के धनी सदैव से रहे हैं किन्तु शनैः - शनैः उनकी इन क्षमताओं पर गम्भीरता का एक झीना सा आवरण आ गया है। शक्तिपात की क्रिया कितनी तीव्र होती है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण **श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी** हैं जो आज एक वर्ष से कुछ अधिक समय बीतते न बीतते बहुत अधिक सक्रिय, चिन्तातुर और गम्भीर हो गए हैं।

चैत्र नवरात्रि के तुरन्त बाद ही जून माह में **मध्य प्रदेश के अमरकण्टक** नामक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पर एक दिवसीय शिविर का आयोजन था जिसमें **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** को उपस्थित होना था। किंतु वे अतिव्यस्त होने के कारण तथा कुछ अपरिहार्य स्थितियों के कारण न पंधार सके और उन्होंने पूज्य **श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी** को इस साधना शिविर का संचालन करने की आज्ञा दी। यद्यपि अनेक प्रमुख व्यक्तित्व और कुछ साधक हतप्रभ थे किन्तु मुझे विश्वास था कि जिस प्रकार शिविर पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में सम्पन्न होता उसी प्रकार **श्री नन्दकिशोर** की उपस्थिति में भी सम्पन्न होगा और ठीक ऐसा हुआ भी। मेरे इस विश्वास के पीछे ठोस कारण था क्योंकि मैंने जोधपुर में सम्पन्न हुए अनेक शिविरों में **श्री नन्दकिशोर जी** को एक शिष्य की ही भांति कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते देखा है चाहे वह साधकों के आवास का प्रश्न हो या उनके भोजन की व्यवस्था का। उन्हें यह बोध ही नहीं रहता था कि वे गुरु पुत्र हैं और जिस प्रकार चुपचाप अपना कार्य करते थे उससे नये साधक यह जान भी नहीं पाते थे कि वे पूज्य गुरुदेव के ज्येष्ठ पुत्र हैं और यह गुण तो पूज्य गुरुदेव के समस्त पुत्र - पुत्रियों में समाया ही है। यदि यूं भी देखें तो वे एक ऐसे व्यक्तित्व के पुत्र हैं जो विश्व विख्यात हैं किन्तु उन्होंने कभी इस बात का दम्भ नहीं किया। **यही उनकी शिष्यता है और इसी प्रकार शिष्यता का पालन कर वे गुरु पद पर आसीन है क्योंकि पूज्य गुरुदेव के अनुसार जो उत्तम शिष्य बनने की पात्रता रखता हो वही गुरुत्व धारण कर सकता है।**

अमरकण्टक में अपनी क्षमताओं और पूर्ण गुरुत्व का प्रदर्शन करने के बाद पूज्य **श्री नन्दकिशोर जी** ने **बम्बई** एवं **भोपाल** के साधकों के अत्यधिक आग्रह पर वहां एक दिवसीय शिविरों में उपस्थित होकर न केवल शिष्यों को श्रेष्ठ साधनाएं सम्पन्न करायीं वरन शक्तिपात युक्त दीक्षाएं भी प्रदान की। बम्बई एक अत्यधिक व्यस्त और पूर्ण भौतिकता में रचापचा महानगर है। यद्यपि मैं वहां के साधकों की श्रद्धा भक्ति पर कोई भी आक्षेप नहीं कर रहा किन्तु यह सत्य है कि वहां जो सामान्य दर्शक गण या श्रोतागण उपस्थित होते थे वे अत्यन्त तीव्रता से आघात करने जैसा प्रयास करते थे किन्तु **पूज्य श्री नन्दकिशोर जी** ने न केवल अपनी सहज सौम्य मुस्कान से विरोधियों को परास्त किया वरन उनके प्रश्नों के भी ऐसे उत्तर दिए जिससे उनके विरोधियों द्वारा कुछ कहते नहीं बन सका। जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव अपने विरोधियों को निरूत्तर कर देते हैं ठीक वही कला **श्री नन्दकिशोर जी** में आ समाई है।

मैं मध्य प्रदेश हूं और यह मेरा सौभाग्य रहा कि अभी तक पूज्य **श्री नन्दकिशोर जी** के आयोजन सर्वाधिक रूप से मध्य प्रदेश में ही सम्पन्न हुए हैं। पिछले वर्ष ही **भिलाई** में सम्पन्न हुई आश्विन नवरात्रि का पर्व इस दृष्टि से अद्वितीय था जब पूरे शिविर काल में **पूज्यपाद गुरुदेव** और **पूज्य श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी** ने संयुक्त रूप से छत्तीसगढ़ अंचल के श्रद्धालु साधकों को अपनी कृपा से अभिभूत किया।
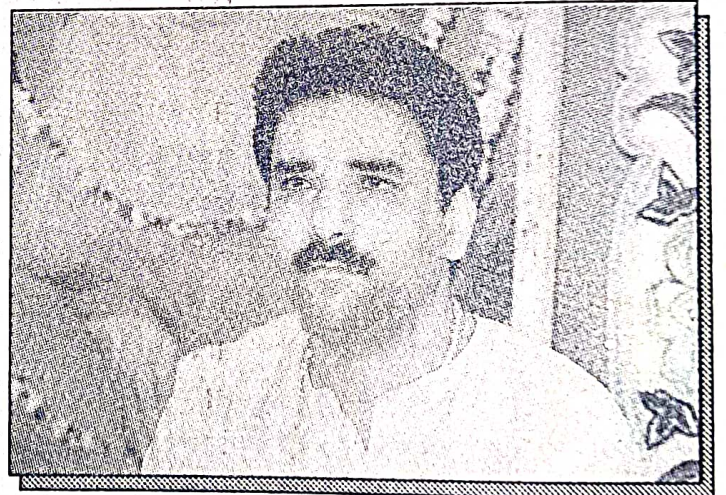
यदि एक दिवसीय शिविरों की बात की जाए तो उनकी कोई गिनती ही नहीं है और

निरन्तर पत्रिका का सम्पादन, शिष्यों की देखभाल, गुरुधाम जोधपुर में समस्त दायित्वों का निर्वाह करने के साथ -साथ वे उस लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे जो पूज्य गुरुदेव द्वारा स्थापित किया गया लक्ष्य है और यह लक्ष्य है इस धरा पर सिद्धाश्रम की प्रतिकृति बना देना। यह कोई सामान्य कार्य नहीं है। यदि आर्थिक जटिलता की बात को क्षण भर के लिए भूल जाएं तब भी इस सम्पूर्ण योजना को मूर्त रूप देना भागीरथ प्रयास के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है, और इस महती योजना की सम्पूर्ण जिम्मेदारी **श्रीयुत नन्दकिशोर जी** के ऊपर ही पूज्यपाद गुरुदेव जी ने डाल रखी है।

इन्हीं व्यस्तताओं के मध्य फिर आया इस वर्ष इलाहाबाद में सम्पन्न होने वाला **'हीरक जयन्ती महोत्सव'** जो पूज्यपाद गुरुदेव के इस भौतिक जीवन के ६० वर्ष पूरा होने को महोत्सव था। षष्ठी पूर्ति महोत्सव का भारतीय जीवन चिन्तन में और हिन्दू दर्शन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, जब व्यक्ति अपने सार्वजनिक जीवन से पुनः अध्यात्म की ओर उन्मुख हो जाता है। यद्यपि इस बात को पूज्यपाद गुरुदेव के सन्दर्भ में ठीक इन्हीं अर्थों में नहीं लिया जा सकता क्योंकि उनका सम्पूर्ण जीवन ही आध्यात्मिक रहा है, लेकिन इस महोत्सव से यह बात स्पष्ट हो गया है कि पूज्यपाद गुरुदेव सार्वजनिक जीवन से शनैः शनैः संन्यास की ओर अग्रसर होंगे और ऐसी स्थिति में स्वयमेव सारा भार **पूज्य श्री नन्दकिशोर जी** के ऊपर आ जाता है। पूज्य श्री नन्दकिशोर जी ने जिस प्रकार हीरक जयन्ती महोत्सव में एक प्रकार शिष्य रूप में पूज्य गुरुदेव का अभिनन्दन किया और गुरु रूप में अपने शिष्यों का मनोबल बढ़ाया उससे आने वाले भविष्य के सुखद संकेत मिले हैं और 'हीरक जयन्ती महोत्सव' का उल्लास, व्यस्तता समाप्त हुई ही नहीं थी कि पूज्य श्री नन्दकिशोर जी को **वैतूल** में एक दिवसीय साधना शिविर को अपने सान्निध्य में सम्पन्न करवाने जाना पड़ा। **वैतूल** में उनका आगमन एक चिरस्मरणीय घटना बन गई है और जिस प्रकार हजारों साधकों ने उल्लास से भरकर नाचते गाते हुए स्टेशन से लेकर सभा स्थल तक उनका स्वागत किया, उसके बाद कहना पड़ता है कि सचमुच भारत में आध्यात्मिकता की ऐसी लहर दौड़ी है जिसमें बाल- वृद्ध सभी आकण्ठ तृप्त हो रहे हैं।

वस्तुतः एक साल का समय बहुत अल्पकाल होता है जबकि किसी व्यक्तित्व का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। एक वर्ष में तो केवल गतिशीलता का वर्णन किया जा सकता है **लेकिन जिन साधकों ने लगभग एक वर्ष पूर्व अमरकण्टक में उनसे दीक्षा ली थी वे आज अनुभव कर रहे हैं कि पूज्य श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी से ली गई दीक्षाओं और शक्तिपात में कैसा प्रभाव रहा है।**
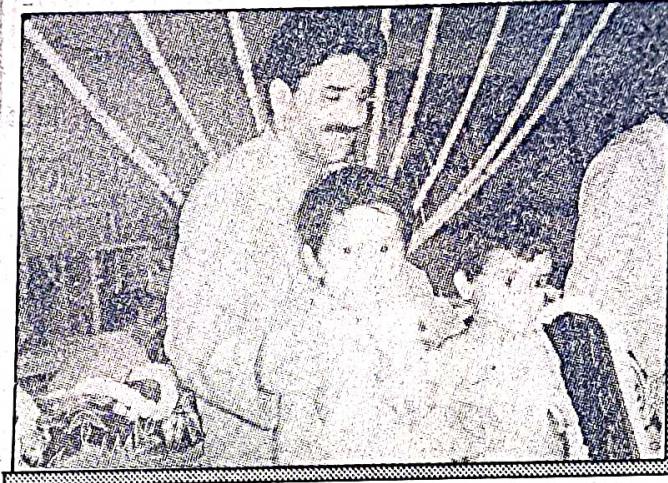
समय - समय पर पूज्य श्री नन्दकिशोर जी ने गुरुधाम दिल्ली में समस्त भारत से आए शिष्यों को जो दीक्षाएं दी उससे प्रभावित होने के बाद आज उनको पूरे भारत में अपने - अपने स्थान में बुलाने के लिए होड़ सी लग गई है। अभी जून माह में **मनाली** में सम्पन्न हुआ **'प्रत्यक्ष लक्ष्मी साधना शिविर'** हो अथवा **शिवरी नारायण (म. प्र.)** में सम्पन्न हुआ तीन दिवसीय शिविर इसी के उदाहरण हैं। पिछले वर्ष भिलाई शिविर में **पूज्य श्री नन्दकिशोर जी** के ओजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होने के बाद छत्तीसगढ़ अंचल के साधक इस बात के लिए प्रयास रत थे उन्हें हम पुनः - पुनः अपने क्षेत्र में आयोजन करके बुलाएंगे और शिवरी नारायण शिविर इसी का प्रत्यक्ष उदाहरण था।

आज विश्व रंगमंच में जिस प्रकार से घटनाएं घट रही है, मानसिकताएं और संस्कार बदल रहे हैं उसके साथ - साथ प्राचीन ज्ञान को संरक्षित करना और पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा दी गई चिनगारी निरन्तर प्रज्ज्वलित रखना, यह बहुआयामी कार्य है और इसी दृष्टि से अभी पिछले समय **दिनांक २०.०६.९४ से ०८.०७.९४ तक पूज्य श्री नन्दकिशोर जी ने पूज्यपाद गुरुदेव, पूज्यनीय माता जी एवं पूज्य श्री अरविन्द श्रीमाली जी के साथ सम्पूर्ण यूरोप का भ्रमण किया। इस अवसर पर आस्ट्रिया, स्वीटजरलैण्ड, जर्मनी, इटली, फ्रांस, बेल्जियम, इंगलैंड तथा लक्जमबर्ग आदि यूरोपीय देशों में बसे भारतीय शिष्यों को सम्बोधित किया तथा संस्था को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने का प्रयास किया।**

अन्त में मैं इतना ही कह सकता हूं कि भारतीय परम्परा गुरु के साथ - साथ गुरु पुत्र को वही सम्मान और स्नेह देने की पक्षधर रही है। इसके पीछे ठोस कारण है क्योंकि जो गुरु पुत्र होते हैं वे प्रारम्भ से ही उन संस्कारों में रचे पचे होते हैं जिन्हे अन्य शिष्य दीक्षाओं के माध्यम से ग्रहण करते हैं। इसके लिए आवश्यक नहीं कि वे कोई अन्य क्रिया- कलाप करें क्योंकि सद्गुरु का तो हर स्पर्श दीक्षा होता है और इसी प्रकार **श्री नन्दकिशोर जी** पुत्र होते हुए भी शिष्य रूप में ही पले और बढ़े हैं।

शास्त्रों में इस विषय में क्या उल्लेख किए गए हैं उसके सन्दर्भ में मैं **काली विलास तंत्र** में वर्णित पंक्तियों का स्मरण करता हूं जिसके अनुसार यदि इष्ट पूजन के समय श्री गुरुदेव, गुरु- पुत्र या गुरु- पत्नी शिष्य के घर आ जाएं तो तत्काल इष्ट पूजन अथवा साधना क्रम उसी क्षण बीच में ही छोड़ कर उनकी भी उसी प्रकार पूजा करें।

सौजन्य से : श्री गुरुसेवक

अनन्त चतुर्दशी साधना

अनन्त चतुर्दशी का शास्त्रों में विशेष महत्व है, और बताया गया है, कि जीवन में हमें बाधाएं या अड़चनें इसलिए आती रहती हैं, कि हम पूर्ण रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं है।

नित्य सांसारिक व्यवहार करने से हमें तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं, १. वाणी दोष– हमें बोल-चाल में, बात-चीत में और व्यवहार में असत्य उच्चारण करना पड़ता है, इस झूठ की वजह से वाणी दोष व्याप्त होता है २. मन दोष– हम चाहे अनचाहे किसी के प्रति घृणा, क्रोध या दुर्भावना व्याप्त करते हैं, उससे मन दोष व्याप्त होता है, ३. मुख दोष– आज के युग में तो घर के बाहर कई स्थानों पर भोजन करना होता है, जहां शुद्धता पवित्रता का भान नहीं होता, ऐसी स्थिति में मुख दोष व्याप्त हो जाता है।

उपरोक्त तीनों दोषों की समाप्त करने के लिए शास्त्रों में एक मात्र अनन्त साधना का विधान ही बताया है, और यह भी कहा है,कि वर्ष में एक बार इस दिन अनन्त साधना संपन्न करने पर अब तक किए गए सभी दोष समाप्त हो जाते हैं।

और जब दोष समाप्त हो जाते हैं, तो व्यक्ति शुद्ध और चैतन्य हो जाता है, फलस्वरूप चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है, उसके वाणी में दृढ़ता एवं स्पष्टता आ जाती है, और वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

इसके साथ ही साथ अनुभव में यह आया है, कि इस साधना को संपन्न करने पर तत्क्षण साधक की एक इच्छा पूरी होती ही है, वह इच्छा चाहे कितनी ही कठिन हो, और प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो रही हो, कई बार तो साधना समाप्त होते- होते अपने कार्य की पूर्ति के समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

मेरे पिताजी अपने जीवन में प्रति वर्ष अनन्त चतुर्दशी साधना करते थे और हर बार वे जो इच्छा व्यक्त करते, वह इच्छा उनकी अवश्य ही पूरी होती थी, यही नहीं अपितु वे अपने खर्चे पर आस-पड़ोस के स्त्री-पुरुषों को भी यह साधना इस दिन संपन्न कराते थे।

साधना रहस्य

भगवान अनन्त (विष्णु) से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण पर्व इस वर्ष **दिनांक १८.०९.९४** को पड़ रहा है।

साधक को चाहिए कि अनन्त चतुर्दशी के दिन (यह साधना दिन को ही संपन्न हो सकती है) साधक स्नान कर आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए और सामने **"सर्व कामना सिद्धि अनन्त यंत्र"** को स्थापित कर दे, यह यंत्र एक बार घर में स्थापित होने पर भविष्य

में प्रति वर्ष यही यंत्र प्रयोग में आता रहता है, इस यंत्र को किसी पात्र में स्थापित कर दें और फिर इस यंत्र की संक्षिप्त पूजा करें, पूजा करते समय जल, कुंकुम, अक्षत या पुष्प आदि समर्पित करते समय **''ॐ अनन्ताय नमः''** शब्द का उच्चारण करता रहे।

संक्षिप्त पूजा में यंत्र को पहले जल से स्नान करा ले, और फिर दूध से, दही से, घृत से, शहद से और शक्कर से स्नान करा कर दूसरे पात्र में केसर से ''ऐं ह्रीं श्रीं'' लिख कर उस पर यंत्र को स्थापित कर दें, और यंत्र पर केसर का तिलक करे, अक्षत चढ़ाएं और पुष्प समर्पित करें, इसके बाद साधक शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती लगाएं।

नारायणोपनिषद में वर्णित है कि भगवान विष्णु का नित्य स्वरूप अनन्त ही है जिनसे समस्त सृष्टि स्पन्दित और गतिशील है।

इसके बाद साधक को चाहिए कि वह पहले से ही मंगा कर रखे गये शुद्ध यज्ञोपवित या जनेऊ को यंत्र के सामने रख दें, शास्त्रों में विधान है, कि कुमारी कन्या द्वारा सूत कात कर और उसका यज्ञोपवित बना कर प्रयोग करें, साधक यज्ञोपवित बाजार से प्राप्त कर सकतें हैं, अथवा शुद्ध और प्रामाणिक यज्ञोपवित निःशुल्क पत्रिका कार्यालय से मंगवा सकते हैं।

इस यज्ञोपवित को उस महायंत्र के सामने स्थापित कर दें और यज्ञोपवित में आवाहन करें कि यज्ञोपवित के प्रत्येक धागे में भगवान अनन्त आ कर स्थापित हों।

इसके बाद यज्ञोपवित के सिर पर जो तीन गांठें होती हैं, उन तीन गांठों के मूल में ब्रह्मा को स्थापित करें, मध्य में विष्णु को तथा सबसे ऊपरी गांठ पर भगवान शिव को आह्वान करें और उन्हें स्थापित करें फिर तीनों गांठों पर केसर लगावें तथा संक्षिप्त पूजन करें।

इसके बाद यज्ञोपवित को खोल कर दोनों हाथों में लेकर उसे आकाश की ओर ऊपर उठाएं और **''ॐ सूर्याय नमः''** मंत्र द्वारा उस यज्ञोपवित में सूर्य की तेजस्विता का आह्वान करें, और मन में यह चिन्तन करे कि इस यज्ञोपवित के प्रत्येक धागे में सूर्य स्थापित हो रहे हैं, जो कि मुझे पूर्ण तेजस्विता प्रदान करने में समर्थ हैं, साथ ही साथ भगवान सूर्य मेरे पूर्व जीवन के और इस जन्म के सभी पापों को समाप्त कर रहे हैं, और साथ ही साथ जो तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं, उन तीनों प्रकार के दोषों को भी भगवान सूर्य समाप्त कर मुझे पूर्ण चैतन्य और शुद्ध बना रहे हैं।

ऐसी भावना मन में रखते हुए यज्ञोपवित को नीचे उतार ले और फिर उसे समेट कर अनन्त यंत्र के सामने स्थापित कर दें और उस यज्ञोपवित को भगवान अनन्त का स्वरूप मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, उन्हें नैवेद्य समर्पित करें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि भगवान अनन्त मेरे जीवन की समस्त कामनाओं को पूर्ण करें और अमुक इच्छा को तो तुरन्त ही पूर्ण करें।

इसके उपरान्त भगवान अनन्त का ध्यान करें –

उद्यत्प्रद्योतनरूचिं तप्तहेमावदातं
पाश्चर्वद्वन्गु जलधि सुतया विश्वद्यात्र्या च जुष्टं
नानारत्नोल्लासित-विविधाकल्पमा पीत वस्त्राम्
अनन्त विष्णु वन्दे कर कमल कौमोद की चक्रपाणिम्

अर्थात् उगते हुए सैकड़ों सूर्य के समान, तेजस्वी तपे हुए सोने के समान जिनकी अंग कांति है, पृथ्वी एवं लक्ष्मी जिनकी सेवा में है रत्न जड़ित आभूषण एवं चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म शोभित है, ऐसे अनंत विष्णु का मैं ध्यान करता हूं।

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

अनन्त मंत्र

ॐ ऐं अनन्ताय ऐं नमः

जब एक माला मंत्र-जप पूरी हो जाए, तब भगवान की आरती करे, इसमें आपको जो भी आरती स्मरण हो, उस आरती को संपन्न कर सकते हैं।

उसके बाद यज्ञोपवित को गले में धारण कर लें और पुराना यज्ञोपवित उतार दें, कुछ साधक पुराना यज्ञोपवित गले में ही रहने देते हैं, और उस यज्ञोपवित को २४ घंटों के लिए दाहिनी भुजा पर बांध लेते हैं, इन दोनों में से किसी भी प्रकार का विधान साधक कर सकते हैं।

इस प्रकार का प्रयोग करने के बाद ही साधक अपने परिवार के साथ भोजन करे, और यथोचित दान आदि दें।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने-आप में अत्यन्त तेजस्वी और प्रभावयुक्त है, मैंने प्रति वर्ष इस प्रयोग को आजमाया है, और मुझे अनुभव हुआ है कि इससे मनोवांछित कामना सिद्धि तो निश्चय ही होती है।

इस युग को यदि समझना है तो आप किसी से अन्तरंग होकर उसकी व्यथा जानने का प्रयास करें और वह थोड़ी सी सहानुभूति पाते ही आपके सामने बिखर जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति ऐसा ही अनुभव कर रहा है कि इस संसार में उससे अधिक दुखी, उससे अधिक तनाव ग्रस्त और उससे ज्यादा पीड़ित कोई अन्य है ही नहीं। **ऐसा क्यों हो रहा है और क्यों सारी भौतिक सुविधाओं और उन्नति के बावजूद भी वह अपने- आप को असहाय और कटा हुआ अनुभव करता है?** क्यों सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर व्यक्ति अपने अन्दर घुटन अनुभव कर रहा है? क्यों नहीं वह इस प्रकार से चैतन्य, आनन्दित और सुखी बन पा रहा है जैसा बनना मानव जीवन का अर्थ कहा गया है।

इसका उत्तर व्यक्ति को भौतिक रूप से शायद नहीं मिल सकेगा क्योंकि यह व्यक्ति के अन्तःपक्ष से जुड़ी समस्या है जिसका समाधान अध्यात्म से ही सम्भव है, और अध्यात्म में भी थोथी बातों व प्रवचनों से नहीं वरन् वास्तविक और यथार्थ रूप से।

वास्तव में प्रत्येक चिन्तनशील व्यक्ति इस बिन्दु पर आता ही है। जब वह सोचता है या सोचने को बाध्य हो जाता है कि मैंने तो अपने जीवन में इतना परिश्रम किया, इतनी बुद्धि लगायी सफलता के प्रत्येक फार्मूले का अपनाया और अपनी क्षमता भर कोई कसर तो नहीं छोड़ी, फिर भी मेरा जीवन बिखरा - बिखरा क्यों है, क्यों नहीं मेरी पत्नी के साथ मेरा सामंजस्य बनता है, क्यों मुझे इतना मानसिक तनाव बना रहता है? इस प्रकार की अनेक बातों का हल प्राप्त करने के लिए दैव इच्छा पर ही अन्त नहीं कर देना चाहिए। जीवन इतनी सस्ती वस्तु नहीं है जिसे हम किसी 'किन्तु-परन्तु' पर छोड़ दें। **पूज्य गुरुदेव ने एक अवसर पर कहा था कि गन्दगी पर कालीन डाल देने से दुर्गन्ध नहीं छिपती। इसी प्रकार अपने मानसिक तनाव, न्यूनताओं और अभावों पर ''हरि इच्छा - प्रभु इच्छा' का सुनहरा कालीन बिछा देने से सुगन्ध के झोंके प्रारम्भ नहीं हो जायेंगे,** उल्टे जहां से दुर्गन्ध आ रही है वह ढकने पर और भी घनी हो जायेगी। इसका हल मिलेगा एक आध्यात्मिक यात्रा में और इस यात्रा का मार्ग है दीक्षाओं के स्वरूप में।

कदाचित यह बात कटु लग सकती है किन्तु व्यक्ति के जीवन के अधिकांश दुखों का कारण उसके पूर्व जन्मकृत दोष ही होते हैं जिनका शमन पूर्णरूप से दीक्षा द्वारा हो सकता है। दीक्षा का तात्पर्य केवल गुरु मंत्र शिष्य को देना ही नहीं है। दीक्षा का तात्पर्य है गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा का संगम। गुरु का आत्मदान और शिष्य का आत्म समर्पण, यह दीक्षा है। दीक्षा का तात्पर्य है गुरु द्वारा दान, शक्ति और सिद्धि का दान, शिष्य के अज्ञान और पाप का क्षय। क्योंकि जब तक पापों का मोचन और दोषों का शमन पूर्णरूप से नहीं हो जाता तब तक शिष्य में पूर्णता नहीं आ सकती।

पाप मोचन का तात्पर्य है शरीर में स्थित विकारों का नाश, निवृत्ति तथा विकार का तात्पर्य है जीवन में जो दोष हैं चाहे वे इस जीवन के हों अथवा पूर्व जीवन के, क्योंकि पूर्वजन्म में किये गये कृत्यों का प्रभाव भी इस जीवन पर पड़ता ही है।

साधक तथा शिष्य अपने गुरु के पास इसी उद्देश्य से आता है , कि वह अपने- आप को पूर्ण समर्पित कर गुरु के दिव्य ज्ञान एवं प्रभाव से अपने भीतर के विकारों का, अपने इस जन्म और पूर्वजन्म के दोषों का नाश कर दे। शिष्य अपना मार्ग स्वयं नहीं पहचान सकता, वह केवल गुरु द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना जानता है, और जब वह सही मार्ग पर चलता है, तो उसे सिद्धि व सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

''रुद्रयामल तन्त्र'' के अनुसार जो साधक अपने गुरु के पास जाकर पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना चाहता है, उसे किसी भी रूप में भूत शुद्धि करा कर **पाप मोचनी दीक्षा** अवश्य ग्रहण करनी

चाहिए, इस दीक्षा का स्वरूप अत्यन्त ही उपयोगी और प्रभावकारी है, यह तो आगे बढ़ने की दिशा में पहला प्रयास है।

पाप मोचनी दीक्षा के सम्बन्ध में शास्त्रों में जिस प्रकार विस्तृत वर्णन दिया गया है उसकी एक झलक हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसके अनुसार स्नान आदि कर श्रेष्ठ मुहूर्त में साधक गुरु के समक्ष बैठे। शिष्य हाथ में जल लेकर संकल्प करे और अपने हाथ में एक नारियल ले। गुरु, शिष्य के ललाट पर तिलक करे तथा निम्न प्रकार से विनियोग करें—

विनियोग

ॐ शरीरस्यान्तर्यामी ऋषिः सत्यं देवता प्रकृति पुरुषश्छन्दः पापपुरुषशोषणे विनियोगः।

इसके बाद साधक अपने बाएं हाथ में जल ले कर शरीर पर छींटे मारे। इस जन्म के दोषों का प्रभाव पूरे शरीर पर पड़ता है, यह शरीर शुद्धि, आत्म शुद्धि की पाप मोचनी दीक्षा का स्वरूप है, तदुपरान्त ध्यान करें।

ध्यान

हृदय में स्थित, कमल जिसका मूल धर्म और नाल ध्यान है, आठ प्रकार के ऐश्वर्य उसके दल हैं। प्रणव द्वारा उद्भाषित है कि उस कर्णिका पर दीप शिखा के समान ज्योति स्वरूप जीवात्मा स्थित है, वह जीवात्मा में विष्णु स्वरूप, शिव स्वरूप, ब्रह्मा स्वरूप स्थित है और कुण्डलिनी तथा जीवात्मा का मिलन है, उसी की जाग्रति जीवन की सम्पूर्णता है, ऐसी शुद्ध जीवात्मा को मैं पूर्ण भक्ति- भाव से प्रणाम करता हूं।

ऐसा ध्यान सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु शिष्य के शरीर में ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की स्थापना करे।

इसके पश्चात् साधक **'रुद्राक्ष माला'** से निम्न शुद्धि मन्त्र की पांच मालाएं उसी स्थान पर सम्पन्न करे।

बीज मंत्र

ॐ परमशिव सुषुम्नापथेन मूलश्रृंगाटक उल्लस उल्लस ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल सोहं हंसः स्वाहा।।

इस प्रकार के पूजन के पश्चात् साधक के शरीर में हलचल सी प्रारम्भ होती है और भीतर ही भीतर विशेष मंथन प्रारम्भ होता है, यह पाप दोष मोचन (शमन) की पहली प्रक्रिया है।

शमन दीक्षा का दूसरा क्रम

पाप मोचन —शमन दीक्षा के तीन क्रमों में पहला क्रम समाप्त होते ही शिष्य के लिए दूसरा क्रम प्रारम्भ किया जाता है।

साधक अपने सामने एक ताम्र पात्र में शिवलिंग स्थापित करे तथा गुरु उसे 'जीवात्मा शुद्धि रूप' में अभिषेक करे, इस शुद्धि अभिषेक के जल को शिष्य के ऊपर छिड़क कर शुद्धि कार्य सम्पन्न करे, उसके पश्चात् निम्न बीज मंत्र से २१ बार कुश को जल में डुबो कर उस पर छिड़कते हुए शुद्धता की ओर अग्रसर हो।

बीज मंत्र

ॐ यं लिंगशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।।

इस दूसरे क्रम की समाप्ति होते -होते साधक को इस प्रकार का आभास होता है कि उसके शरीर में से कुछ निकल कर बाहर जा रहा है, और भीतर ही भीतर एक खालीपन अनुभव होता है, रोम खड़े हो जाते हैं लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है, जब भी आन्तरिक स्वरूप से दोष अणु स्वरूप में बाहर निकलते हैं, तो शरीर रोकता है, शुद्धि प्रक्रिया में कष्ट अवश्य होता है लेकिन कुछ समय बाद ही एक शान्ति, स्थिरता का अनुभव होता है।

शमन दीक्षा का तीसरा क्रम

तीसरे क्रम में साधक के वर्तमान जीवन के दोषों का शमन क्रम पूर्ण किया जाता है, जब तक शरीर के अतिरिक्त मन भी निरोगी नहीं हो जाता, तब तक किसी भी कार्य में अथवा साधना में सिद्धि नहीं हो पाती।

यह दीक्षा परम शिव पद प्राप्त करने की साधना है, इसमें गुरु अपने शिष्य को पूर्व की ओर मुंह कर बिठाए '१०८ कमल बीज' द्वारा उसके शरीर के १०८ स्रोत बिन्दुओं को जाग्रत करते हुए उसमें १०८ लक्ष्मी स्वरूपों की स्थापना करे।

फिर लक्ष्मी के स्वरूप यन्त्र को अग्निकोण में स्थापित कर उसके आगे अग्नि का दीपक जलाए और निम्न बीज मंत्र से आह्वान करे—

बीज मंत्र

ॐ ह्रीं वैष्णवे प्रतिष्ठा कमलात्मने हुं नमः

इस क्रम में पूर्णता के पश्चात् शिष्य गुरु का पूजन करे, गुरु को शिव स्वरूप मानते हुए आरती, पुष्प इत्यादि से पूजन सम्पन्न कर अपने- आप को पूर्णरूप से समर्पित कर दे।

इस प्रकार पूजन कार्य सम्पन्न कर शिष्य नैवेद्य एवं दक्षिणा समर्पित करे तथा अपने दोषों के पूर्ण नाश हेतु प्रार्थना कर गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करे।

यह दीक्षा साधारण दीक्षा नहीं है, जब इस दीक्षा द्वारा इष्टदेव और गुरुदेव के ध्यान में चित्त तन्मय हो जाता है, और दीक्षा द्वारा उनकी कृपा प्राप्त होती है तो चित्त पूर्णरूप से शुद्ध हो कर एक विशेष आनन्द का अनुभव करता है, और पवित्रता, शक्ति, शान्ति की शत्-शत् धाराएं उसके 'स्व' को आप्लावित व अत्यन्त दिव्य बना देती हैं।

उपरोक्त शास्त्रोक्त विधान के अतिरिक्त सद्गुरु केवल मात्र अपने शक्तिपात से ही ये सभी क्रियाएं भी सम्पन्न करने में सक्षम होते हैं।

फोन : ०११-७१८२२४८
फेक्स : ०११-७१८६७००

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४

दिनांक :

यह प्रपत्र आपके लिए हमारी तरफ से सहयोग हेतु

आप गुरुदेव के **शिष्य/साधक** या **पत्रिका के पाठक** हैं, हमें आप पर गर्व है। हम समय - समय पर आपको सहयोग देना चाहते हैं, मार्ग दर्शन करना चाहते हैं और आपकी प्रत्येक समस्या में भागीदार बनना चाहते हैं, इसके लिए जरूरी है कि आप साफ - साफ हिन्दी में निम्न प्रपत्र भरकर (पत्रिका से सावधानी पूर्वक फाड़कर अलग कर दें) लिफाफे में रखकर उसे भली प्रकार से चिपका दें, और उस पर एक रुपये का डाक टिकट लगा दें व उस पर पता लिखें–

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
''गुरुधाम''
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ३४

और इस लिफाफे को आज ही डाक में डाल दें. . . अभी

---

१. **पूरा नाम** : ....

२. **वर्तमान पद (व्यवसाय/अधिकारी-पूरा विवरण)** : ...., उम्र: ....
....
....

३. **पत्रिका सदस्य संख्या (यदि हैं तो)** : ....

४. **शिक्षा** : ....

५. **परिवार - पत्नी का नाम** : ....
पुत्रों की संख्या : ....
पुत्रियों की संख्या : ....

६. **दीक्षा - आपने अब तक कौन-कौन सी दीक्षाएं ली हैं।**

....

....

७. **साधनाएं - जो आपने की, और उस सम्बन्ध में अनुभव -**

....

....

८. **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका आपको कैसी लगी, आप उसमें और किन - किन विषयों पर लेख चाहते हैं अपने सुझाव स्पष्ट लिखें—

....

....

९. **पूरा पता :**

....

....

१०. **टेलीफोन** (शहर के कोड नम्बर सहित)
यदि स्वयं के पास न हो तो किसी मित्र या पड़ोसी का टेलीफोन नं. : . . . .

११. **आपकी समस्याएं** (जो वर्तमान में हो, और जिनका आप तुरन्त समाधान चाहते हैं।)

....

....

१२. **आप हम से क्या सहयोग चाहते हैं –**

....

....

१३. **किन्हीं तीन मित्रों या सम्बन्धियों के नाम व पूरे पते** (चाहे भारत में कहीं भी रहते हों)

(१) ....

....

(२) ....

....

(३) ....

....

हस्ताक्षर

"लक्ष्मी साधना करने से पूर्व आवश्यक है कि साधक लक्ष्मी के सही स्वरूप का चिन्तन कर सके। जिससे उसे साधना में निश्चय ही सफलता मिले।

लक्ष्मी नौ कलाओं से युक्त भगवान श्री नारायण की अर्द्धांगिनी है और इसी तथ्य को ध्यान में रखकर उनके विविध स्वरूपों में से मनोवांछित स्वरूप में साधना करने पर सफलता मिल सकती है. . . "

लक्ष्मी के विविध स्वरूप

लक्ष्मी का तात्पर्य केवल धन नहीं है, लक्ष्मी का तात्पर्य जीवन की सम्पूर्णता से है इस बात पर पूज्य गुरुदेव ने बार - बार बल दिया है। लक्ष्मी के प्रति जीवन में उपेक्षा अथवा प्रवञ्चना रखकर जीवन का निर्वाह नहीं किया जा सकता। लक्ष्मी आध्यात्मिक जीवन में बाधा नहीं, पूर्णता है क्योंकि पूर्ण योगी उसी को कहा गया है जो नारायण तुल्य हो तथा जिस प्रकार नारायण, लक्ष्मी से सदैव संयुक्त है उसी प्रकार योगी भी जीवन के विविध ऐश्वर्य और धन- सम्पदा से परिपूर्ण होता ही है। इसी से लक्ष्मी की साधना और लक्ष्मी की उपासना जीवन में परम आवश्यक है। जिस व्यक्ति को लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो जाती है, जिसके रोम -रोम में लक्ष्मी का वास हो जाता है वह व्यक्ति कभी भी रोगी अथवा मलिन रह ही नहीं सकता। उसकी मनोहारी अंग - कांति, चेहरे की उत्फुल्लता, जीवन जीने के प्रति सकारात्मकता, जीवन में उल्लास सभी कुछ होता है। आवश्यक है कि व्यक्ति जब लक्ष्मी के प्रति चिन्तन युक्त हो, लक्ष्मी साधना सम्पन्न करने का मानस बनाए तब वह अपने मन और मस्तिष्क को खुला रखे। उसकी भावना में पवित्रता हो और जीवन के प्रति स्वच्छ चिन्तन हो। यह सत्य है कि जिस समय व्यक्ति लक्ष्मी साधना में प्रवृत्त होता है तो उसका मूल उद्देश्य धन ही होता है। किन्तु धन ही उसके चिन्तन की पूर्णता न हो, इसी बात पर पूज्य गुरुदेव सर्वाधिक बल देते हैं।

लक्ष्मी से सम्बन्धित विवरण पुराणों में प्रचुर रूप से मिलते हैं और उनसे भी यही बात स्पष्ट होती है। उसमें स्पष्ट वर्णित है कि लक्ष्मी की स्थापना तभी सफल है जब वे अपनी नौ कलाओं के साथ उपस्थित हों। इन नौ कलाओं से युक्त लक्ष्मी को ही महालक्ष्मी की संज्ञा दी गई है और यही नौ कलाएं इनकी नौ पीठ शक्तियां कही गई हैं।

विभूति, नम्रता, कांति, तुष्टि, कीर्ति, सन्नति, पुष्टि, उत्कृष्टि तथा ऋद्धि ये नौ कलाएं अथवा पीठ शक्तियां है महालक्ष्मी की। सांसारिक बोलचाल में जिस ऋद्धि - सिद्धि की बात कही जाती

है उसका तात्पर्य यही है कि भगवती महालक्ष्मी अपनी नौ कलाओं के साथ ऋद्धि रूप में तथा भगवान श्री गणपति मंगलमय स्वरूप सिद्धि के साथ स्थापित हों। यद्यपि ऋद्धि व सिद्धि भगवान श्री गणपति के दो पत्नियों के नाम भी हैं लेकिन स्थापना के रूप में ऋद्धि - सिद्धि का यही तात्पर्य होता है।

ऋद्धि का तात्पर्य है पूर्णता जो नौ कलाओं की सर्वोच्च स्थिति है और इन नौ कलाओं में से प्रत्येक कला दूसरी कला से जुड़ी है। सांसारिक कर्त्तव्य करते हुए दान रूपी कर्त्तव्य जहां होता है वहीं लक्ष्मी की पहली कला **विभूति** उपस्थित होती है। विभूति से ही व्यक्ति में **नम्रता** का आगमन होता है जो लक्ष्मी की दूसरी पीठ शक्ति है। इन दोनों के संयोग से साधक में स्वतः ही **कांति** का प्रदुर्भाव होता है और तब उसके चेहरे पर दिव्य सौन्दर्य, जो अलौकिक सा लगे, झिलमिला उठता है। तीन कलाओं की प्राप्ति के बाद ही **पुष्टि** नामक चतुर्थ कला का आगमन होता है, वाणी- सिद्धि, कार्य सिद्धि, पुत्र - पौत्र आदि सुख, जीवन में गति आदि इसी कला से प्राप्त होती है। जिसके फलस्वरूप पांचवी कला **कीर्ति** का प्रादुर्भाव होता है। व्यक्ति को समाज में और अपने कार्यों में सम्मान मिलता है उसके जीवन में धन्यता आती है। कीर्ति साधना से **सन्नति** मुग्ध होकर विराजमान होती है और इसके बाद आगमन होता है **पुष्टि** नामक सातवीं कला का, जिससे साधक जीवन में एक सन्तुष्टि अनुभव करता है। उसे अपने जीवन का सार मालूम पड़ता है तथा वह **उत्कृष्टि** नामक आठवीं कला को धारण करने की पात्रता प्राप्त कर लेता है। उत्कृष्टि का जब जीवन में आगमन हो जाता है तब व्यक्ति के जीवन में क्षय- दोष समाप्त हो जाता है, फलस्वरूप फिर जीवन में वृद्धि ही वृद्धि होती है और लक्ष्मी स्थायित्व ग्रहण करते हुए **ऋद्धि** रूप में पूर्णता के साथ विद्यमान हो जाती है।

इन नौ कलाओं से हीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी पहले तो आ ही नहीं सकती और यदि आ भी जाए तो स्थायी नहीं रह सकती। साधक को साधना करते समय इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

वस्तुतः लक्ष्मी की साधना आध्यात्मिक साधना ही है। लक्ष्मी की साधना एकांगी साधना ही नहीं वरन भगवान श्री नारायण के साथ की संयुक्त साधना है। जिसका मूल दया में छुपा है। शास्त्रों का प्रमाण है कि दया के महागर्भ से ही भगवान श्रीमत् नारायण एवं भगवती महालक्ष्मी अपने जाज्वल्यमान स्वरूप में प्रकट होती है।

यह माह एक प्रकार से भगवान विष्णु का माह है, भगवान विष्णु के ही सर्वाधिक लोकप्रिय अवतरण भगवान श्री कृष्ण के अवतरण का माह है, साथ ही इसी भाद्रपद में मां भगवती महालक्ष्मी की ही साकार स्वरूपा राधा की राधाष्टमी का भी पर्व है अतः यदि साधक लक्ष्मी से सम्बन्धित कोई भी साधना इस माह में करता है तो उसे निश्चय ही उससे विशेष लाभ मिलता है। आवश्यक यह रहता है कि साधक उन बातों पर ध्यान केन्द्रित रखे जिनके अभाव में कोई साधना सिद्ध होती है अथवा असफल रह जाती है। **पद्म पुराण** तथा **ब्रह्म वैवर्त पुराण** में लक्ष्मी से सम्बन्धित अनेक कथाएं देते हुए यह भी वर्णित किया गया है कि लक्ष्मी का निवास कहां होता है और कहां नहीं होता।

इन शास्त्रों के अनुसार जिसकी गृहणी सुन्दरी और कलहहीना है वहां, जहां अन्न को तुस रहित अर्थात् परिष्कृत रूप में प्रयोग में लाया जाता है वहां, जो व्यक्ति जितेन्द्रिय, धर्मशील, स्वाभिमान युक्त तथा गर्व से रहित है, ऐसे व्यक्ति के पास लक्ष्मी का वास होगा। जहां गुरु पूजा, देव पूजा नियमित रूप से होती है वहीं लक्ष्मी का भी स्थान होता है। जो स्थिर रूप से शीघ्र भोजन करता है, पूर्ण स्नान करता है, जिसमें त्याग, सत्य और शौच तीन गुण होते हैं लक्ष्मी उसी के शरीर में वास करती है। लक्ष्मी का निवास पूर्ण पवित्रता एवं मंगलमयता में ही होता है अतः जो साधक जितना ही अधिक धर्मपरायण होगा वह लक्ष्मी साधना में सफलता प्राप्त करने का उतना ही सुपात्र होगा। आचार- विचार का प्रत्येक साधना में महत्व होता है लेकिन लक्ष्मी साधना में इसका स्थान सर्वोपरि है। शास्त्रों में इस बात की पूर्ण चर्चा की गई है कि किन स्थानों पर लक्ष्मी का वास होता है और किन स्थानों पर नहीं जिसका सारभूत सत्य यही उपरोक्त बात है। **जिस घर में शालीग्राम की स्थापना होती है विष्णु महायन्त्र की स्थापना होती है, तुलसी का पेड़, आंवले का वृक्ष, बिल्व वृक्ष, गाय होती है, वहां लक्ष्मी का वास निश्चय ही होता ही है।**

यह सत्य है कि लक्ष्मी चंचला है लेकिन लक्ष्मी के स्थायी न होने के पीछे साधक का भी दोष कम नहीं होता। अधूरी भावना, अधूरी साधना से तो लक्ष्मी ही क्या कोई भी देवी अथवा देवता स्थायी रूप से निवास नहीं कर सकता। इसके लिए आवश्यक है साधक के मन में लक्ष्मी के प्रति पूर्ण श्रद्धा सम्मान और भगवान श्री नारायण की अर्द्धांगिनी स्वरूप मानने की भावना प्रबल हो, उनका नित्य स्मरण एवं चिन्तन हो। शास्त्रों में विधान दिया है कि जो प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठकर आलस्य का त्याग कर, स्नान ध्यान कर लक्ष्मी के २१ नामों का स्मरण करता है वह कभी भी दरिद्री अथवा श्री हीन हो ही नहीं सकता है।

लक्ष्मी के ये २१ नाम हैं— **श्री, कमला, लक्ष्मी, विद्या, विष्णु प्रिया, विष्णु पत्नी, महादेवी, सत्या, नित्या, शुभा, गौरी, शांति, रति, पद्माक्षी, पद्महस्ता, पद्मालया, पद्म सुन्दरी, क्षीरोदतन्या, रमा, सर्वसुख प्रदा, लीला।**

आवश्यकता है इस बात की कि साधक जहां लक्ष्मी के सम्बन्धित स्वरूप की साधना करें वहीं लक्ष्मी का पूर्ण चिन्तन-मनन भी करता हुआ उनके ऋद्धि स्वरूप को स्थापित करने का प्रयास करें। साधना एक यंत्रवत् प्रक्रिया नहीं है। उसमें भावना का स्थान सर्वोपरि है। इस चिन्तन से सदैव अनुप्राणित रहें।

वायुगमन भारतीय साधना पद्धति के अन्तर्गत मात्र कौतूहल या प्रयोग का विषय नहीं वरन् गम्भीर अर्थ समेटे है। भारत की यह प्राचीन महाविद्या योगियों की सबसे अधिक प्रिय विद्या रही है जिसके माध्यम से वे बिना किसी माध्यम के क्षणमात्र में इच्छित स्थान पर तो आ-जा सकते ही थे, साथ ही इसी विद्या के माध्यम से अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की भी पूर्ति कर सकते थे, क्योंकि जिसने वायुगमन अर्थात् शून्य गमन का आश्रय लिया वह स्वतः ही शून्य सिद्धि प्राप्त करने का अधिकारी भी हो ही जाता है। इसका कारण है कि व्यक्ति अपने शरीर को पंचवर्गात्मक स्वरूप (आकाश, जल, अग्नि, भूमि एवं वायु) से निकाल कर जब चतुवर्गात्मक स्वरूप में ले आता है तो वह स्वतः ही जीवन के अनेक दुर्लभ रहस्यों का ज्ञाता और उपभोग करने वाला हो ही जाता है।

दूसरी ओर आध्यात्मिक जगत में इस साधना का जो महत्व है उसकी तो कभी चर्चा ही नहीं की गयी। वायुगमन साधना का जहां एक ओर अर्थ है कि व्यक्ति अपने शरीर को वायु के समान हल्का बनाकर विचरण कर सके, वहीं यह शून्य आसन का भी रहस्य है। **वस्तुतः उच्चकोटि के योगी अपनी साधना हेतु जो आसन लगाते है वह धरती पर न होकर धरती से आठ दस फीट ऊपर शून्य में स्थित होता है क्योंकि उच्चकोटि की साधनाएं शुद्ध आसन के बिना सफल हो ही नहीं सकती** जबकि यह धरा मल-मूत्र और निरन्तर रक्तपात से इस प्रकार दूषित हो गयी है जहां कोई भी स्थान पवित्र नहीं रह गया है। ऐसी दशा में साधक के समक्ष दो ही मार्ग बचते है कि या तो वह सिद्धाश्रम की पवित्र भूमि पर साधनाएं करे अथवा शून्य में आसन सिद्ध कर तीव्रता से आगे बढ़ सके।

वायुगमन, आकाश गमन, शून्य मार्ग सिद्धि और शून्य पदार्थ सिद्धि, इन सभी का मूल रहस्य एक ही बात में छुपा है! . . . कि कैसे शरीर का भूमि तत्व लुप्त किया जा सके, प्रस्तुत है, साधना के इस जटिल पक्ष से सम्बन्धित महाविद्या साधना पर आधारित गुह्य पद्धति . . .

योग-पद्धति के अर्न्तगत् यह साधना जिस प्रकार से सिद्ध की जाती है उसमें साधक को अपने नाभि प्रदेश को आलोड़ित और स्पंदित कर इस प्रकार एक सेकेण्ड में साठ हजार चक्र की गति से नाभि को घुमाना होता है जिससे शरीर स्वतः ही हल्का होकर वायु में उठ जाए। वायुयान का भी यही सिद्धान्त होता है किन्तु वर्तमान में योग की यह पद्धति न केवल कठिन वरन दुर्लभ भी हो गई है। इसके लिए सतत् प्रयास एवं धैर्य की आवश्यकता पड़ती है तथा इस प्रकार से साधना करने के लिए समय की भी प्रचुरता होनी चाहिए जो कि विरक्त एवं घर-परिवार से अलग साधकों के लिए ही सम्भव होती है।

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह विद्या केवल योगियों अथवा विरक्त साधकों की ही धरोहर है। कोई भी साधक जो तीव्रता से साधना में आगे बढ़ने का इच्छुक हो, शून्य आसन सिद्ध कर, उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न करते हुए

सशरीर सिद्धाश्रम में प्रवेश करने की भावना रखता हो वह इसे सिद्ध कर सकता है। भारतीय साधना पद्धति में कोई भी विद्या एक ही ढंग से सिद्ध की ही नहीं जाती है और विभिन्न साधना-पद्धतियों को प्रस्तुत करने का कारण भी यही है कि जिसके संस्कार जिस साधना पद्धति से मेल खा जाएं, वह उसे ही ग्रहण कर आगे बढ़ सके।

वायुगमन की इन्हीं पद्धतियों में एक पद्धति जो युगों से परीक्षित रही है वह है महाविद्या साधना पद्धति पर आधारित **भुवनेश्वरी साधना पद्धति**। महाविद्या साधनाएं केवल मां भगवती जगदम्बा के विभिन्न शक्ति स्वरूपों की ही साधनाएं नहीं है वरन् इनमें अलौकिक सिद्धियों के भी रहस्य छिपे हुए है और जब साधक प्रामाणिक पद्धति से साधनारत होता है तो उसे सफलता भी प्राप्त होती ही है। अंतर केवल यह होता है कि किसी को सफलता शीघ्र मिलती है और किसी को कुछ विलम्ब से, जिसके मूल में साधक का विश्वास, धैर्य, पूर्वजन्मकृत दोष आदि कारण निहित होते है।

अब क्षण आ गए हैं कि महाविद्या साधना से सम्बन्धित जो गोपनीय पक्ष हैं वे समाज के सामने प्रकट किये जाएं।

प्रस्तुत साधना पद्धति इसी बात का प्रयास है . . . .

महाविद्या साधनाओं के अन्तर्गत् किस प्रकार से गोपनीय रहस्य छुपे है इसका ज्ञान मुझे तब हुआ जब मेरी भेंट अभी कुछ दिन पूर्व **स्वामी प्रबोधानन्द जी** से हुई। योगीराज अब तक इस भौतिक देह से अस्सी वर्ष सम्पूर्ण कर चुके है, यद्यपि योगी की वास्तविक आयु का किसे ज्ञान हो सका है? जिस प्रकार मैंने उनको तीस वर्ष पूर्व मनाली के समीप व्यास आश्रम के पास निश्चिंत, तृप्त और आह्लादित अनुभव किया था, वे उसी अनुसार ही मिले। उसी प्रकार उनके तन पर मात्र एक धोती पड़ी थी जिसे वे ओढ़े भी थे और पहने भी थे तथा निश्छल भाव से उसी प्रकार कौतुक से भरे थे, जो उनकी चिरपरिचित शैली हुआ करती थी।

ज्यों प्रकृति का स्वरूप क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है और जिस प्रकार कोई अबोध शिशु उसे देखकर आश्चर्य में भरा रहता है वही स्वरूप है योगीराज प्रबोधानन्द जी का। हम लोगों के शब्दों में 'योगीराज', पूज्य गुरुदेव के लिए केवल प्रबोध! और जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव उन्हें पुकारते थे उससे प्रतीत होता था मानो कह रहे हो "अबोध"। सचमुच उनका सम्पूर्ण व्यवहार इतना ही निश्छल और निर्मल रहा करता था। मुझे लगा ही नहीं कि मैं उनसे इतने लम्बे अंतराल के बाद मिल रहा हूं और वे भी बच्चों की ही तरह अपनी सारी बाते बताने की हड़बड़ी में भरे थे। **जहां उच्चकोटि के साधक अनुभूतियों की चर्चा करने पर बात को दूसरा मोड़ दे देते है अथवा मौन हो जाते है वही प्रबोधानन्द जी सदैव से अपनी साधनाओं के मध्य हुई अनुभूतियों को खुलकर ही बताते रहे हैं,** वस्तुतः उन्हें लगता ही नहीं था कि वे साधनात्मक जीवन की चर्चा कर रहे है अपितु वे तो सरल भाव से मां लीलाविहारिणी के भाव राज्य में जो कुछ भी सूक्ष्म दृष्टि से घटित होता देखते थे उसे कौतूहलवश बताए बिना रह ही नहीं पाते थे, यद्यपि इसके लिए उन्हें कई बाद पूज्य गुरुदेव की कड़ी डांट पड़ी लेकिन वे अपने को बदल नहीं पाए।

पिछले दिनों जब मैं पुनः मनाली की ओर गया तो ठीक उसी स्थान पर उनसे अचानक भेंट हो गयी और तीस वर्षों का अंतराल तीस सेकेण्ड में समाप्त हो गया। मैंने उन्हें अपनी स्थितियों के विषय में बताया और वे भी पहले की अपेक्षा कुछ गंभीर होकर मेरे साथ साधनात्मक चर्चाओं में डूब गए। उन्हीं से मुझ ज्ञात हुआ कि अलग होने के बाद पूज्य गुरुदेव ने उन्हें उनकी प्रिय साधना भुवनेश्वरी महाविद्या साधना को पूर्णता से सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी और वे इसे निर्विघ्न रूप से सम्पन्न करने के लिए कहीं एकांत में चले गए थे। **स्वामी प्रबोधानन्द जी** से ही मुझे ज्ञात हुआ कि महाविद्या साधनाएं तो अपने-आप में सम्पूर्ण साधना पद्धति है। **ये केवल सांसारिक विषयों तक ही सीमित नही अपितु अष्टादश सिद्धियों को भी अपने में समेटे है और स्वामी जी के ही अनुसार अब समय आ गया है जब जनसामान्य के मध्य इनकी विशदता की चर्चा कर इन्हें सम्मानपूर्ण स्थान दिलाया जाए।** समाज आज महाविद्या साधनाओं में से केवल एक

महाविद्या बगलामुखी से ही परिचित है जबकि शेष नौ महाविद्या साधनाएं भी अत्यंत उच्चकोटि की और गृहस्थ वर्ग द्वारा अपनाई जाने योग्य है।

स्वामी जी ने मुझे बताया कि जब उन्होंने पूज्य गुरुदेव द्वारा बतायी विधि से भुवनेश्वरी साधना प्रारम्भ की तो प्रारम्भ से ही उनकी भूख प्यास आदि शनैः शनैः समाप्त होती गयी और वे धीमे-धीमे एक अनिर्वचनीय सुख में डूबे रहने लग गए। मल-मूत्र त्याग की आवश्यकता न होने के कारण उनके आनन्द में कोई विघ्न नहीं पड़ता था **और इसी अवस्था के दौरान जब एक दिन उनकी आंख खुली तो उन्होंने पाया कि वे जमीन से तीन चार फुट की ऊंचाई पर पद्मासन में ही स्थिति है।** वे अपने को एकाएक ऐसी दशा में देखकर घबरा गए किन्तु कुछ समय बाद स्थिति सामान्य हो गयी। बाद में तो यह दशा जब-तब उत्पन्न होने लग गयी और वे भी इसके अभ्यस्त हो गए। साथ ही उन्होंने अनुभव भी किया कि इस दशा में उनके चित्त में एक अतिरिक्त निर्मलता, शीतलता और शांति आ जाती है।

इसके बाद तो उन्होंने अन्य महाविद्या साधनाए भी की उनके अलौकिक रहस्य ढूंढे ओर विलक्षण अनुभूतियां प्राप्त की किन्तु निष्कर्ष-रूप में यही कह सके कि भुवनेश्वरी महाविद्या से श्रेष्ठ कोई भी अन्य महाविद्या नहीं है क्योंकि भुवनेश्वरी साक्षात् प्रकृति स्वरूपा एवं ब्रह्म स्वरूपा महाविद्या जो है। यही वे महाविद्या है जो योगियों व गृहस्थों के मध्य समान रूप से लोकप्रिय व हितकारी है। **जिस प्रकार षोडशी त्रिपुर सुंदरी के साधक को भोग एवं मोक्ष दोनों ही सुलभ होते है उसी प्रकार भुवनेश्वरी के साधक को भी। षोडशी की अपेक्षा इनकी साधना और भी अधिक सहज व शीघ्र सिद्ध होने वाली है।** गृहस्थ सुख की पूर्णता के लिए तो समस्त महाविद्याओं में भुवनेश्वरी के अतिरिक्त कोई महाविद्या है ही नहीं।

भुवनेश्वरी साधना के विविध पक्षों में से हम इस बार जो साधना प्रस्तुत कर रहे है वह पूर्ण रूप से शून्य साधना सिद्धि पर आधारित है जिसके फलस्वरूप साधक वायुगमन की क्रिया में तो निष्णात होता ही है साथ ही साथ शून्य साधना के अनेक अन्य लाभ प्राप्त करने का अधिकारी भी बन जाता है। **प्रस्तुत साधना विधान स्वामी प्रबोधानन्द जी द्वारा स्वयं खोजी गयी पद्धति पर आधारित है।**

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक के लिए आवश्यक है कि वह किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में सोमवार अथवा शुक्रवार को रात्रि में दस बजे के बाद साधना में प्रवृत्त हो। वस्त्र, आसन, सामने बिछाया जाने वाला कपड़ा श्वेत हो तथा स्नान आदि कर स्वच्छ मनोभाव के साथ साधना को प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम आचमनी से तीन बार जल ले कर पी लें और अपने आसन का पुष्प, अक्षत, कुंकुम से पूजन कर निम्न प्रकार से न्यास करें—

हृदयादि न्यास	**कर न्यास**
ह्रीं हृदयाय नमः	**ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः**
श्रीं शिरसे स्वाहा	**श्रीं तर्जनीभ्यां नमः**
ऐं शिखायै वषट्	**ऐं मध्यमाभ्यां नमः**
ह्रीं कवचाय हुं	**ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः**
श्रीं नेत्र त्रयाय वौषट्	**श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः**
ऐं अस्त्राय फट्	**ऐं करतल करपृष्टाभ्यां नमः**

उपरोक्त ढंग से न्यास करने के बाद अपने समक्ष **प्राण-प्रतिष्ठित भुवनेश्वरी यंत्र** स्थापित कर उसका सामान्य पूजन कर एक **सियार सिंगी** को भी स्थापित करें जो प्राणों को उर्ध्व गति देने में सक्षम होती है। **पारद गुटिका** का इस साधना में सर्वोपरि महत्व है क्योंकि पारद के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर में से भूमितत्व का लोप एवं पुनर्स्थापन कर सकता है। इन सभी सामग्रियों को भी यंत्र के समीप रख दें। इनका पूजन आवश्यक नहीं है। इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी की निम्न प्रकार से स्तुति एवं ध्यान करें—

नमस्ते समस्तेशि बिन्दुस्वरूपे नमस्ते रवतत्वेन तत्वाभिधाने।
नमस्ते महत्वं प्रपन्नेप्रधाने नमस्ते त्वहहंकारतत्वस्वरूपे।।
नमः शब्द रूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्श रूपे नमो वायुरूपे।
नमो रूपतेजोरसाम्भः स्वरूपे नमस्तेस्तु गन्धात्मिकेभूस्वरूपे।।

इसके बाद **भुवनेश्वरी माला** से मूल मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र

"ह्रीं"

मंत्र-जप के उपरांत दूसरे दिन **पारद गुटिका को छोड़** शेष सामग्री विसर्जित कर दे जबकि पारद गुटिका को अपने शरीर पर धारण कर ले। आगे के समय में दिन में जब भी अवसर मिले उपरोक्त मंत्र को तीस मिनट तक जपे। इसमें माला, दिशा आदि का बंधन नहीं है केवल शुद्धता होनी आवश्यक है। एक माह बीतते-बीतते साधक को इस दिशा में पर्याप्त अनुभूति होनी प्रारम्भ हो जाती है। **यह ध्यान रखें कि यह मूल रूप से भुवनेश्वरी महाविद्या की साधना नहीं वरन् उनके एक विशेष प्रभाव की साधना है। पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना को सिद्ध करने की पद्धति सर्वथा भिन्न है।**

सूचना

पूरे भारत में और विदेशों में फैले हुए समस्त शिष्यों साधकों और पाठकों को इन पंक्तियों के माध्यम से स्पष्टः सूचना दे देना अपना कर्तव्य समझता हूं कि. . .

- किसी भी शिष्य या व्यक्ति को जो गुरुदेव में श्रद्धा रखते हैं, और दीक्षा लेने के इच्छुक हैं, **उन्हें केवल पूज्य गुरुदेव ही दीक्षा दे सकते हैं,** गुरुदेव ने किसी अन्य शिष्य या साधक को इसके लिए अधिकृत नहीं किया है।

- सुना है कि कई स्थानों पर कुछ लोग भोले- भोले लोगों को यह कह कर दीक्षा दे देते हैं कि गुरुदेव ने मुझे आज्ञा दी है, या अधिकृत किया है. . . जबकि यह गलत है, कुछ पांखडियों ने तो विधिवत् लेटर पैड छपवा दिये हैं, जिसमें अपना नाम और नीचे **''नारायण दत्त श्रीमाली जी की आज्ञा से''** या **''गुरुदेव का परम प्रिय शिष्य''** या **''गुरुदेव द्वारा दीक्षा देने का अधिकृत शिष्य''** छाप दिया है, यह असत्य है, गुमराह करने की क्रिया है।

- जहां कहीं भी **''ऐसे लोग''** या पांखडी **''गुरुदेव के तथाकथित शिष्य''** मिले तो हमें सूचना दें, कुछ लोगों के नाम तो हमने सी. बी. आई. को दिये भी हैं और उन्हें गिरफ्तार भी किया है।

- . . . कुछ लोगों ने **''सिद्धाश्रम भवन निर्माण हेतु''** रसीद बुक छपा कर धनराशि प्राप्त की है (उसमें ऊपर जोधपुर का पता छपा था व नीचे स्थानीय कार्यालय कर अपना पता छापा था) ऐसा कोई व्यक्ति अधिकृत हमने नहीं किया है, यह फ्राड है, मध्य प्रदेश में ऐसा ही एक व्यक्ति पकड़ा गया है, और उसे पिछले ही दिनों सजा हुई है।

- . . . कुछ लोगों ने छोटी- छोटी पत्रिकाएं निकालनी शुरू की है और उसमें **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका के लेख ज्यों के त्यों छाप दिये हैं व यंत्र सामग्री आदि के बारे में प्रकाशित किया है यह सब नकली है, और **इस सम्बन्ध में हमने सी. बी. आई. को सूचित कर दिया है।** हमारी तरफ से ऐसी कोई अलग से पत्रिका प्रकाशित नहीं हो रही है।

*आपको जहां कहीं भी **''गुरुदेव''** के नाम से **''अनुष्ठान''** कराते हुए नकली शिष्य बताते हुए मिले तो प्रमाण सहित हमें सूचना दें, पत्रिका कार्यालय निश्चित रूप से ऐसे लोगों पर कार्यवाही करेगी।*

ये अनोखे विधान शिव पूजन के

भगवान शिव का नाम होठों पर आया नहीं कि आंखों के सामने एक ऐसे देव का चित्र उपस्थित हो जाता है जो सर्वसम्पदा युक्त होते हुए भी केवल बाघम्बर लपेटे हुए हैं, गृहस्थ होते हुए भी तनाव रहित हैं और पूर्णरूप से सांसारिक दिखते हुए भी अपने साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रहस्य समेटे नितान्त अबोध भाव से गतिशील हैं।

ऐसे अनोखे देव की साधना-उपासना के विधानों में भी यदि अनोखापन आ सामाया हो तो आश्चर्य भी कैसा?

मनुष्यों से भी अधिक देवताओं, योगियों और प्रचण्ड साधकों के द्वारा पूज्य भगवान शिव की साधना किन-किन रूपों में की जाती है, इसका संक्षिप्त परिचय शिवलिंग पूजन से सम्बन्धित विवरण में दिया है। जहां वर्णित किया है कि किस प्रकार से किसी विशिष्ट शिवलिंग पूजन के द्वारा साधक अपने जीवन का कौन सा अभीष्ट प्राप्त कर सकता है। केवल अनेक प्रकार के शिवलिंगों के पूजन के द्वारा ही नहीं वरन् भगवान शिव की अनेक रूपों में पूजा करके भी जीवन में सुख और ऐश्वर्य को प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार विचित्र रूपों में शिवलिंग निर्मित करने के विधान हैं, उसी प्रकार सर्वथा नूतन ढंग से भगवान शिव की साधना करने के भी विधान हैं।

अनेक प्रकार के पुष्पों, विविध प्रकार के नैवेद्य समर्पण के द्वारा भी जीवन में वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जिसे प्राप्त करने के लिए साधक को कड़ी साधनाएं करनी पड़ती हैं। महाशिवरात्रि के उपरान्त श्रावण माह ही एक ऐसा अवसर होता है जब भगवान शिव की साधना भली-भांति सम्पन्न की जा सकती है। श्रावण माह इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय है क्योंकि साधक के सामने तीस दिनों का ऐसा विस्तृत साधना काल उपस्थित होता है जब वह अपनी इच्छानुसार कभी भी साधना सम्पन्न कर सकता है। यों तो शिव-साधना में सोमवारों का महत्व ही सर्वाधिक है, किन्तु यह बन्धन नहीं है कि साधक केवल सोमवार को ही साधना करे। पूरा

मनोरंजन व ज्ञान का भरपूर खज़ाना

प्रथम सेट की अपूर्व सफलता के कारण छः पुस्तकों के स्थान पर आठ पुस्तकों की द्वितीय श्रृंखला . . .

सौन्दर्य

नयी परिभाषाएं, नयी व्याख्याएं, एक-एक शब्द सरसता में डूबा, मानों शब्दों से ही सौन्दर्य मूर्त रूप में खुद ब खुद ढल रहा हो प्रत्येक लेख अपूर्व मादकता में सराबोर।

तारा साधना

दरिद्रता के अंधकार से तारण देने वाली महाविद्या तारा की सिद्ध साधना पद्धति जिसके आधार पर साधकों ने नित्य प्रातः सिरहाने दो तोला सोना प्राप्त करना स्वयं अनुभव किया ही है।

तंत्र साधनाएं

युग के ही अनुरूप विभिन्न देवी-देवताओं की गोपनीय तांत्रोक्त साधनाओं को लघु कलेवर में पूर्णता से प्रकाशित करने का प्रथम व दुर्लभ अवसर।

जगदम्बा साधना

प्रत्येक शक्ति साधना, महाविद्या साधना अथवा किसी भी तांत्रोक्त साधना को सिद्ध कर लेने की, प्रथम बार में पूर्णता प्राप्त कर लेने की क्रिया, साथ ही मां भगवती जगदम्बा के जाज्वल्य रूप के दर्शन प्राप्त कर लेने का रहस्य भी तो!
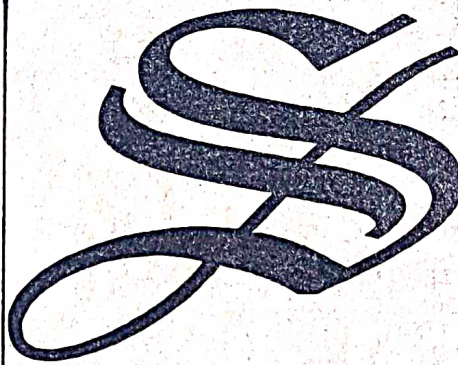
सीरिज के ब . . . ढ़ . . . ते क . . . द . . . म

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ५/-

पूर्ण जानकारी के लिए

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, (राज.) - ३४२००१

फोनः ०२९१-३२२०९

अथवा

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४

फोनः ०११-७१८२२४८

शिव साधना

सब कुछ किया किंतु इन औढरदानी देव का रहस्य न जाना, प्रसन्न करने की साधना पद्धति न प्राप्त की तो सब कुछ अधूरा ही रह जाता है क्योंकि जहां शिव है वहीं जीवन की पूर्णता, चैतन्यता, आनंद और निरोगता भी तो है।

उर्वशी साधना

प्रथम सेट में प्रकाशित *'अप्सरा साधना सिद्धि'* को विस्तार से प्रस्तुत करने के पाठकों के विशेष आग्रह के क्रम में एक सजीव पुस्तक। विवरण की अनोखी शैली, गोपनीय आबद्ध प्रयोग के साथ।

हिप्नोटिज्म

सम्मोहन के विशाल विषय को सरलता से लघु कलेवर में समेटने की क्रिया, जिससे साधक को अल्पकाल में ही सम्मोहन का महत्व और विशेष सूत्र मिल सके।

स्वर्ण सिद्धि

कीमियागीरी अर्थात् स्वर्ण निर्माण पद्धति भारत की ही सारे विश्व को देन रही है। इसी को सप्रमाण बताती हुई एक अनोखी पुस्तक।

अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर की नवीन प्रस्तुतियां!

माह पवित्र व चैतन्य होने के कारण साधक इस माह के किसी भी दिवस का उपयोग कर ही सकता है।

शास्त्रों में इस बात के उल्लेख मिलते हैं कि किस प्रकार से किसी भी चैतन्य एवं प्राण-प्रतिष्ठित शिवलिंग पर साधक कोई एक विशिष्ट वस्तु अर्पित कर अपना मनोवांछित प्राप्त कर सकता है और इसके लिए आवश्यक है कि साधक के पास प्राण-प्रतिष्ठित एवं चैतन्य पारद शिवलिंग अथवा नर्मदेश्वर शिवलिंग उपलब्ध हो। इन दोनों में से पारद शिवलिंग की महत्ता अधिक मानी गई है क्योंकि पारद शिवलिंग अपने स्वरूप में विशिष्ट होने के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, जबकि अन्य शिवलिंगों को विस्थापित करने में दोष माना गया है।

रुद्र संहिता में नर्मदेश्वर शिवलिंग पर अटूट लक्ष्मी प्रयोग बताया गया है। किसी भी बुधवार की प्रातः यदि साधक चावल के एक सौ आठ बिना टूटे (अक्षत) दाने, नर्मदेश्वर शिवलिंग पर इस मनोकामना के साथ चढ़ाता है कि उसके जीवन की दरिद्रता दूर हो, तो उसे निश्चित रूप से ऐसा ही फल प्राप्त होता है। **अखण्ड लक्ष्मी** की प्राप्ति की कामना रखने वाले साधक के लिए आवश्यक होता है कि वह नर्मदेश्वर शिवलिंग पर एक सौ आठ कमल बीजों को संकल्प पूर्वक चढ़ाएं। भगवान शिव के किसी भी मंत्र-सिद्ध एवं चैतन्य शिवलिंग पर यदि गंध पुष्प आदि से पंचोपचार पूजन कर अंत में एक **लघु नारियल** चढ़ा दिया जाय, तो ऐसे पूजन से साधक को पूर्ण शिव साधना का लाभ मिलता है। उच्चकोटि के साधक पूरे श्रावण माह इस लघु प्रयोग को सम्पन्न करने के उपरान्त ही शिव साधना में प्रवृत्त होते हैं और अपने मनोवांछित लाभ को प्राप्त करते हैं।

भगवान शिव विशेष रूप से पुष्प-प्रिय हैं और भांति-भांति के पुष्पों से यदि उनका श्रृंगार किया जाता है तो वे उसी अनुरूप साधक को फल प्रदान करने में तत्पर भी होते हैं। भगवान शिव का सर्वाधिक प्रिय पुष्प **कमल** माना गया है और जो साधक उनकी कमल से पूजन-अर्चना करता है उसे निश्चित रूप से लक्ष्मी की प्राप्ति होती ही है। भगवान शिव का अन्य प्रिय पुष्प **धतूरा** वर्णित किया गया है। धतूरा भी यदि लाल डंठल वाला हो तो वह विशेष फलदायक माना जाता है। शास्त्रों में ऐसा वर्णित है कि यदि कोई साधक पारद शिवलिंग का पूजन श्रावण मास के किसी भी सोमवार को एक लाख धतूरे के द्वारा करता है, तो चाहे उसके भाग्य में पुत्र-योग न भी हो, फिर भी पुत्र लाभ होता ही है। आक, अपामार्ग भी भगवान शिव के इसी प्रकार प्रिय पुष्प हैं।
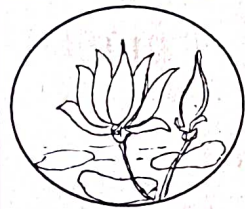
यह एक विचित्र सी बात है कि जो कुछ भी इस प्रकृति में त्याज्य है उसी से भगवान शिव की आराधना और भी अधिक सफल रूप से की जा सकती है। आक के पुष्प, धतूरा, बेल पत्र इत्यादि से पूजन इसका उदाहरण है।

सुगन्धित पुष्पों में भगवान शिव को **चमेली** का पुष्प मनोहारी कहकर वर्णित किया गया है। इस रूप में भगवान शिव का पूजन करने से साधक को मनोवांछित वाहन सुख प्राप्त होता है। **बन्धूक** के पुष्पों द्वारा श्रेष्ठ आभूषण मिलते हैं, तो **कनेर** के पुष्पों द्वारा शिवलिंग का श्रृंगार करने पर घर में अन्नपूर्णा का चिरवास होता है और **वेले के फूल** द्वारा सम्पूर्ण पूजन करने पर अत्यन्त शुभ्र वर्ण की श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त पत्नी प्राप्त होती है। यद्यपि **तुलसीदल** भगवान विष्णु की प्रिय पूजन सामग्री है किन्तु तुलसीदल से भगवान शिव की भी यदि पूजा की जाए, तो साधक को भोग व मोक्ष दोनों ही प्राप्त होते हैं।

यद्यपि भगवान शिव को सभी प्रकार के पुष्प भेंट किये जा सकते हैं और झाड़ियों में उगने वाले जंगली पुष्प उन्हें अत्यन्त प्रिय हैं **किन्तु चम्पा एवं केवड़ा इन पुष्पों से भगवान शिव की पूजा-साधना कदापि नहीं की जाती है।**

जिस प्रकार पुष्पों के द्वारा पूजन के अलग-अलग विधान हैं, उसी प्रकार से अलग-अलग ढंग से नैवेद्य भी साधक को मनोवांछित फल प्रदान करने में समर्थ होते हैं। **तिल** द्वारा भगवान शिव को एक लाख आहुति देने से सम्पूर्ण पाप समाप्त होते हैं। जबकि **जौ** द्वारा पूजन करने से आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है। **मधु** से शिव की पूजा करने से कैसा भी गम्भीर रोग हो शांत होता है और **गेहूं** से बने भोग से सम्पूर्ण साधना का फल प्राप्त होता है। यदि कोई नपुंसकता से ग्रस्त हो तो उसे चाहिए कि वह **घी** से भगवान शिव का पूजन करे। बुद्धि प्राप्ति करने के लिए **दुग्ध** (सुवासित एवं सुमधुर) की धार द्वारा सम्पूर्ण श्रावण माह में पारद शिवलिंग का अभिषेक कर उस जल को ग्रहण करना चाहिए।

यद्यपि ऐसे पूजन के विधान बहुत अधिक विस्तृत है और अपने विशिष्ट स्वरूप में सम्पन्न किए जाते हैं किन्तु पाठकों के लाभार्थ मैंने यहां केवल उन्हीं विधानों को स्पष्ट किया है जिन्हें पाठक सरलता पूर्वक अपने घर में श्रेष्ठ शिवलिंग स्थापित कर सम्पन्न कर सकें। शिवलिंग के विषय में यह बात ध्यान देने योग्य है कि शिवलिंग कभी भी दो की संख्या में नहीं स्थापित होने चाहिए। एक अथवा तीन शिवलिंग स्थापित करना ही शुभ माना गया है। साधक इनमें से किसी भी विधान को अपना कर स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि शास्त्रों में वर्णित छोटे-छोटे प्रयोग भी कितने अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

मैं तो भई कृष्णमयी

भगवान श्री कृष्ण यद्यपि भगवान विष्णु के अवतार रूप में इस धरा पर आए लेकिन उनकी कलाओं और उनके सौन्दर्य के कारण समाज ने उन्हें देवता से भी अधिक आत्मीय माना। वह एक प्रकार से उनके ही रंग में रंग गए। विशेषता तो इस बात की है कि उनके प्रत्येक स्वरूप के साथ समाज भाव-विभोर हुआ और जीवन में आनन्द के नए - नए पक्ष खोजे। मीरा, सूर से लेकर बाद के अनेक कवि ही नहीं सम्पूर्ण समाज में उनके रंग में यूं रंगा कि सहज कह उठा — मैं तो भई कृष्ण मयी।

भगवान श्री कृष्ण के सौन्दर्य और बाल सुलभ लीलाओं में ही ऐसा आकर्षण था जिससे कोई भी हतप्रभ हुए बिना कैसे रह पाता।

कल बल कै हरि आरि परे।
नव रंग विमल नवीन जलधि पर, मानहुं द्वै ससि आनि अरे।।
जे गिरि कमठ सुरासुर सर्पहिं धरत न मन मैं नैंकु डरे।
ते भुज भूषन-भार परत कर गोपिनि के आधार धरे।।
सूर स्याम दधि-भाजन-भीतर निरखत मुख मुख तैं न टरे।
विवि चन्द्रमा मनौ मथि काढ़े, बिहंसनि मनहुं प्रकास करे।।

अर्थात् तोतली बोली बोलते हुए श्याम मचल रहे हैं, दही मथने का मटका पकड़ कर ऐसे लग रहें हैं मानों क्षीर सागर पर दो चन्द्रमा आकर रूके हों। जो भुजाएं समुंद्र मंथन के समय मंद्राचल को, कच्छप को, देवताओं, दैत्यों एवं वासुकी नाग को धारण करते समय नहीं थकी, वही भुजाएं आभूषणों के भार से गिरी पड़ रही हैं। श्याम सुन्दर दही के मटके के भीतर अपने मुख को देखते हुए माता के मुख के पास अपना मुख नहीं हटा रहे हैं। मानो समुद्र का मंथन करके दो चन्द्रमा निकले हैं और उनके हंसने से चांदनी का निर्मल प्रकाश विस्तीर्ण हो रहा है।

वालपन के इस अद्‌भुत सौन्दर्य के वाद आती है पूर्ण यौवन की वह सौन्दर्य भरी छवि जिसकी तो कोई उपमा ही नहीं है और उस सौन्दर्य पर जिसकी भी दृष्टि पड़ी वह ठगा सा खड़ा रह गया। फिर इस जगत में तो क्या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इस प्रकार का सौन्दर्य दिखाई नहीं दिया. . .
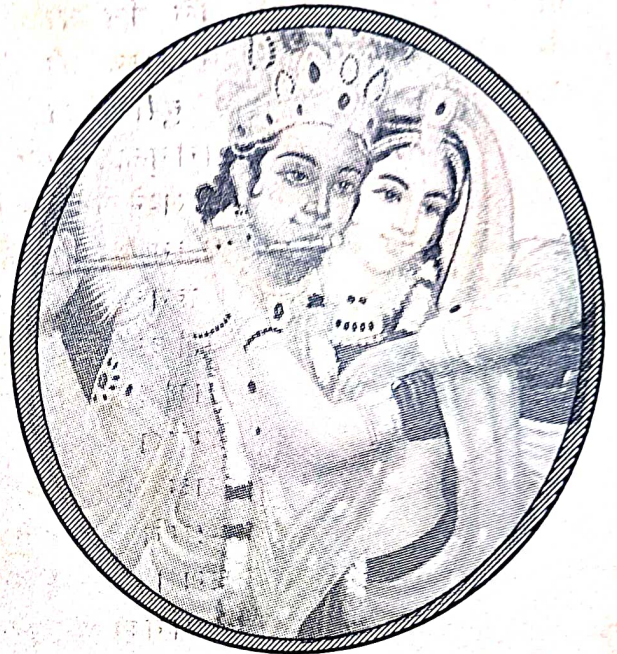
जब ते मोहि नन्दनन्दन दृष्टि पड़यो माई
तब से परलोक लोक कछु न सुहाई
मोहन की चन्द्रकला सीस मुकुट सोहै
केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहै
कुण्डल की अलक झलक कपोलन पर छाई
मानो मीन सरोवर तजि मकर मिलन आई
कुटिल तिलक भाल चितवन में टोना
खंजन अरू मधुप मीन भूले मृग छौना
सुन्दर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा
नटवर प्रभु वेष धरे रूप अति बिसेखा
अधर बिम्ब अरूण नैन मधुर मन्द हांसी
दसन दमक दाड़िम द्युति अति चपला सी
छुद्र घटिंका किंकनी अनूप धुनि सुहाई
गिरधर के अंग अंग मीरा बलि जाई

केवल भगवान श्री कृष्ण का सौन्दर्य ही नहीं उनके साथ- साथ प्रकृति भी सौन्दर्य से भर गयी थी। जिस भूमि पर उनकी लीलाएं हुई वह वृन्दावन ही क्या कम सुन्दर था? जिस प्रकार उनके अंग - अंग में चपलता भरी हुई थी उसी प्रकार उस भूमि के कण- कण में तो अनोखी रसमयता आ समायी थी और तभी तो वहां जो कुछ प्रेम की गाथाएं रची गई वह अमिट हो गयी।

हौं ही ब्रज वृन्दावन मोहीं मैं बसत सदा
यमुना तरंग स्याम रंग अवलीन की
'देव' दई सुन्दर सघन वन देखियत
कुंजन मे सुनियत गुंजनि अलीन की
बंसीवट तट नट नागर नचत मों पै
रास के विलास की मधुर धुनि बीन की
भरि रही भनक बनक ताल तानन की
तनक तनक तामे झनक चुरीन की

. . . हे सखि! कृष्ण की लीलास्थली वृन्दावन मुझमें बसी ही है। इसी से यमुना की उन लहरों को मैं अपने पास ही मानती हूं जिसमें मेरे श्याम का रंग घुला है। वहां बसा सुन्दर वन भी मैं नित देखती हूं और वन में बने कुंजों में मंडराते भौरों के झंकार को भी नित्य ही सुनती हूं। मेरे हृदय में वंशी वट के किनारे नित्य रास लीला होती है। गोपियों की ध्वनि, उनकी चूड़ियों की झंकार, विभिन्न राग- रागनियों की ताल सब कुछ मेरे अन्दर बस गयी है।

केवल उस युग में ही नहीं वृन्दावन आज तक सौन्दर्य का पर्याय बना है। कृष्ण की एक -एक अठखेलियों का साक्षी बना है। जहां उन्होंने साधारण से साधारण घटना में भी अपनी चतुराई से कुछ ऐसी बात पैदा कर दी जो अविस्मरणीय हो गई। चाहे वह माखन चोरी की घटना हो, गोपियों के वस्त्र चुरा लेने की बात हो, लुका- छुपी या छेड़खानी की बात हो, सभी कुछ में उनकी अलग शैली दिखती ही है।

आई ही गाय दुहाइबे को, सु चुखाई चली न बछान को घेरति
नैकु डराय नहीं कब की वह माइ रिसाय अटा चढ़ि टेरति।
यों कवि देव बड़े खन की सु बडो दृग बीच बड़े दृग फेरति।
हौं मुख हेरति ही कब की जब की यह मोहन को मुख हेरति।।

. . . कोई श्री कृष्ण से अपने गाय का दूध दुहाने को आई है लेकिन वह सब कुछ भूल गई है, बछड़ा गाय का दूध पीए जा रहा है या मां अट्टालिका पर चढ़कर क्रोधित हो आवाजें दे रही है, लेकिन वह तो अपने बड़े- वड़े नेत्रों से कृष्ण को देखते हुए थक ही नहीं रही है, और उसके चेहरे पर एक के बाद एक भाव आते जा रहे हैं।

कृष्ण ऐसे ही सौन्दर्यमय थे। इसी से जो उनका हुआ वह उनका ही हो गया। उसे फिर उनके सिवा कुछ भी अच्छा नहीं लगा। सौन्दर्य और पुरुषोचित प्रेम की वे जीती जागती मिसाल थे ही।

जाके उरवसी रसमसी छवि सांवरे की,
ताहि और वात नीकी कैसे करि लागि है।
चषनि चषक पूरि पियो जिन रूप रस,
कैसे सो गरल सनी सीखनि सों पागि है।
आनन्द को घन स्याम सुन्दर सजल अंग
छांड़ि धूम धूंधरि सों कैसे कोउ रागि है।
ये तो नैन वाही को बदन हेरैं सीरे होत,
और बात आली सब लागति ज्यों आगि है।

जिसके हृदय में श्री कृष्ण की आनन्द मयी छवि बसी हुई हो उसे किसी और की बात कैसे अच्छी लग सकती है, जिसने उनके रूप रस को आंखों रूपी प्याले से पी लिया हो वह उनसे प्रेम न करने की, उनकी ओर न निहारने की विष जैसी बात को कैसे स्वीकार कर सकती है। उनके अंग तो उन बादलों के समान है जिन्हें देखने पर नेत्रों पर ठंढक मिलती है, उसे छोड़ धुएं की ओर कौन देखना चाहेगा?

और तभी तो ऐसे व्यक्तित्व के चले जाने पर केवल गोपियां ही विरह से व्यथित नहीं हो गई वरन सारी प्रकृति भी उदास होकर कुम्हला गई। जब वे मथुरा चले गए तो जैसे सम्पूर्ण वातावरण से प्राण ही चला गया। जिस प्रकार भारतीय साहित्य भगवान श्री कृष्ण के संयोग पक्ष से भरपूर है उसी प्रकार उसमें वियोग पक्ष का भी मुखर वर्णन हुआ है और वियोग में ही तो प्रेम की सार्थकता स्पष्ट होती है। जितना आह्लादकारी उनसे सम्बन्धित रास का पक्ष है उतना ही मर्मान्तक विरह का वर्णन है और जिस प्रकार संयोग में भगवान श्री कृष्ण के विविध पक्ष सामने आते हैं उसी प्रकार उनके वियोग के वर्णन से भी यही स्पष्ट होता है कि कैसे ब्रज का कण- कण कृष्णमय हो गया था। कैसे उनके चले जाने से शिथिलता और नीरवता आ गयी थी।

पात बिन कीन्हें ऐसी भांति गन बेलिन के
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंज हैं।
कहै पदमाकर बिसासी या बसन्त के सु
ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं।
ऊधो यह सूधो संदेसो कहि दीजै भलो
हरि सों हमारे ह्यां न फूले बन कुंज हैं।
किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन की
डारन पै डोलत अंगारन के पुंज हैं।।

कवि पद्माकर ने कृष्ण के चले जाने के बाद का दशा का वर्णन अत्यन्त मार्मिक रूप से किया है जब गोपियां उद्धव से कहती है कि कृष्ण के चले जाने के पश्चात ब्रज के प्रकृति में कोई जीवन नहीं रह गया है। पेड़ों की शाखाएं उन पर फैली बेलें बिना पत्तों के अपाहिज होकर डोलती रहती है, वसन्त ने जिस प्रकार पेड़ पौधों को पत्रहीन कर दिया है उसी प्रकार हमारे शरीर में भी विरह अग्नि को दहका दिया है। उनके जाने के बाद वन और कुंजों ने खिलना बंद कर दिया है और जहां कहीं यदि टेसु, गुलाब, कचनार और अनारों के वृक्ष पर लाल पुष्प दिखाई भी पड़ जाते हैं तो वे लाल अंगारों जैसे ही लगते हैं।

वस्तुतः भारतीय साहित्य का एक- एक पृष्ठ इसी प्रकार कृष्णमयता से रचा-पचा है। इतना अधिक वर्णन तो किसी अन्य देव अवतरण के लिए हुआ ही नहीं और यही उनकी विराटता का प्रमाण है। प्रकृति के नर-नारी सभी इस प्रकार से मुखरित होते हुए मानो कह रहे हैं।

मैं तो भई कृष्ण मयी . . . .

चैतन्य विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
क्लीं यंत्र	१०	१५०/-
कामकला माला	१०	१५०/-
राधा-कृष्ण का संयुक्त चित्र	१०	२०/-
भोजपत्र का टुकड़ा	१०	२५/-
आकर्षण यंत्र	११	२४०/-
मोहिनी माला	११	१५०/-
हृषिकेश यंत्र	११	२४०/-
विश्व मोहिनी माल्य	११	२४०/-
इच्छा पूर्ति गोविन्द यंत्र	१२	२४०/-
दो गोविन्द कुण्डल	१२	५१/-
आठ शक्ति विग्रह	१२	८८/-
भगवान श्री कृष्ण का चित्र	१२	२०/-
श्री कृष्ण सुदर्शन यंत्र	१२	२४०/-
कृष्ण पाश	१२	५१/-
कृष्ण अंकुश	१२	५१/-
आठ लघु नारियल	१२	१६८/-
विजय गणपति विग्रह	१७	३००/-
विजय गणपति माला	१७	१५०/-
कार्त्तवीर्यार्जुन यंत्र	२६	३३०/-
कार्त्तवीर्यार्जुन माला	२७	१५०/-
माणिक्य शिवलिंग	३३	३००/-
नीलम शिवलिंग	३३	३००/-
पन्ना शिवलिंग	३३	३००/-
गायत्री यंत्र चित्र	५२	२४०/-
गायत्री माला	५२	१२०/-
सर्वकामना सिद्धि अनंत यंत्र	६३	२४०/-
स्फटिक माला	६३	३००/-
रुद्राक्ष माल	६६	३००/-
भुवनेश्वरी यंत्र	७३	२४०/-
रियार सिंगी	७३	१५०/-
पारद गुटिका	७३	१०१/-
भुवनेश्वरी माला	७३	२१०/-
नर्मदेश्वर शिवलिंग	७७	१५०/-
पारद शिवलिंग	७७	३००/-
एक लघु नारियल	७७	२१/-
एक सौ आठ कमल बीज	७७	१५०/-

दीक्षा

दीक्षा	न्यौछावर
षोडश कला दीक्षा	५१००/-
गणेश सिद्धि दीक्षा	३१००/-
जीवन मार्ग दीक्षा	६००/-
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा	२१००/-
पापमोचनी दीक्षा	१५००/-
सहस्रार जागरण दीक्षा	६०००/-
अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा	५१००/-
कुबेर सिद्धि दीक्षा	३५००/-
शक्तिपात युक्त अप्सरा दीक्षा	२१००/-
अनंग दीक्षा	५१००/-
सम्मोहन दीक्षा	३०००/-
नेत्र चुम्बकत्व दीक्षा	२१००/-
राजयोग दीक्षा	६०००/-
क्रियायोग दीक्षा	६०००/-
सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा	३५००/-
भविष्य सिद्धि दीक्षा	५१००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें, ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **"मंत्र शक्ति केन्द्र"** के नाम से बना हो, जो जोधपर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता।

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

आन्तरिक पक्ष को यदि हम प्रत्यन पूर्वक देखें, यदि हम अन्दर उतरने का प्रयास करें तो हमें अहसास होगा कि वास्तव में वाह्य जगत की अपेक्षा आन्तरिक जगत की यात्रा जीवन की श्रेष्ठतम यात्रा है। इस आन्तरिक यात्रा में कोई तनाव नहीं है, कोई दुख नहीं है, कोई परेशानी, कष्ट, पीड़ा नहीं है, किसी प्रकार का भय नहीं है, जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता का अहसास नहीं है क्योंकि वहां तो जो कुछ है वह आनन्दमय है, परम सुख है, जीवन की पूर्णता का अहसास है और उस इष्ट से ब्रह्म से साक्षात्कार करने की प्रक्रिया है। **इस यात्रा को ही कुण्डलिनी यात्रा कहा गया है . . . .**

(इसी पुस्तक से. . .)

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
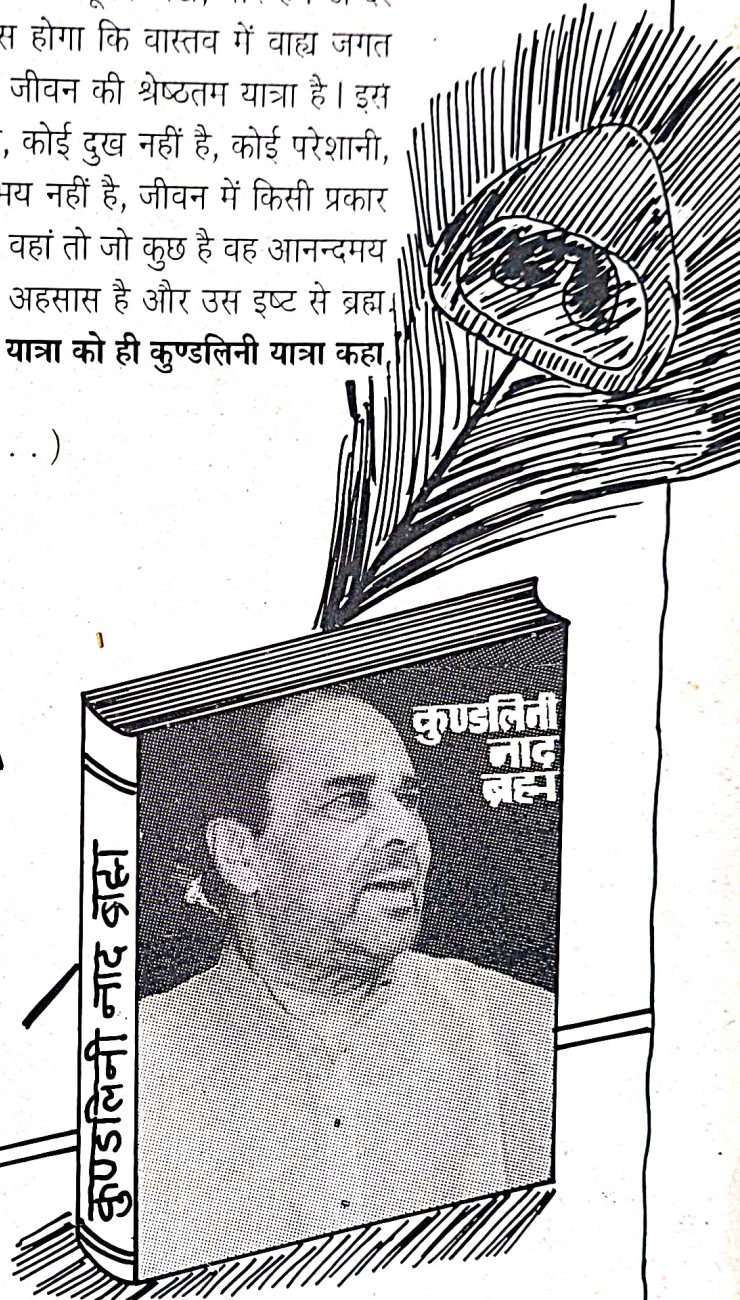
मूल्य - ६०/-

जीवन की चेतना, अथ से इति तक की यात्रा, मूलाधार से सहस्रार तक के पड़ाव के वर्णन की एक प्रामाणिक पुस्तक . . . . . जिसकी वर्षों से प्रतीक्षा थी! कुण्डलिनी जागरण के एक- एक क्रम पर आने वाली स्थितियों, रोमांचक विवरणों और नाद की यात्रा तक साक्षीभूत बनाता पूज्यपाद गुरुदेव का अनमोल ग्रन्थ . . क्योंकि नाद का मौन गुंजरण ही ब्रह्म का वास्तविक परिचय जो है। प्रत्येक साधक व कुण्डलिनी जागरण के जिज्ञासु के लिए संग्रहणीय व चिन्तन करने योग्य ग्रन्थ।

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) ३४२००१, फोन : ०२९१-३२२०९

षोडश कलाएं : षोडश दीक्षाएं

आगामी दीक्षा कार्यक्रम

दिनांक ५ से १० सितम्बर ९४

- षोडश कला दीक्षा
- गणेश सिद्धि दीक्षा
- जीवन मार्ग दीक्षा
- गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
- पापमोचनी दीक्षा
- सहस्रार जागरण दीक्षा
- अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा
- कुबेर सिद्धि दीक्षा
- शक्तिपात युक्त अप्सरा दीक्षा
- अनंग दीक्षा
- सम्मोहन दीक्षा
- नेत्र चुम्बकत्व दीक्षा
- राजयोग दीक्षा
- क्रियायोग दीक्षा
- सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा
- भविष्य सिद्धि दीक्षा

साधक अपनी सुविधानुसार उपरोक्त दीक्षाओं में से मनोवांछित दीक्षा ५ से १० सितम्बर के मध्य प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।